C106

मुक्त बेसिक शिक्षा

स्तर - ग (कक्षा - 8 के समतुल्य)

कटाई, सिलाई एवं वस्त्र निर्माण

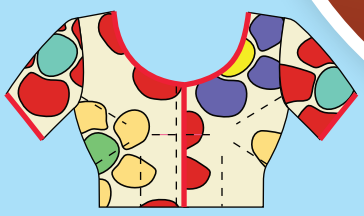

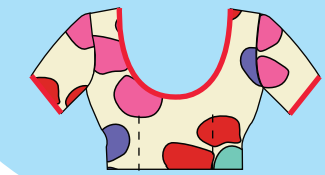

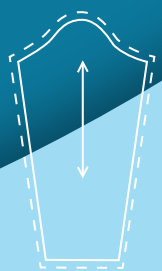

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

मुक्त बेसिक शिक्षा

कटाई, सिलाई एवं वस्त्र निर्माण (C-106)

स्तर - ग (कक्षा - 8 के समतुल्य)

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीनस्थ एक स्वायत्त संस्था)

ए–24–25, शैक्षणिक क्षेत्र, सेक्टर–62, नोएडा–201309 (उ.प्र.)

वेबसाइट : www.nios.ac.in, टोल फ्री नं. 1800 1809393

सलाहकार समिति

प्रो. चन्द्र भूषण शर्मा
अध्यक्ष
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

डॉ. राजीव कुमार सिंह
निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

पाठ्यसामग्री निर्माण समिति

डॉ. प्रेमलता मलिक
निदेशक
सुशीला देवी पोलीटेक्निक
ग़ाज़ियाबाद, उ.प्र.

सुश्री मनीषा चौधरी
सहा. प्राध्यापक (गृह विज्ञान)
मेरठ महाविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.)

डॉ. कल्पना शुक्ला
पूर्व कार्यकारी अधिकारी
रा.मु.वि.वि. संस्थान, नोएडा

सुश्री प्रज्ञा प्रभाती
लेक्चरर
शासकीय इंटर कॉलेज
बुलंदशहर, उ.प्र.

सम्पादक मंडल एवं पाठ्यक्रम समन्वयक

डॉ. संध्या कुमार
उप. निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

श्री विवेक सिंह
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी (ओ.बी.ई.)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

रेखा चित्रांकन

सुश्री दीप्ती साहनी
स्वतंत्र रेखा चित्रकार
नई दिल्ली

लेज़र कम्पोज़र

टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर्स
नई दिल्ली

आपसे दो बातें

प्रिय शिक्षार्थी,

किसी भी वर्ग, समाज तथा राष्ट्र की उन्नति की परिकल्पना शिक्षा के बिना नहीं की जा सकती। मुक्त बेसिक शिक्षा कार्यक्रम का उद्देश्य भी समाज के हर तबके तक शिक्षा को पहुंचाकर राष्ट्र को उन्नत बनाना है। मुक्त बेसिक शिक्षा कार्यक्रम प्राथमिक स्तर पर स्तर क, ख व ग पर 6 से 14 तथा 14 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के शिक्षार्थियों को शिक्षा का अवसर उपलब्ध करा रहा है।

वर्तमान परिवेश में शिक्षा के साथ ही व्यावसायिक शिक्षा का समान महत्व है। किसी व्यवसाय में कुशल होने पर न केवल रोज़गार के अवसरों में वृद्धि हो जाती है वरन स्वरोज़गार के रूप में भी अपार संभावनाओं के द्वार खुल जाते हैं। इसी कारण मुक्त बेसिक शिक्षा कार्यक्रम में एक व्यावसायिक विषय को अनिवार्य किया गया है।

इस कड़ी में स्तर–ग पर कटाई, सिलाई एवं वस्त्र निर्माण का निर्माण किया गया है। वस्त्र मानव की आधारभूत आवश्यकताओं में से एक है। आज यह आवश्यकता के साथ ही फैशन का भी एक पर्याय बन गया है, जो इस क्षेत्र में असीम संभावनाएं लाता है। इस क्षेत्र में आवश्यक कौशल अर्जित कर आप एक अच्छे कारीगर, अच्छे डिज़ाइनर बनकर रोज़गार या स्वरोज़गार प्रारंभ कर सकते हैं।

कटाई, सिलाई एवं वस्त्र निर्माण की स्तर–ग की इस पुस्तक में वस्त्र निर्माण में रंग योजनाओं व कपड़ों की उचित फिटिंग के बारे में बताया गया है। कुछ चुने हुए वस्त्रों जैसे– रॉम्पर, चुन्नट वाली फ्रॉक, चूड़ीदार पाजामी और नेहरू कुर्ता की निर्माण विधियों के बारे में आपको बताया गया है। इसके अतिरिक्त फिटिंग के दोष निवारण, निर्मित वस्त्रों का रखरखाव तथा आगे रोज़गार व स्वरोज़गार के रूप में उपलब्ध अवसरों के बारे में भी बताया गया है।

आपके स्व–अध्ययन में सहायता हेतु पाठगत प्रश्न तथा क्रियाकलाप भी दिए गए हैं। वार्षिक परीक्षा में आपको सहायता मिले, इसके लिए प्रत्येक पाठ के अन्त में पाठान्त प्रश्न भी दिए गए हैं।

मैं उन सभी विद्वानों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस सामग्री को रुचिकर और उपयोगी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुझे विश्वास है कि आप इसे पसंद करेंगे। मैं आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। पाठ्य सामग्री में सुधार हेतु आपके विचारों का सदैव स्वागत है।

अध्यक्ष

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

विषय सूची

क्रम सं.	पाठ का नाम	पृष्ठ सं.
1.	वस्त्र निर्माण में रंग योजनाओं की भूमिका	1
2.	शारीरिक आकार व फिटिंग	11
3.	वस्त्र निर्माण – रॉम्पर	19
4.	वस्त्र निर्माण – चुन्नट वाली फ्रॉक	29
5.	वस्त्र निर्माण – चूड़ीदार पाजामी	41
6.	वस्त्र निर्माण – नेहरू कुर्ता	51
7.	वस्त्र निर्माण – ब्लाउज	65
8.	फिटिंग के दोषों का निवारण	77
9.	रखरखाव व परिसज्जा	85
10.	उन्नति के अवसर	97
	प्रश्न पत्र प्रारूप एवं नमूना प्रश्न पत्र	

टिप्पणी

1

वस्त्र निर्माण में रंग योजनाओं की भूमिका

रंगों का समायोजन कटाई व सिलाई का एक महत्वपूर्ण व अभिन्न अंग है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि प्रत्येक रंग का अपना एक विशिष्ट गुण व प्रकृति होती है। इसलिए हम कह सकते हैं कि रंग हमारी मनोदशा बदल सकते हैं– तनाव बढ़ा या घटा सकते हैं, किसी को उत्साहित या शान्त कर सकते हैं, ऊँचाई या चौड़ाई का भ्रम उत्पन्न कर सकते हैं और गर्मी या शीतलता का अहसास दिला सकते हैं। रंगों का संबंध लिंग, आयु, व्यवसाय, मौसम और अवसर से भी होता है। रंगों का चयन इन सब बिन्दुओं को ध्यान में रख कर किया जाता है।

वस्त्र निर्माण में उचित रंगों के समायोजन द्वारा मन चाहा प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप :

- विभिन्न रंग योजनाओं की पहचान कर सकेंगे;
- विभिन्न रंग योजनाओं को परिभाषित कर सकेंगे और
- वस्त्रों में मनचाहा प्रभाव उत्पन्न करने के लिए इन का समायोजन कर सकेंगे।

1.1 रंग योजना

अगर आप अपने आस–पास देखेंगे तो पायेंगे कि हर वस्तु में एक से ज़्यादा रंग प्रयोग किए गए हैं। उनमें कुछ सुन्दर दिखते हैं और कुछ कम आकर्षित करते हैं। जानते हैं क्यों? जो वस्तु ज़्यादा सुन्दर हैं, उसमें रंगों का प्रयोग एक निश्चित रंग योजना के अंतर्गत किया गया है।

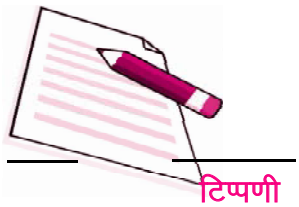

किसी भी डिज़ाइन को सुन्दर व आकर्षक बनाने के लिए कुछ रंगों को एक साथ प्रयोग किया जाता है। जिसे हम रंग योजना कहते हैं। एक साथ उपयोग किए जाने पर सौदंर्य की भावना पैदा करने वाले रंग आमतौर पर रंग योजनाओं में एक–दूसरे के साथ होते हैं।

रंग चक्र में चारों ओर रंगों का अमर्त चित्रण संगठित होता है। जैसे कि प्राथमिक, द्वितीयक व तृतीयक रंग आदि। यह चक्र इन रंगों के बीच का संबंध दर्शाता है। इस चक्र में 12 रंग होते हैं। रंगों के संयोजन में रंग चक्र एक मौलिक आधार है।

रंग योजना में दो वर्ग होते हैं :

I. समान या संबंधित रंग योजना

II. विरोधाभासी रंग योजना

समान रंग योजना

इस रंग योजना में रंग चक्र में एक दूसरे के समीप वाले रंगों का प्रयोग किया जाता है।

i) **एकरंगी (Monochromatic) रंग योजना** – इसमें एक ही रंग के टिन्ट्स (हल्का) व शेड्स (गहरा) का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक हल्के लाल कुर्ते पर आप गुलाबी, लाल, गहरे लाल तथा मैरून रंग का प्रयोग कर सकते हैं। इस प्रकार की योजना बनाने में सरल होती है और हमेशा सफल होती है।

ये योजना एक आरामदेह व शांत प्रभाव पैदा करती है। ये गर्मियों के वस्त्रों के लिए ज्यादा उपयुक्त है।

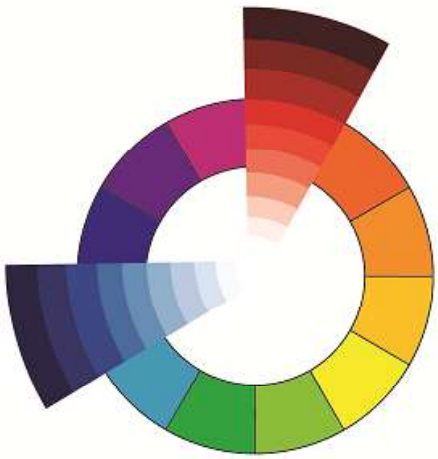

चित्र 1.1: मोनोक्रोमेटिक रंग योजना

ii) **समीपवर्ती (Analogus) रंग योजना** – इस रंग योजना में रंग चक्र में स्थित पास–पास के रंगों का प्रयोग किया जाता है। इसमें एक रंग समान होता

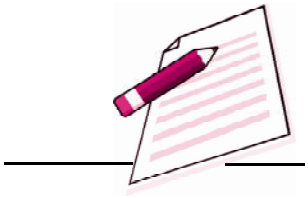

टिप्पणी

है। उदाहरण के लिए पीला, पीला–हरा तथा हरे रंग का प्रयोग करने से सुंदर प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है।

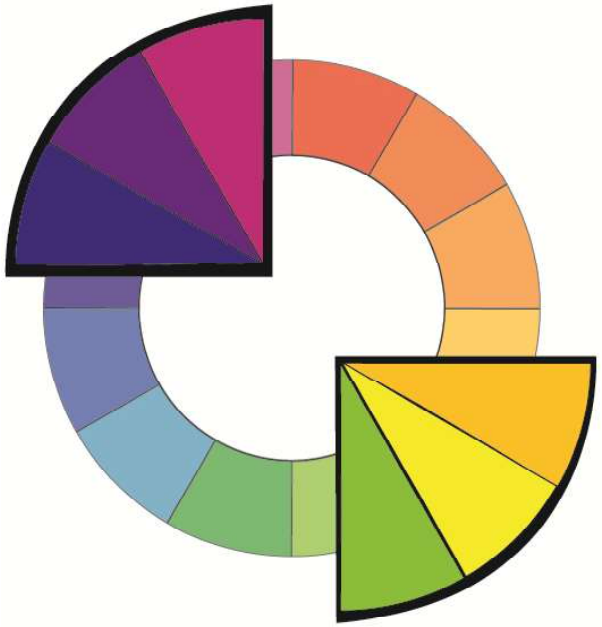

चित्र 1.2: समीपवर्ती रंग योजना

पाठगत प्रश्न 1.1

नीचे दीए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए–

1. ..... रंग योजना में रंग चक्र में एक दूसरे के समीप वाले रंगों का प्रयोग किया जाता है। (समान/विपरीत)

2. आसमानी, नीला तथा गहरे नीले रंग के प्रयोग से ..... रंग योजना का निर्माण किया जा सकता है। (समीपवर्ती/एक रंगी)

3. रंगों के संयोजन में ..... एक मौलिक आधार है। (रंग चक्र/योजना)

4. पीला, पीला–हरा तथा हरे रंग के संयोजन से बनी रंग योजना ..... रंग योजना कहलाती है।(समीपवर्ती/एकरंगी)

टिप्पणी

II विरोधाभासी रंग योजना

इस रंग योजना में उन रंगों का प्रयोग किया जाता है, जो रंग चक्र में परस्पर एक दूसरे के विरुद्ध रखे जाते हैं।

i) **पूरक रंग योजना (Complementary) –** यह दो रंगों की योजना होती है। इसमें एक रंग और उसके पूरक रंग का एक साथ प्रयोग किया जाता है। जैसे लाल व हरा, पीला व बैंगनी। ये भड़कीली रंग योजना है, जो ज़्यादा ध्यान आकर्षित करती है। ये बच्चों के वस्त्रों के लिए ज्यादा उपयुक्त होती है।

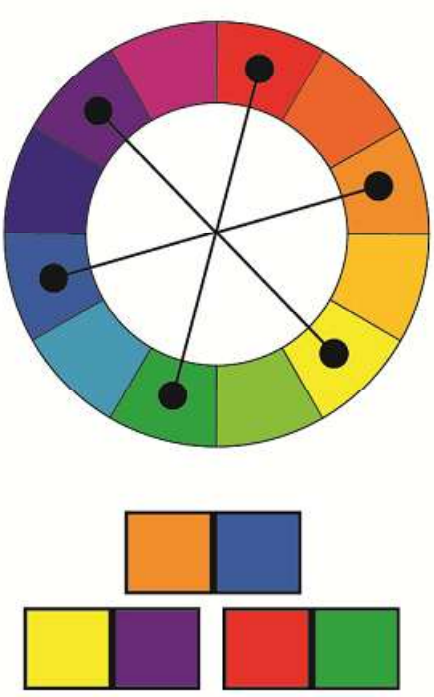

चित्र 1.3: पूरक रंग योजना

ii) **विभक्त पूरक, (Split complementary) रंग योजना –** ये तीन रंग वाली योजना है। इस रंग योजना में रंग चक्र का एक रंग और उसके पूरक रंग को विभाजित करने के उपरान्त प्राप्त दो रंगों का प्रयोग किया जाता है। जैसे पीला, लाल + बैंगनी और नीला+बैंगनी। बैंगनी रंग पीले रंग का पूरक रंग होता है।

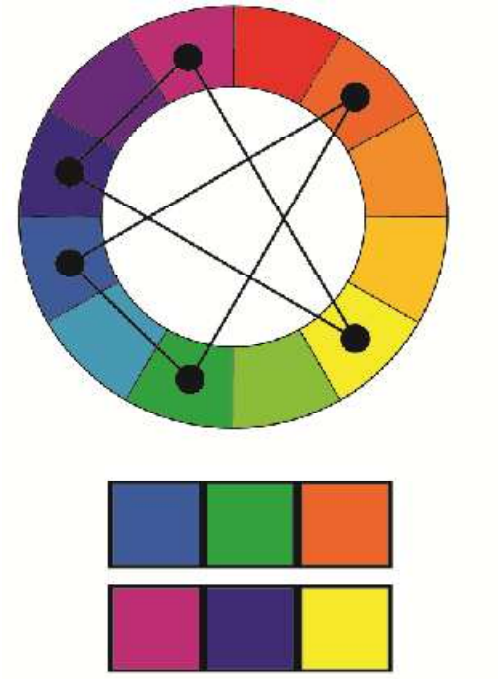

चित्र 1.4: विभक्त पूरक रंग योजना

इन रंगों का समायोजन एक रोचक प्रभाव उत्पन्न करता है।

iii) **त्रिकोणीय (Triad) रंग योजना–** यह तीन रंगों का संयोजन होता है। यह रंग चक्र में समभुज त्रिकोण की रचना करता है। उदाहरण – लाल, नीला, पीला, तथा बैगनी, नारंगी व हरा।

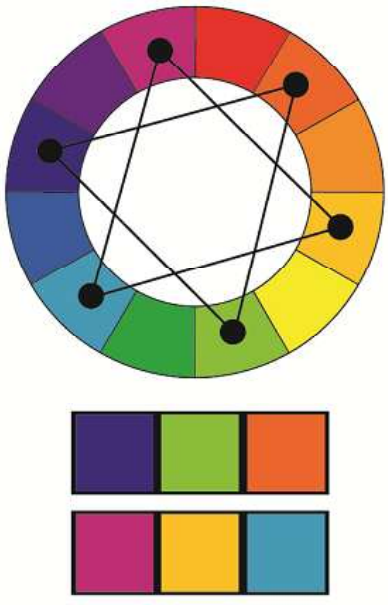

चित्र 1.5: त्रिकोणीय रंग योजना

टिप्पणी

टिप्पणी

इन रंगों का समायोजन एक जोशीला प्रभाव उत्पन्न करता है। अतः इस रंग योजना का प्रयोग उत्सव व विवाह के लिए उपयुक्त है।

iv) **चतुभुर्ज (Tetrad) रंग योजना –** यह चार रंगों वाली योजना है। इस रंग योजना में किन्हीं चार ऐसे रंगों का संयोजन होता है जो रंग चक्र में एक वर्ग की रचना करते हैं। जैसे – हरा, पीला+नारंगी, लाल, नीला+बैंगनी रंग एक चतुर्भुज रंग योजना बनाते हैं।

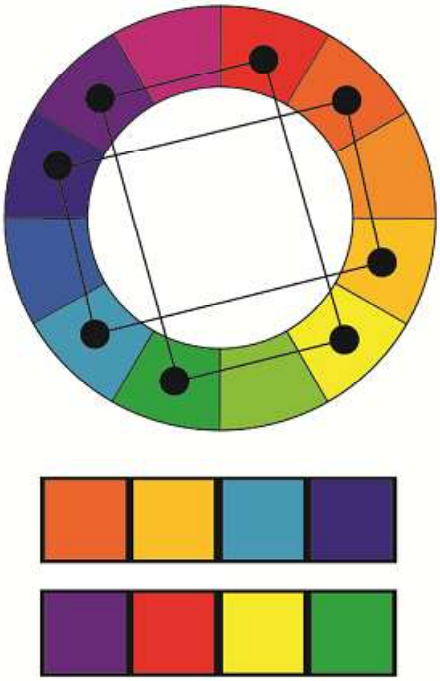

चित्र 1.6: चतुभुर्ज रंग योजना

यह एक आक्रामक रंग योजना है। अतः सावधानीपूर्वक इसका संयोजन करना चाहिए जिससे सुंदर प्रभाव उत्पन्न किया जा सके।

पाठगत प्रश्न 1.2

स्तम्भ 'क' को स्तम्भ 'ख' से मिलाइए।

(क)	(ख)
1. पूरक रंग योजना	i) पीला, लाल+बैंगनी व नीला+बैंगनी

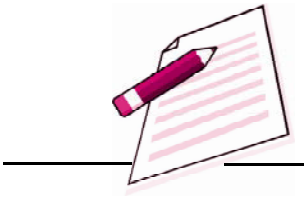

टिप्पणी

2. त्रिकोणीय रंग योजना — ii) रंग चक्र में वर्ग की रचना
3. विभक्त पूरक रंग योजना — iii) जोशीला प्रभाव
4. चतुर्भुज रंग योजना — iv) लाल व हरे रंग का प्रयोग

1.2 रंग योजनाओं के चयन को प्रभावित करने वाले कारक

इन सभी रंग योजनाओं में रंगों का प्रयोग करते समय हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

i) व्यक्ति की आयु

ii) मौसम

iii) व्यक्ति का लिंग

iv) व्यवसाय

v) अवसर

vi) परिधान का प्रकार

vii) व्यक्ति की शारीरिक बनावट।

जब भी आपको किसी व्यक्ति के कपड़ों के लिए रंगों का चुनाव करना हो तो उसकी आयु और लिंग पर ध्यान देना आवश्यक है।

बच्चे और युवा चटकीले रंगों वाले वस्त्रों में अच्छे लगते हैं। वृद्ध लोग शांत और सौम्य होते हैं अतः उनके लिए आप हल्के रंगों का प्रयोग करते हैं। पुरुषों और स्त्रियों का उनके कार्य क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए निष्प्रभावी रंग जैसे स्लेटी, नीला, भूरे आदि का प्रयोग करते हैं। इससे वो अपने आप में भरोसेमंद तथा बलिष्ठता का प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं। व्यस्क व्यक्ति भी अन्य रंगों का बलिष्ठता अनुभव कर सकते हैं।

अवसर भी रंगों के चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। रंगों के चुनाव से पहले यह सुनिश्चित करें कि अवसर कौन सा है, अर्थात् यदि शादी या विवाह का अवसर हो तो यह ध्यान रखें कि समारोह सुबह या शाम/रात का है। दिन में हल्के तथा शाम/रात को गहरे व चमकदार रंगों के वस्त्रों का प्रयोग किया जा सकता है।

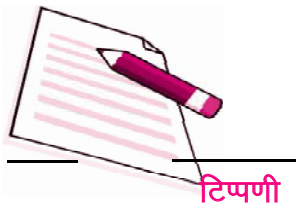

रंगों का चुनाव मौसम पर भी निर्भर करता है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि गर्मियों के मौसम में ठंडे, ताज़गी का अहसास करने वाले रंग व हल्के रंगों का प्रयोग करना चाहिए। तथा सर्दियों में चमकीले, गहरे और गरम रंगों का प्रयोग किया जा सकता है।

देशी पहनावों जैसे साड़ी, सूट व लंहगे के लिए रंगों का चुनाव पश्चिमी पहनावों से भिन्न होता है। देशी पहनावों के लिए भड़कीले व चमकीले रंगों का प्रयोग भी किया जा सकता है, परन्तु पश्चिमी पहनावों जैसे पैन्ट–कोट के लिए हमेशा निष्प्रभावी (न्यूट्रल रंग) रंगों का प्रयोग किया जाता है, इनमें अन्य रंगों से विरोधाभास रंग डालकर वस्त्रों को आकर्षक बनाया जा सकता है।

वस्त्रों के लिए रंगों का चुनाव करते समय शरीर की बनावट को भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है। इसके लिए व्यक्ति के कद और वजन का ध्यान रखते हुए रंगों का चयन करना चाहिए। शरीर की बनावट वस्त्र को सुंदर बना सकती है या खराब कर सकती है। विशेष शारीरिक बनावट जैसे लम्बी टांगे, पतली कमर या चौड़े कूल्हों का भी अवश्य ध्यान रखें। रंगों के विषय तथा प्रभाव के बारे में अच्छी जानकारी व समझ से शारीरिक बनावट के अच्छे पहलुओं को उभार सकते हैं और दोषों को छुपा सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 1.3

निम्नलिखित कथनों के सामने सही (✓)या गलत (×) लिखिए–

1. बच्चे और युवा चटकीले रंगों के वस्त्रों में अच्छे लगते हैं। ( )
2. ऑफिस में कार्य करने वाले व्यक्तियों को गहरे व चमकीले रंगों के वस्त्रों का चुनाव करना चाहिए। ( )
3. दिन में हल्के तथा रात को गहरे रंगों के वस्त्रों का चुनाव करना चाहिए। ( )
4. पश्चिमी पहनावों के लिए रंग–बिरंगे वस्त्रों का चुनाव करना चाहिए। ( )

अतः हम कह सकते हैं कि रंगों के सही व संतुलित संयोजन से एक आकर्षक और सामंजस्यपूर्ण प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है।

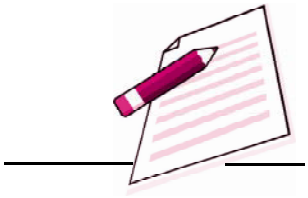

टिप्पणी

क्रियाकलाप 1.1

भिन्न–भिन्न वस्त्रों के चार चित्र इकट्ठा करें तथा चित्रों का आंकलन कर बताए कि उन में कौन–सी रंग योजनाएं प्रयोग की गयी है।

आपने क्या सीखा

- रंग योजना
  - समान रंग योजना
  - विरोधाभासी रंग योजना

समान रंग योजना

- मोनोक्रोमेटिक रंग योजना
- समीपवर्ती रंग योजना

विरोधाभासी रंग योजना

- पूरक रंग योजना
- विभक्त पूरक रंग योजना
- त्रिकोणीय रंग योजना
- चतुर्भुज रंग योजना
- रंग योजनाओं के चयन को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारक
  - व्यक्ति की आयु
  - मौसम
  - व्यक्ति का लिंग
  - व्यवसाय
  - अवसर
  - परिधान का प्रकार
  - व्यक्ति की शारीरिक बनावट।

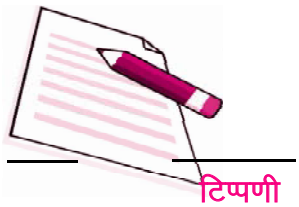

पाठांत प्रश्न

1. समान रंग योजनाओं के बारे में लिखिए।
2. रंग योजनाओं के चयन को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
3. पूरक तथा विभक्त पूरक रंग योजनाओं के बीच अन्तर स्पष्ट कीजिए।
4. त्रिकोणीय तथा चतुर्भुज रंग योजनाओं पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1

1. समान
2. एकरंगी
3. रंग चक्र
4. समीपवर्ती

1.2

1. (iv)
2. (iii)
3. (i)
4. (ii)

1.3

1. सही
2. गलत
3. सही
4. गलत

2

शारीरिक आकार व फिटिंग

वस्त्रों की फिटिंग शरीर की संरचना, गोलाई व चौड़ाई पर निर्भर करती है। शरीर का आकार व आकृति उसके कंकाल की संरचना और शरीर पर मांसपेशियों और वसा की मात्रा और वितरण पर निर्भर होता है। महिलाएँ आमतौर पर छाती, कूल्हों की तुलना में संकीर्ण होती हैं। हम में से कुछ लोग ज्यादा गोल और कुछ के पास संकीर्ण कूल्हे या चौड़े कंधे होते हैं। ज़्यादातर शरीर के आकर को व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि शरीर के प्रकारों को वर्गीकृत करना कोई सटीक विज्ञान नहीं है। अक्सर एक प्रकार के भीतर बहुत भिन्नता होती है। इस पाठ में हम शरीर के कुछ सामान्य आकारों के बारे में पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप :

- शरीर के विभिन्न आकारों को नाप लेते समय पहचान सकेंगे;
- शरीर के विभिन्न आकार के कारण होने वाले फिटिंग दोषों की पहचान कर सकेंगे; और
- वस्त्र निर्माण के समय शारीरिक आकारों के अनुरूप उचित समायोजन कर सकेंगे।

2.1 शारीरिक आकार एवं प्रकार

शारीरिक आकार व प्रकार के अपने लक्षण होते हैं। कुछ सामान्य व प्रचलित वर्गीकरण हैं :

- सेब की आकृति
- नाशपाती की आकृति
- गोलाकार आकृति

टिप्पणी

- सीधा अथवा कोने की आकृति
- अण्डाकार आकृति
- त्रिकोणीय आकृति
- सीधी आकृति

2.2 शारीरिक आकारों का वर्णन

I. सेब की आकृति

इसमें शरीर के मध्य भाग में ज्यादा वजन होता है। जिस कारण बीच का भाग गोल और सेब जैसे प्रतीत होता है।

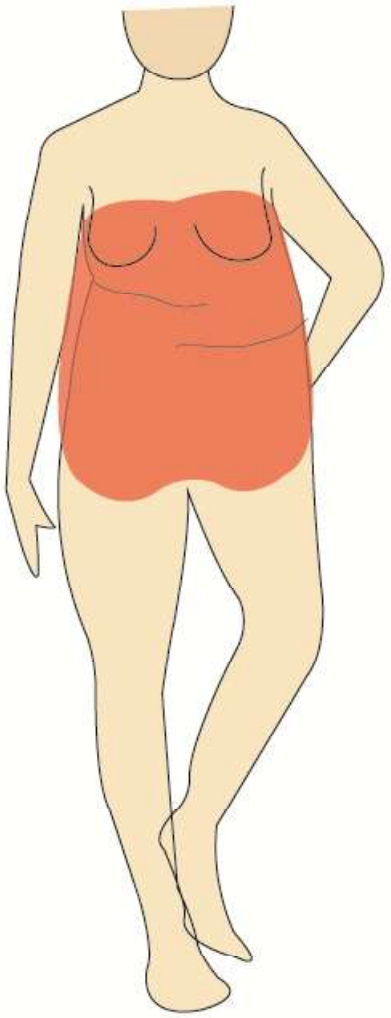

चित्र 2.1: सेब की आकृति

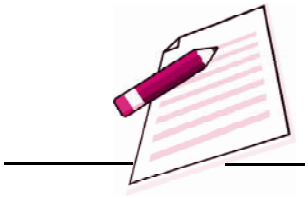

टिप्पणी

II. नाशपाती की आकृति

इसमें शरीर के पीछे का हिस्सा भारी होता है। इस आकृति में हिप (कुल्हा या नितम्ब) व जाँधों पर चर्बी अधिक होती है जिससे शरीर नाशपाती जैसा प्रतीत होता है।

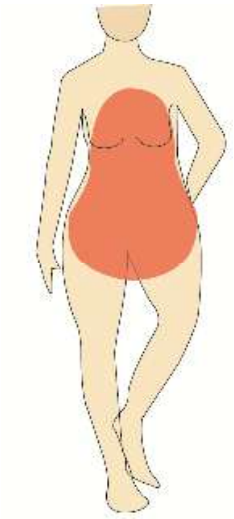

चित्र 2.2: नाशपाती की आकृति

III. गोलाकार आकृति

इस शरीर में छाती चौड़ी और कमर पतली होती है। इस आकार में नितम्ब सुगठित होते हैं।

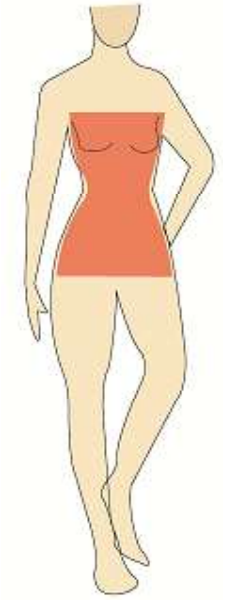

चित्र 2.3: गोलाकार की आकृति

टिप्पणी

IV. सीधा अथवा कोन की आकृति

इस प्रकार की श्रेणी में छाती, कमर व हिप के नाप में बहुत कम अन्तर होता है।

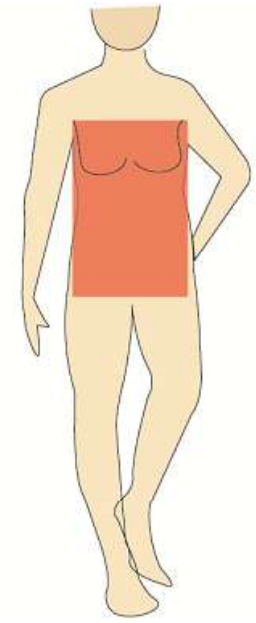

चित्र 2.4: सीधा अथवा कोन आकृति

V. अण्डाकार आकृति

इसमें कमर का नाप, चेस्ट (सीना) व कमर के नाप से अधिक होता है।

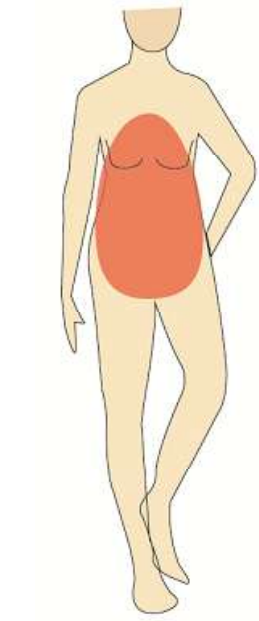

चित्र 2.5: अण्डाकार आकृति

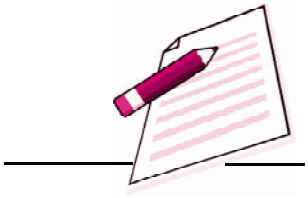

टिप्पणी

VI. त्रिकोणीय आकृति

इस शरीर में छाती का नाप ज़्यादा होता है, तथा हिप पतले होते हैं। उल्टी त्रिकोणीय आकृति में कमर का नाप कम और हिप ज़्यादा चौड़े होते हैं।

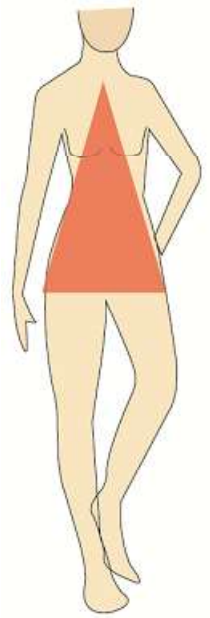

चित्र 2.6: त्रिकोणीय आकृति

VII. सीधी आकृति

इस आकार के शरीर में छाती व हिप का आकार लगभग एक ही होता है तथा कमर, छाती व हिप के अनुपात में ज़रा सी पतली होती है।

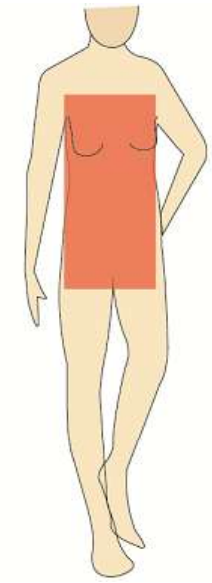

चित्र 2.7: सीधी आकृति

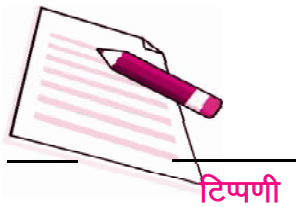

पाठगत प्रश्न 2.1

कॉलम 'क' और कॉलम 'ख' का मिलान कीजिए–

	'क'		'ख'
1.	गोलाकार आकृति	i)	हिप और जांघों पर अधिक चर्बी
2.	सेब की आकृति	ii)	चेस्ट, कमर, हिप एक समान
3.	नाशपाती आकृति	iii)	हिप पतले
4.	सीधा अथवा कोन आकर	iv)	सुगठित नितम्ब
5.	त्रिकोणीय आकृति	v)	गोल बीच का भाग

2.3 विभिन्न आकार की पहचान की आवश्यकता

वस्त्र तभी आकर्षक लगते हैं, जब उनकी फिटिंग सही होती है। सही फिटिंग सुनिश्चित करने के लिए सही नाप लेना आवश्यक है। सही फिटिंग के लिए हमें शरीर के आकार को भी ध्यान में रखना होगा।

सही नाप सिर्फ सही विधि से नाप लेने तक सीमित नहीं होता। नाप लेते समय हमें सही विधि के साथ–साथ शरीर के आकार का निरीक्षण करना भी ज़रूरी होता है। विभिन्न आकार की पहचान नाप लेते समय आसानी से की जा सकती है और आवश्यक फेर–बदल में सुविधा होती है। इससे सिलने के उपरान्त वस्त्रों में फिटिंग के लिए आल्टरेशन नहीं करना पड़ता।

बने बनाए वस्त्र, प्रमाणिक नाप पर आधारित होते हैं। इनका लक्ष्य होता है कि इन्हें ज़्यादा से ज़्यादा लोग पहन सकें। एक साइज़ का वस्त्र एक ही साइज़ के लोगों को सही फिटिंग से नहीं आता है। इसका कारण है शरीर की विभिन्न आकृतियाँ अक्सर ग्राहक को आल्टरेशन कराने की ज़रूरत पड़ती है।

परन्तु जब हम अपने निजी नाप के कपड़े सिलते हैं तो हम उन्हें पहले से ही शरीर के आकार के अनुसार तैयार कर सकते हैं। सिलते समय हम आकार के अनुरूप फिटिंग की व्यवस्था कर सकते हैं जिससे वस्त्र सिलने के उपरान्त किसी तरह की अल्टरेशन की आवश्यकता नहीं पड़ती।

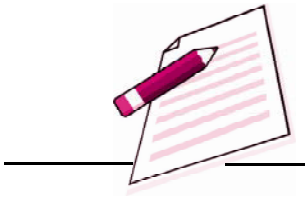

टिप्पणी

2.4 शारीरिक आकार से संबंधित फिटिंग दोष व उनका निवारण

– यदि परिधानों में शरीर के भारी हिस्से पर चुन्नट या खिंचाव दिखता है, तो वस्त्र के उस हिस्से को थोड़ा ढीला रखें।

– साइड सीम के अलाउन्स को थोड़ा छोटा या बड़ा करके छाती का ज़्यादा भारी या दुबला होने के दोष का निवारण किया जा सकता है।

– ढलके हुए कंधों के दोष का मुड़्ढ़े की सिलाई में थोड़ा परिवर्तन करके सही फिटिंग दी जा सकती है।

– ज़्यादा कसे हुए वस्त्र न बनाए अन्यथा शरीर के दोष और अधिक उभर कर नज़र आते हैं।

पाठगत प्रश्न 2.2

नीचे दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए :–

1. ..... फिटिंग वाले वस्त्र दिखने में ..... लगते हैं। (सही, आकर्षक, ढीले, फैशनेवल)
2. सही फिटिंग सुनिश्चित करने के लिए सही ..... लेना आवश्यक है। (नाप, डिज़ाइन)
3. नाप लेते समय शारीरिक ..... का निरीक्षण कर लेना चाहिए। (दिखावट, आकृति)
4. शरीर के आकार के अनुसार वस्त्रों के निर्माण से ..... से बचा जा सकता है। (नाप, आल्टरेशन)
5. ढलके कंधों के दोष में ..... की सिलाई में थोड़ा परिवर्तन करना पड़ता है। (गले, मुड़्ढे)

क्रियाकलाप 2.1

शरीर के छः अलग–अलग चित्र इकट्ठा करके तथा प्रत्येक चित्र का आकलन कर बताएं कि उन चित्रों में कौन–कौन से शारीरिक आकार दिखाई देते हैं।

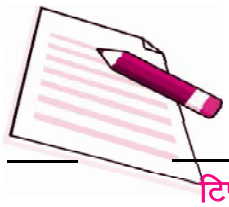

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

- शारीरिक आकार एवं प्रकार
- सामान्य व प्रचलित शरीर के आकारों का वर्गीकरण:
  - सेब की आकृति
  - नाशपाती की आकृति
  - गोलाकार आकृति
  - सीधा अथवा कोन आकृति
  - अण्डाकार आकृति
  - त्रिकोणीय आकृति
  - सीधी आकृति
- शारीरिक आकारों का विवरण व शरीर के विभिन्न आकार की पहचान की विधि
- शारीरिक आकार से संबंधित फिटिंग दोष व उनका निवारण

पाठान्त प्रश्न

1. शरीर के सामान्य व प्रचलित आकारों को सूचीबद्ध कीजिए।
2. सेब आकृति और नाशपाती आकृति में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
3. शरीर के आकार के दोषों को पहचानना क्यों ज़रूरी है? कोई दो कारण दीजिए।
4. शारीरिक आकार से संबंधित फिटिंग दोष के निवारण के तीन सुझाव दीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

1. (iv); 2. (v); 3. (i); 4. (ii); 5. (iii)

2.2

1. सही; 2. नाप; 3. आकृति; 4. अल्टरेशन; 5. मुड़्ढे

3

वस्त्र निर्माण – रॉम्पर

रॉम्पर बच्चों तथा बड़ों का एक आधुनिक, आरामदायक परिधान है। ये आमतौर पर दो टुकड़ों के संयोजन से बनता है। ये शॉर्ट्स तथा बॉडीज़ के संयोजन से बनाया जाता है। कंधे से जुड़ा होने के कारण बच्चों को खेलने में सुविधाजनक होता है इसलिए इसे प्लेसूट भी कहा जाता है। रॉम्पर के शॉर्ट्स वाले भाग को इच्छानुसार छोटा व लम्बा रखा जा सकता है जैसे कि घुटने, पिण्डली तथा टखने तक।

चित्र 3.1: रॉम्पर

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप :

- रॉम्पर में प्रयोग होने वाले औज़ारों व सामग्री की पहचान कर सूचीबद्ध कर सकेंगे;
- बेसिक बॉडीज़ तथा जांघिया का ब्लॉक तथा पेपर प्रतिरूप (पैटर्न) बना सकेंगे;
- कपड़े का अनुमान लगा कर ले–आउट बना सकेंगे; और
- रॉम्पर सिलने के लिए सिलाई कौशल जैसे इलास्टिक, वेल्क्रो, सीम्स आदि में निपुण हो सकेंगे।

3.1 औज़ार व सामग्री

रॉम्पर बनाने के लिए निम्न औज़ार व सामग्री का प्रयोग किया जाता है–

i) स्केल, रबर, पेन्सिल, कागज़

ii) इंचटेप

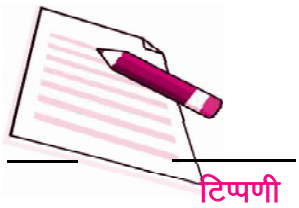

iii) कैंची

iv) टेलर्स चॉक

v) कार्बन पेपर

vi) ट्रेसिंग व्हील

vii) सुई

viii) रिप्पर और क्लीपर

ix) धागा

x) कपड़ा

3.2 बेसिक ब्लॉक और पेपर पैटर्न बनाना

I. बेसिक ब्लॉक

बेसिक ब्लॉक बनाने के लिए आवश्यक नाप इस प्रकार से लीजिए –

बॉडीज	–	लम्बाई	–	21 से.मी.
		चेस्ट	–	56 से.मी.
जांघिया	–	लम्बाई	–	28 से.मी.
		राउण्ड हिप	–	56 से.मी.

बॉडीज ब्लॉक की ड्राफ्टिंग

सामने का ब्लॉक

i) बेसिक बॉडीज ब्लॉक बनाने की विधि पाठ 4 में दी गई है। ऊपर दिए गए नाप का प्रयोग करते हुए बेसिक बॉडीज ब्लॉक बनायें।

ii) बॉडीज ब्लॉक को एक अलग कागज़ पर ट्रेस कर लें तथा बिंदुओं को ABCDEF..... द्वारा चिन्हित करें।

आवश्यक फेरबदल

i) बिंदु D से एक सीधी रेखा, रेखा AF तक बनाकर बिंदु G चिन्हित करें। ध्यान रखें, रेखा DE = GF

ii) रेखा GD पर 5 से.मी. बिंदु G की ओर बिंदु H अंकित करें।

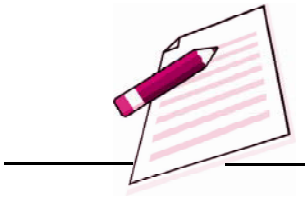

टिप्पणी

iii) बिंदु H तथा E को तिरछी रेखा से जोड़ें। GHEF को काट लें।

iv) GHEF रॉम्पर का योक है। क्योंकि बॉडीज की लम्बाई घटाई गई अतः उतनी लम्बाई की पट्टियां (स्ट्रेप) लगेगी।

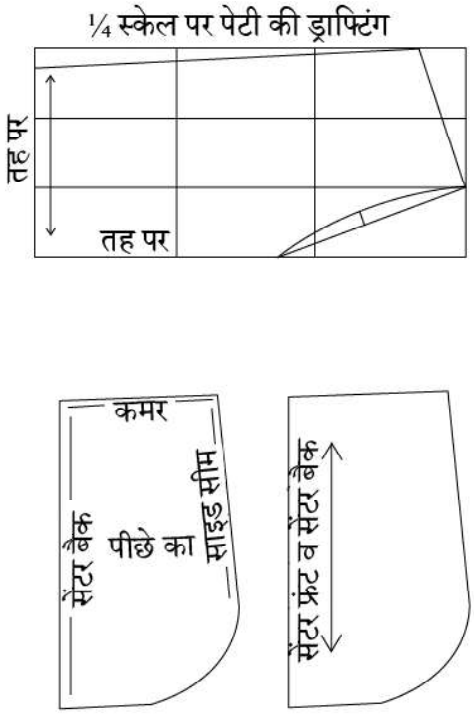

चित्र 3.2: बॉडीज की ड्राफ्टिंग (सामने)

पीछे का बॉडीज ब्लॉक

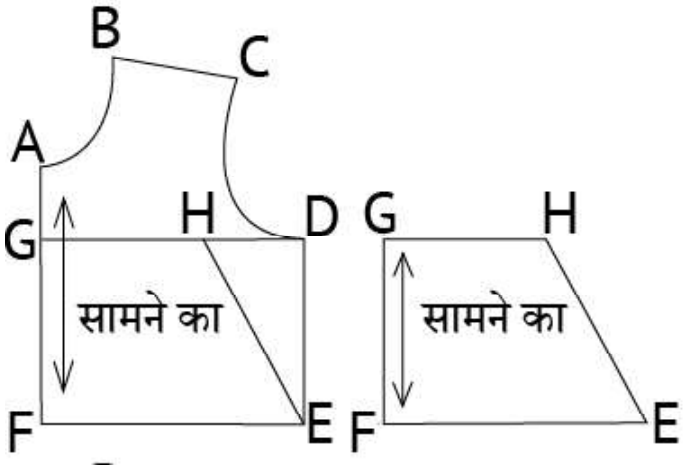

चित्र 3.3(क): बॉडीज की ड्राफ्टिंग (पीछे)

टिप्पणी

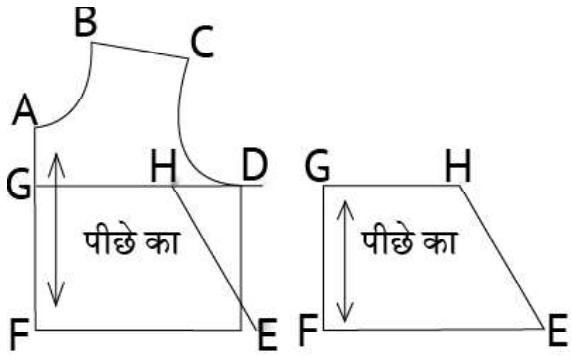

चित्र 3.3(ख): बॉडीज की ड्राफ्टिंग (पीछे)

पट्टी (स्ट्रेप) के लिए ड्राफ्टिंग

i) एक आयत ABCD बनायें

AB = CD = लम्बाई (22 – 25 से.मी.)

AC = BD = चौड़ाई (4–5 से.मी. इच्छानुसार)

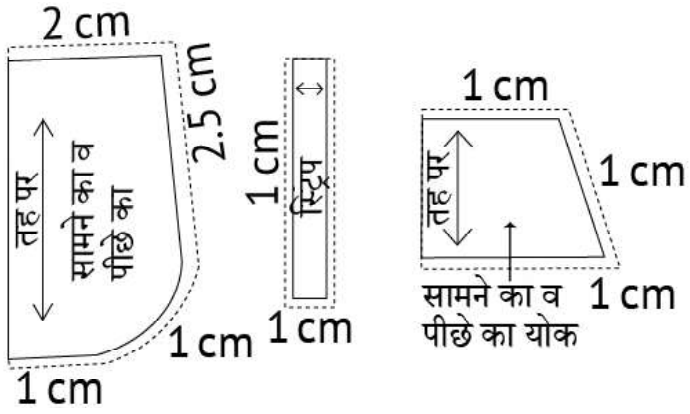

चित्र 3.4: पट्टी (स्ट्रेप) की ड्राफ्टिंग

जांघिया के लिए ड्राफ्टिंग

जांघिया का ब्लॉक

नाप : लम्बाई – 28 से.मी.

राउन्ड हिप – 56 से.मी.

विधि :

i) 28 से.मी. × 56 से.मी. नाप का कागज़ लें।

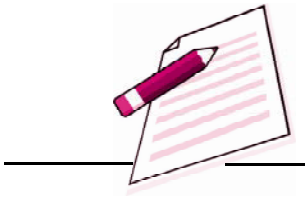

टिप्पणी

ii) कागज़ को नीचे की ओर मोड़ें।

iii) चौड़ाई को बीच में से दांयी ओर मोड़ें।

iv) इस आयताकार कागज़ के चारों कोनों को ABCD का नाम दें।

v) AB = CD = 28 से.मी. (राउण्ड हिप का ½)

vi) AC = BD = 14 से.मी. (लम्बाई का ½)

vii) AC व BD को तीन बराबर भागों में बांटें।

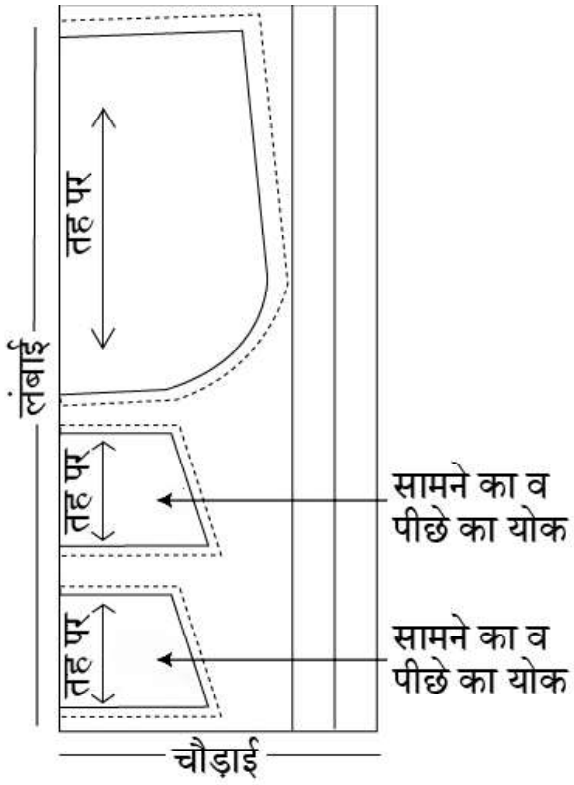

चित्र 3.5: जांघियां की ड्राफ्टिंग (¼ स्केल पर)

viii) AB व CD को भी तीन भागों में बाँटें।

ix) AC रेखा 1.5 से.मी. दूर पर बनायें (AE = 15 से.मी.)

x) AB रेखा पर बिन्दु F 2.5 से.मी. दूरी पर बनायें (AE = 15 से.मी.)

xi) EF को तिरछी रेखा से मिलायें। इससे आपको वेस्ट लाइन प्राप्त होगी।

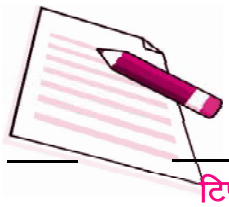

टिप्पणी

xii) बिन्दु D से खण्ड B की ओर बिन्दु G अंकित करें।

xiii) F तथा G को सीधी रेखा से जोड़ें।

xiv) CD पर बिन्दु H बनाएं 1CD = 1 खण्ड + 2.5 से.मी. C की ओर।

xv) G व H को तिरछी रेखा से जोड़ें।

xvi) G व H के मध्य से बिन्दु O अंकित करें।

xvii) O से 1 से.मी. ऊपर एक लम्ब डालें व इसे बिन्दु P का नाम दें।

xviii) GPH को गोलाई देते हुए मिलाएं।

आवश्यक फेरबदल

बेसिक जांघिया ब्लॉक में आप ने GPH को अन्दर की ओर गोलाई देते हुए जोड़ा था। परन्तु रॉम्पर के लिए GPH को बाहर की ओर गोलाई देकर जोड़ना होगा।

I. कागज़ का प्रतिरूप (पैटर्न) बनाना

कागज़ का प्रतिरूप बनाने के लिए नीचे दी गई प्रक्रिया के अनुसार सीम अलाउन्स लीजिए–

योक	–	तीन ओर 1 से.मी.
पट्टी (स्ट्रेप)	–	तीन ओर 1 से.मी.

जांघिया

वेस्ट लाइन	–	2 से.मी.
साइड सीम	–	2.5 से.मी.
लेग सिरा	–	1 से.मी.
क्रॉच का सिरा	–	1 से.मी.

सीम अलाउन्स – सिलाई लाइन और काटने वाली लाइन के बीच में कपड़ा।

टिप्पणी

3.3 कपड़े का अनुमान

रॉम्पर बनाने के लिए आवश्यक कपड़े का अनुमान पूर्व में ही लगा लेना चाहिए। इस रूप में लगा सकते हैं–

लम्बाई = जांघिया की लम्बाई + 2 योक की लम्बाई + सीम अलाउन्स

= 28 से.मी. + 2 × 10 से.मी. + 10 से.मी.

= 28 + 20 + 10 से.मी. = 58 से.मी.

चौड़ाई = 90 से.मी.

3.4 ले–आउट

i) कपड़े को चौड़ाई में दोहरा मोड़ लें।

ii) इस पर सबसे पहले जांघिये का ब्लॉक रखें।

iii) योक (सामने व पीछे के ब्लॉक) को इसके नीचे एक के बाद एक रखें।

iv) कार्बन कागज़ पैटर्न के नीचे रख कर ट्रेस कर लें।

v) बाकी बचे कपड़े को स्ट्रेप के लिए प्रयोग करें।

3.5 कटाई सिलाई तथा फिनिशिंग

रॉम्पर बनाने के लिए कपड़े के भाग को इस प्रकार काटें –

- दो पट्टियां स्ट्रेप के लिए
- चार भाग योक के लिए
- दो भाग जांघिया के लिए

कटाई लाइन के साथ–साथ काटें।

सिलाई व फिनिशिंग

सिलाई व फिनिशिंग के लिए निम्न बातों का ध्यान रखें–

i) योक (सामने तथा पीछे का भाग) को ऐसे रखें कि दोनों की सीधी तरफ एक दूसरे के आमने–सामने हों।

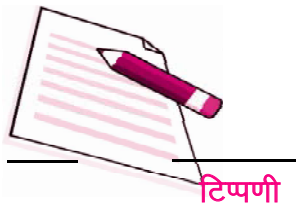

ii) तीन ओर (वेस्ट साइड को छोटा कर) सीम लाइन पर सिलाई करें।

iii) कपड़े को पलटकर सीधा करें।

iv) बाहरी गोलाई को स्वच्छता से फिनिश करने के लिए टॉप स्टिच करें।

v) जांघिया की साइड सीम तथा क्रांच को रन एण्ड फैल सीम द्वारा फिनिश करें।

vi) कमर तथा पैरों का ओपनिंग के फेसिंग द्वारा फिनिश करें।

vii) योक की वेस्ट लाइन और जांघिये की वेस्ट लाइन को ऐसे जोड़ें कि दोनों ओर एक समान कपड़ा छूटे। बाकी बचे भाग में इलास्टिक डालें।

viii) पट्टियां (स्ट्रेप) को सीधी तरफ अन्दर रखते हुए तीन तरफ मशीन से सिलें। एक तरफ खुला रखें। इस खुले भाग से स्ट्रैप को सीधा करें।

ix) पट्टी के खुले सिरे को बैक योक के दोनों भाग के बीच रखें और सिलें।

x) पट्टी को स्वच्छ फिनिश देने के लिए टॉप स्टिच करें।

xi) इसके सिरे पर बटन काज़ बनाएं।

xii) योक के अगले भाग के सिरे पर बटन लगाएं।

3.6 सावधानियाँ

i) कोनों पर सिलाई सफाई से लगाएं।

ii) कपड़े को सीधा करने पर कोनों को ठीक कर लें।

iii) ड्राफ्ट हमेशा सीधी ग्रेनलाइन पर रखें।

iv) ग्रेनलाइन सीधी रखकर ही पैटर्न रखें।

v) सही नाप के लिए कागज़ प्रतिरूप (पैटर्न) को हमेशा पिन की सहायता से जोड़ें।

vi) सफाई से काटने के लिए एक हाथ प्रतिरूप (पैटर्न) पर रखें। कटिंग लाइन के पास हाथ रखते हुए, दूसरे हाथ से कैंची का प्रयोग करें।

vii) काटने के लिए कपड़े को सतह पर सीधा रखें।

viii) काटते समय कपड़े को न उठाएं।

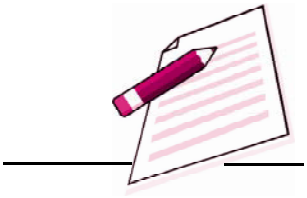

टिप्पणी

ये सावधानियाँ किसी भी वस्त्र की निर्माण प्रक्रिया में अपनाई जाती हैं।

पाठगत प्रश्न 3.1

नीचे दिए गए कथनों के सामने सही (✓) या गलत (×) लिखिए–

1. रॉम्पर और प्लेसूट अलग–अलग प्रकार के परिधान हैं।
2. रॉम्पर सिर्फ घुटने की लम्बाई तक बनता है।
3. कागज़ का प्रतिरूप बनाने के लिए ब्लॉक में सीम अलाउन्स जोड़ा जाता है।
4. स्वच्छता प्रदान करने के लिए टॉप स्टिच लगाते हैं।
5. ड्राफ्ट या ब्लॉक हमेशा सीधी ग्रेनलाइन पर रखा जाता है।

क्रियाकलाप 3.1

नीचे दिए गए नाप का प्रयोग कर एक रॉम्पर के बॉडीज तथा जांघिए का ब्लॉक बनाएं।

आवश्यक नाप

बॉडीज	–	लम्बाई	–	19 से.मी.
		चेस्ट	–	54 से.मी.
जांघिया	–	लम्बाई	–	26 से.मी.
		राउण्ड हिप	–	54 से.मी.

आपने क्या सीखा

रॉम्पर बनाने हेतु ध्यान रखी जाने योग्य बातें –

- औज़ार व सामग्री
- बेसिक ब्लॉक बनाना
- कागज़ का प्रतिरूप बनाना

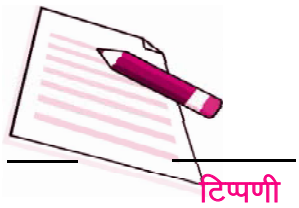

- कपड़े का अनुमान लगाना
- ले–आउट बनाना
- काटना व सिलना
- बरती जाने वाली सावधानियाँ

पाठांत प्रश्न

1. रॉम्पर के निर्माण में प्रयोग आने वाले औज़ारों और सामग्रियों की सूची बनाइए।
2. रॉम्पर बनाने के लिए कौन–कौन से नाप लेने होंगे? स्पष्ट कीजिए।
3. रॉम्पर को सिलने की प्रक्रिया का क्रम लिखिए।
4. रॉम्पर सिलने के दौरान अपनायी जाने वाली कोई भी पाँच सावधानियाँ लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1

1. गलत
2. गलत
3. सही
4. सही
5. सही

4

वस्त्र निर्माण – चुन्नट वाली फ्रॉक

फ्रॉक बच्चों और महिलाओं का एक लोकप्रिय परिधान है। फ्रॉक के दो भाग होते हैं। कमर से ऊपर का भाग बॉडीज कहलाता है। कमर से नीचे का भाग स्कर्ट कहलाता है। नीचे का भाग ढ़ीला तथा घेराव लिए होता है। स्कर्ट वाले भाग में घेराव के लिए काफी विकल्प होते हैं जैसेकि चुन्नट, प्लीट्स, कली, अम्ब्रेला (छतरी नुमा) आदि। फ्रॉक को और रुचिकार बनाने के लिए इसमें विभिन्न प्रकार के कॉलरों तथा बाजुओं का भी प्रयोग किया जा सकता है। इस पाठ में हम चुन्नट वाली फ्रॉक बनाने की विधि सीखेंगे।

चित्र 4.1: वस्त्र निर्माण– चुन्नट वाली फ्रॉक

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप :

- चुन्नट वाली फ्रॉक को बनाने में प्रयुक्त होने वाले औज़ारों व सामग्री की पहचान कर सूचीबद्ध कर सकेंगे;
- बेसिक बॉडीज व स्कर्ट ब्लॉक तथा कागज़ पर पतिरूप (पेपर पैटर्न) बना सकेंगे;

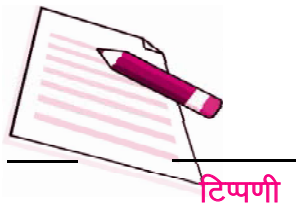

- कपड़े का अनुमान लगा तथा लेआउट बना सकेंगे; और
- चुन्नट वाली फ्रॉक सिलने के लिए सिलाई कौशल जैसे चुन्नट, बटन पट्टी, पाइपिंग व कॉलर आदि में निपुण हो सकेंगे।

4.1 औज़ार व सामग्री

चुन्नट वाली फ्रॉक बनाने के लिए निम्न औज़ार व सामग्री इकट्ठा कीजिए:

i. स्केल, रबर, पैन्सिल, कागज़

ii. इंचीटेप

iii. कैंची

iv. टेलर्स चॉक

5. कार्बन पेपर

vi. ट्रेसिंग व्हील

vii. सुई

viii. रिप्पर

ix. धागा

x. कपड़ा

4.2 बेसिक ब्लॉक और पेपर पैटर्न बनाना

I. बेसिक ड्राफ्ट ब्लॉक

आवश्यक नाप

फ्रॉक की लम्बाई	–	60 से.मी.
राउण्ड चेस्ट	–	61 से.मी.
राउण्ड वेस्ट/कमर	–	58 से.मी.
कंधे से कमर तक लम्बाई	–	23 से.मी.

ढील : कपड़े पहनने और उतारने में आराम के लिए आवश्यक नाप के अतिरिक्त दिया जाने वाला अधिक नाप ढील कहलाता है।

टिप्पणी

1. एक आयताकार बनाएं ABCD, AC = BD = लम्बाई = 23 से.मी. (कंधे से कमर तक लम्बाई)

   AB = CD = चौड़ाई = 33 से.मी. (½ राउण्ड चेस्ट + 2.5 से.मी. ढील)

2. चौड़ाई को छः बराबर भागों में बाँटें अर्थात् पाँच रेखाएँ –1,2,3,4,5 बना कर अंकित करें।

3. लम्बाई को बराबर बाँटे, रेखा AC पर बिन्दु E तथा BD पर बिन्दु F = 11. 5 से.मी. (½ लम्बाई) अंकित करें। E व F को सीधी रेखा से जोड़ें।

4. रेखा AE पर बिन्दु G तथा BF पर बिन्दु H = 5.75 से.मी. (½ AE व BF) अंकित करें। G व H को सीधी रेखा से जोड़ें।

5. रेखा AG पर बिन्दु I तथा BH पर बिन्दु J = 2.87 से.मी. (½ AE तथा EF) अंकित करें। I तथा J को सीधी रेखा से जोड़ें।

6. रेखा AI पर बिन्दु K तथा BJ पर बिन्दु L = 1.43 से.मी. (½ AI तथा BJ) अंकित करें। K तथा L को सीधी रेखा से जोड़ें।

7. K को रेखा 1 से गोलाई देते हुए जोड़ें (पीछे के गले के लिए)।

8. H को रेखा 5 से गोलाई देते हुए जोड़ें (सामने के गले के लिए)।

9. रेखा 2 पर (एक ब्लॉक नीचे) बिन्दु M अंकित करें। बिन्दु 1 तथा M को सीधी रेखा से जोड़ें।

10. रेखा 1M को M' तक = 2.5 से.मी. आगे बढ़ाएं।

11. रेखा 4 पर (एक ब्लॉक नीचे) बिन्दु N अंकित करें। बिन्दु 5 तथा M को सीधी रेखा से जोड़ें।

12. रेखा 5N को N' तक = 2.5 से.मी. आगे बढ़ायें।

13. रेखा 2 पर (तीन ब्लॉक नीचे) बिन्दु O अंकित करें।

14. रेखा 4 पर (तीन ब्लॉक नीचे) बिन्दु O' अंकित करें।

15. बिन्दु P = 2 से.मी. बिन्दु O से H की तरफ अंकित करें।

16. बिन्दु P' = 1 से.मी. बिन्दु O' से P की तरफ अंकित करें।

17. रेखा 3 पर (चार ब्लॉक नीचे) बिन्दु Q अंकित करें।

18. रेखा 3 पर बिन्दु Q से 1.5 से.मी. नीचे ओर बिन्दु R अंकित करें।

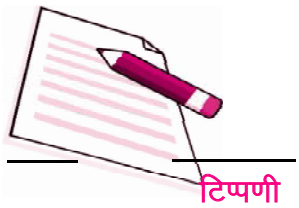

19. आगे के मुड्ढे के लिए N'P'R को गोलाई देते हुए जोड़ें।

    नोटः DH5N'P'R आगे का ब्लॉक है।

20. पीछे के मुड्ढे के लिए M'PR को गोलाई देते हुए जोड़ें।

    नोटः CK1M'PR पीछे का ब्लॉक है।

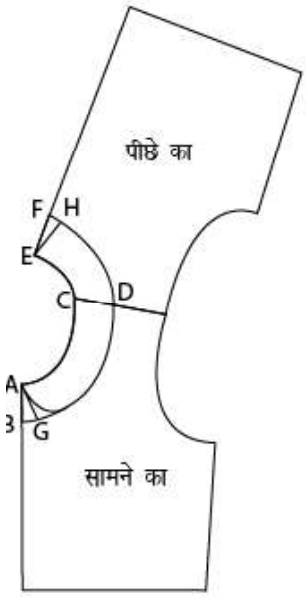

चित्र 4.2: बॉडीज ब्लॉक की ड्राफ्टिंग

स्कर्ट ब्लॉक (आगे का ब्लॉक)

1. एक आयताकार बनायें ABCD, AC = BD = लम्बाई = 37 से.मी. (फ्रॉक की लम्बाई – कंधे से कमर तक लम्बाई)

   AB = CD = चौड़ाई = 15.75 से.मी. (¼ राउण्ड वेस्ट + 1.25 से.मी. ढील)

2. चुन्नटों के लिए हमें अतिरिक्त कपड़ा चाहिए अतः चौड़ाई का दोगुना भाग लेंगे।

3. बिन्दु B को 15.75 से.मी. आगे की ओर बढ़ाकर बिन्दु E अंकित करें।

4. बिन्दु D को 15.75 से.मी. आगे की ओर बढ़ाकर बिन्दु F अंकित करें।

5. सुनिश्चित करें कि BE = DF के बराबर हो।

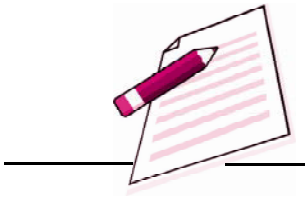

टिप्पणी

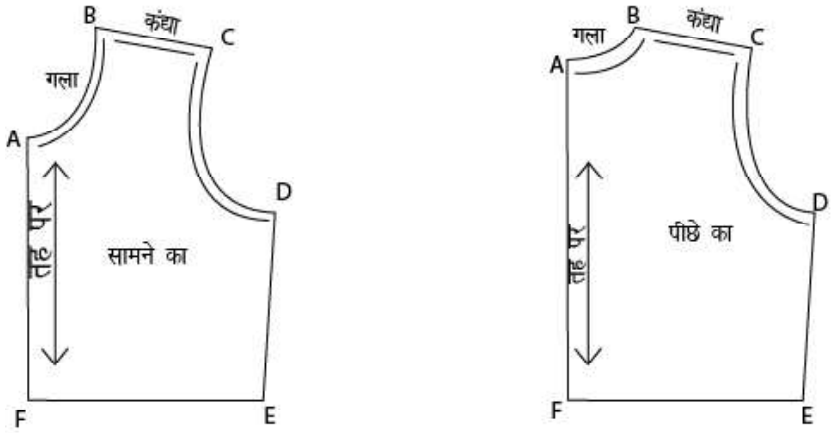

चित्र 4.3: ब्लॉक (आगे का ब्लॉक)

स्कर्ट ब्लॉक (पीछे का ब्लॉक)

आगे के ब्लॉक के समान

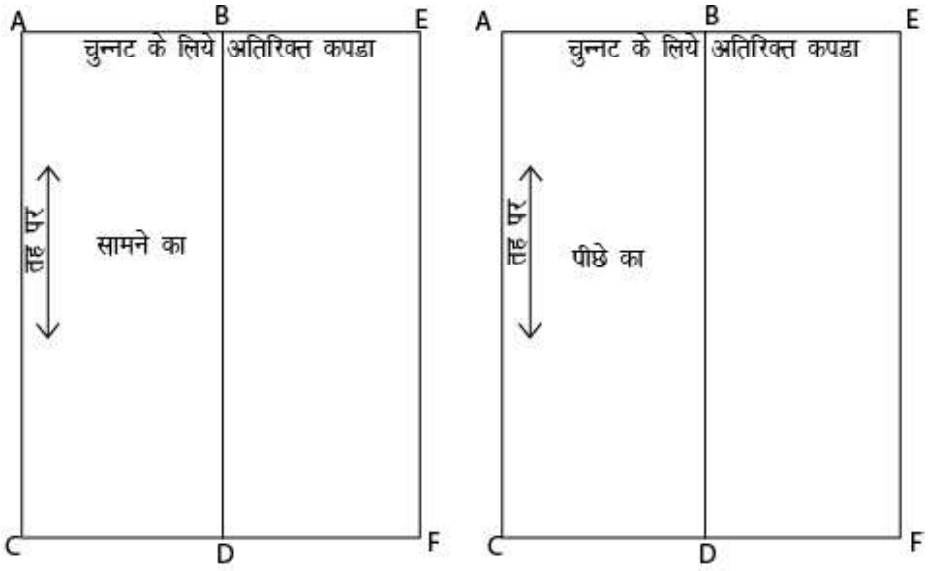

चित्र 4.4: स्कर्ट ब्लॉक (पीछे का ब्लॉक)

पीटर पैन कॉलर ब्लॉक

1. बॉडीज ब्लॉक के पीछे का ब्लॉक को ट्रेस कर लें।
2. अब समाने के ब्लॉक को इसके साथ इस प्रकार रखें कि नेकलाइन आमने सामने हो और मुड्ढे के सामने मुड्ढे हों तथा कंधे एक दूसरे से जुड़े हुए हों।

टिप्पणी

3. आगे व पीछे की नेकलाइन मिलायें। आगे की नेकलाइन को बिन्दु A अंकित करें तथा पीछे की नेकलाइन को बिन्दु E अंकित करें। कंधे पर बिन्दु C अंकित करें।
4. बिन्दु A से 6.58 से.मी. (½ राउण्ड चेस्ट + 1.5 से.मी. ढील) नीचे की ओर जाते हुए बिन्दु B अंकित करें।
5. बिन्दु C से 6.58 से.मी. (½ राउण्ड चेस्ट + 1.5 से.मी. ढील) नीचे की ओर जाते हुए बिन्दु D अंकित करें।
6. बिन्दु E से 6.58 से.मी. (½ राउण्ड चेसट + 1.5 से.मी. ढील) नीचे की ओर जाते हुए बिन्दु F अंकित करें।
7. बिन्दु B से 1 से.मी. (अंदर की ओर) बिन्दु G बनायें। बिन्दु A तथा G को सीधी रेखा से जोड़ें।

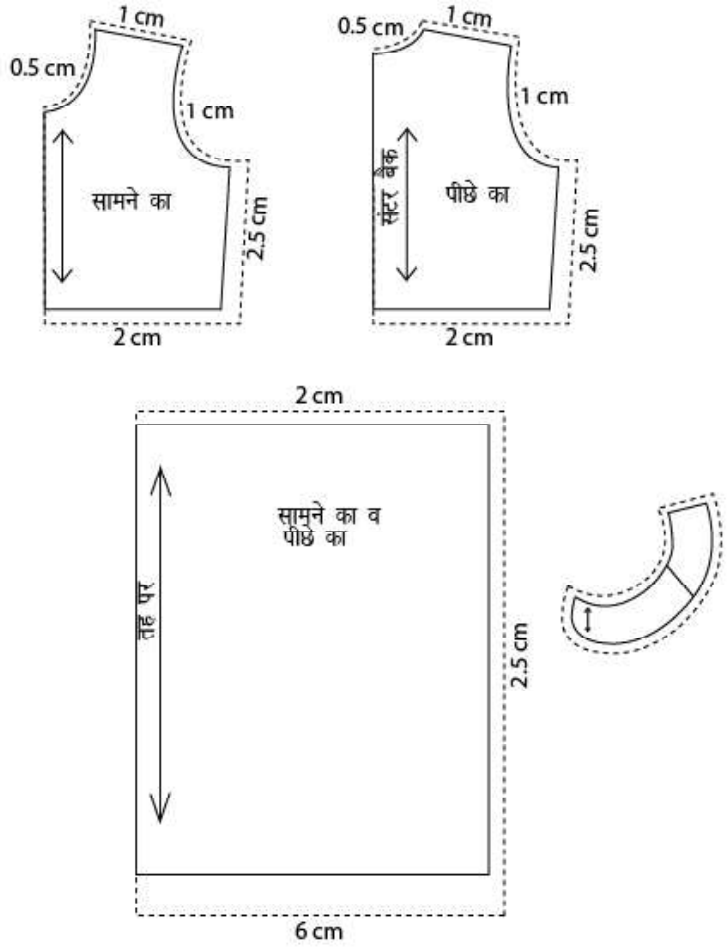

चित्र 4.5: पीटर पैन कॉलर ड्राफ्ट

टिप्पणी

8. बिन्दु F से 1 से.मी. (अंदर की ओर) बिन्दु H बनायें। बिन्दु E तथा H को सीधी रेखा से जोड़ें।
9. बिन्दु GDH को हल्की गोलाई देते हुए कॉलर का आकार दें।
10. AGDHEC = पीटर पैन कॉलर

नोट : इस विधि को अपनाते हुए आप अपने नाप का भी ड्राफ्ट बना सकते हैं।

II. पेपर पैटर्न बनाना

सीम अलाउन्स

आगे तथा पीछे का बॉडीज ब्लॉक

नेक लाइन	–	0.5 से.मी.
शोल्डर लाइन	–	1 से.मी.
मुड्ढा	–	1 से.मी.
वेस्ट लाइन	–	1 से.मी.
साइड सीम	–	2 से.मी.

आगे तथा पीछे का स्कर्ट ब्लॉक

साइड सीम	–	2 से.मी.
वेस्ट लाइन	–	1 से.मी.
नीचे का घेरा	–	6 से.मी.

पीटर पैन कॉलर

1 से.मी. तीन ओर से

4.3 कपड़े का अनुमान

लम्बाई – 1 बॉडीज की लम्बाई + 2 स्कर्ट की लम्बाई + सीम आलउन्स

– 23 से.मी. + 2 × 37 + 15 से.मी.

– 23 से.मी. + 74 से.मी. + 15 से.मी.

– 112 से.मी.

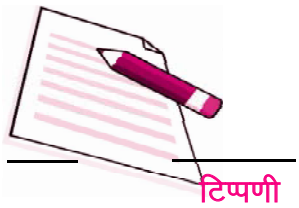

चौड़ाई – 90 से.मी.

ले–आउट

सामने का बॉडिस ब्लॉक

i. कपड़े को चौड़ाई में मोड़ें।

ii. सामने के पेपर पैटर्न को इस प्रकार व्यवस्थित करें कि इसका किनारा कपड़े के ठीक मोड़ पर आये।

पीछे का बॉडिस ब्लॉक

i. कपड़े के दोनों किनारों पर 2.5 से.मी. पर निशान लगाएं।

ii. पीछे के पेपर पैटर्न को 1.25 से.मी. दूर रखें कि सेन्टर बैक 2.5 से.मी. के बीच में आये।

iii. बाहर के 1.25 से.मी. को प्लैकेट के लिए अंदर की ओर मोड़ें।

iv. पेपर पैटर्न के नीचे कार्बन पेपर रख कर कटिंग तथा स्टिचिंग लाइन को ट्रेस कर लें।

स्कर्ट (सामने व पीछे का ब्लॉक)

i. स्कर्ट के सामने के पेपर पैटर्न को इस प्रकार रखें कि इसका सेन्टर फ्रन्ट मोड़ पर आये। सामने के बॉडिस ब्लॉक पैटर्न के नीचे।

ii. स्कर्ट के पीछे के पेपर पैटर्न को उसी प्रकार सामने के स्कर्ट के पैटर्न के नीचे रखे (जैसे ऊपर बताया गया है)।

कॉलर ब्लॉक

i. कपड़े की चौड़ाई की दो परतें लें।

ii. कॉलर ब्लॉक के पैटर्न को रखें।

iii. पेपर पैटर्न के नीचे कार्बन पेपर रखकर कटिंग तथा स्टिचिंग लाइन को ट्रेस कर लें।

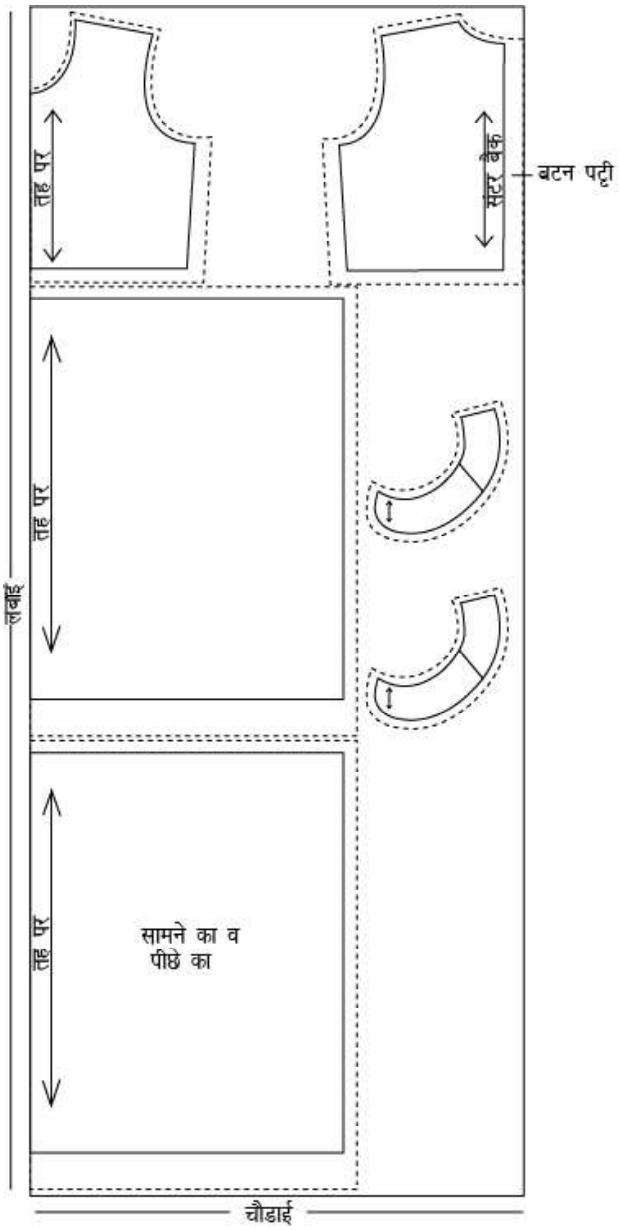

चित्र 4.6 : लेआउट

4.5 काटना व सिलना

काटना

ट्रेस किए हुए पैटर्न को सफाई से तेज़ धार वाली कैंची से कटिंग लाइन पर काटें। इसके उपरान्त आपके पास निम्न वस्त्र के भाग होंगे :

1. सामने का एक व पीछे के बॉडीज के दो भाग

टिप्पणी

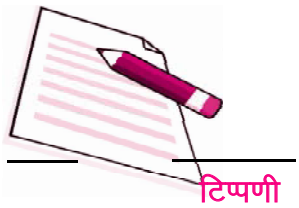

2. स्कर्ट, सामने व पीछे, के दो भाग
3. कॉलर के दो भाग।

सिलना

1. **चुन्नट बनाने की विधि**
   - स्कर्ट को वेस्ट लाइन पर मशीन की बड़ी–बड़ी बखिया किनारे से 1 से.मी. की दूरी पर करें।
   - पुनः 1 से.मी. उसके नीचे बखिया दोबारा करें।
   - धागे को खींचकर चुन्नट बनायें।
   - चुन्नट बनाने के बाद ध्यान रखें कि स्कर्ट तथा बॉडीज की वेस्ट लाइन एक ही नाप की हो।

ii. बॉडीज के दोनों भाग को कंधे पर जोड़ें।

iii. पीछे के बॉडीज पर प्लैकेट बनायें।

iv. गले पर कॉलर जोड़ें।

v. बॉडीज की साइड सीम (सिलाई) लगायें।

vi. स्कर्ट की साइड सीम लगाएं।

vii. स्कर्ट को बॉडीज से जोड़ें। स्कर्ट के घेरे की नीचे से फिनिशिंग करने के लिए तुरपन करें।

viii. मुड्ढों को पाइंपिंग से फिनिश करें।

पाठगत प्रश्न 4.1

रिक्त स्थान भरें :

1. कमर के ऊपर के भाग को ..... कहते हैं तथा नीचे के भाग को ..... कहते हैं।
2. पूरी लम्बाई में से बॉडीज की लम्बाई घटा कर ..... की लम्बाई प्राप्त होती है।
3. गले/नेक लाइन के लिए ..... से.मी. सीम आलउन्स की आवश्यकता होती है।

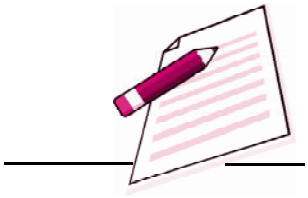

टिप्पणी

4. स्कर्ट ब्लॉक की चौड़ाई बनाने के लिए ..... राउण्ड वेस्ट (कमर) तथा ..... ढील की आवश्यकता होती है।
5. नीचे का भाग (स्कर्ट) ..... तथा घेराव लिए होती है।

क्रियाकलाप 4.1

विभिन्न डिजाइन के फ्रॉक के चित्रों को इकट्ठा करके पोर्टफोलियो तैयार करें।

आपने क्या सीखा

चुन्नट वाली फ्रॉक बनाने के लिए

- औज़ार व सामग्री
- बेसिक ब्लॉक बनाना
- पीटर पैन कॉलर बनाना
- पेपर पैटर्न बनाना
- कपड़े का अनुमान लगाना
- लेआउट बनाना
- काटना व सिलना
- चुन्नट बनाना

पाठन्त प्रश्न

1. चुन्नट वाली फ्रॉक का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
2. चुन्नट वाली फ्रॉक बनाने के लिए औज़ार व सामग्री की सूची बनाएं।
3. निम्न ब्लॉक बनाने हेतु आपको कौन–कौन से नाप की आवश्यकता होती है:
    1. बॉडीज ब्लॉक
    2. स्कर्ट ब्लॉक

टिप्पणी

3. कॉलर ब्लॉक

4. स्कर्ट में चुन्नट बनाने की विधि को समझाइए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

1. बॉडीज, स्कर्ट
2. स्कर्ट
3. 0.5 से.मी.
4. ¼, 1.5 से.मी.
5. ढीला

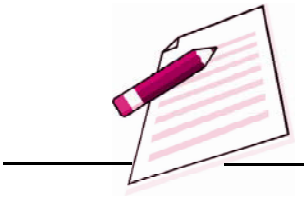

5

वस्त्र निर्माण – चूड़ीदार पाजामी

चूड़ीदार पाजामी महिलाओं व पुरुषों दोनों के द्वारा पहने जाने वाला ऊपर से ढ़ीला तथा घुटनों व नीचे के भाग पर कसा हुआ परिधान है। इसे कमीज़, कुर्ता, शेरवानी आदि के साथ पहना जाता है। चूड़ीदार सामान्यतः औरेब थैला तैयार कर बनाई जाती है। इसमें पिण्डली से नीचे चूडियाँ दी जाती हैं इसलिए नीचे का भाग अपेक्षा से अधिक लम्बा रखा जाता है।

चित्र 5.1: चूड़ीदार पाजामी

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप :

- चूड़ीदार पाजामी में प्रयोग होने वाले औज़ारों व सामग्री की पहचान कर सूचीबद्ध कर सकेंगे;
- ड्राफ्ट ब्लॉक तथा पेपर पैटर्न बना सकेंगे;
- कपड़े का अनुमान लगा तथा ले–आउट बना सकेंगे और
- चूड़ीदार पाजामी सिलने के लिए सिलाई कौशल जैसे नेफा, थैला तथा सीम्स आदि में निपुण हो सकेंगे।

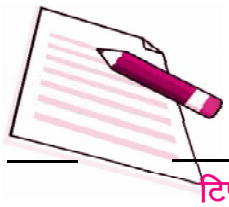

टिप्पणी

5.1 औज़ार व सामग्री

चूड़ीदार पाजामी बनाने के लिए निम्न औज़ार व सामग्री इकट्ठा कीजिए :

i. स्केल, रबर, पैन्सिल, कागज़
ii. इंचटेप
iii. ट्रेसिंग व्हील
iv. कैंची
v. टेलर्स चॉक
vi. कार्बन पेपर
vii. सुई
viii. रिप्पर तथा क्लीपर
ix. धागा
x. कपड़ा

5.2 ड्राफ्ट ब्लॉक और पेपर पैटर्न बनाना

I. ड्राफ्ट ब्लॉक

आवश्यक नाप

लम्बाई	–	90 से.मी.
राउण्ड हिप	–	90 से.मी.
राउण्ड लेग	–	35 से.मी.
(घुटने से नीचे का सबसे चौड़ा भाग)		
मोहरी	–	30 सेमी.

ड्राफ्टिंग ब्लॉक

i. एक आयत ABCD बनाये जिसमें AC = BD = लम्बाई = 90 से.मी.
AB = CD = चौड़ाई = 27.5 से.मी. (¼ राउण्ड हिप + 5 से.मी. ढील) रखें।

ii. रेखा AC पर बिंदु E, तथा रेखा BD पर बिंदु F = 35 से.मी (¼ राउण्ड हिप + 7.5 से.मी.) बिंदु A तथा B से नीचे की ओर ले (सीट की गहराई के लिए)

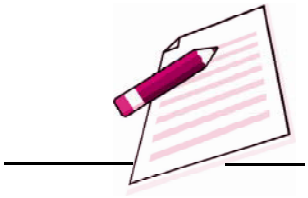

टिप्पणी

iii. रेखा E और F को सीधी रेखा से जोड़ें। रेखा F को F' तक 5 से.मी. आगे बढ़ाएं।

iv. बिंदु C को I तक बढ़ाए = 7 से 12 से.मी. (चुन्नटों के लिए इच्छानुसार लम्बाई बढ़ाएं)

v. बिंदु D को J तक बढ़ाएं = 7 से 12 से.मी. (चुन्नटों के लिए इच्छानुसार लम्बाई बढ़ाएं)

vi. बिंदु I और J को सीधी रेखा से जोड़ें।

vii. IJ पर बिंदु I' डालें = 15 से.मी (½ मोहरी)।

viii. बिंदु B को बिंदु F' से हल्की गोलाई देकर जोड़ें।

ix. बिंदु G को रेखा EC के मध्य भाग पर चिह्नित करें तथा बिंदु H को रेखा FD के मध्य भाग पर चिह्नित करें।

x. बिंदु G और H को सीधी रेखा से जोड़ें।

xi. इस रेखा पर G' अंकित करें = 17. 5 से.मी (½ राउण्ड लेग)। बिंदु F'-G'-I' को हल्की गोलाई देते हुए जोड़ें।

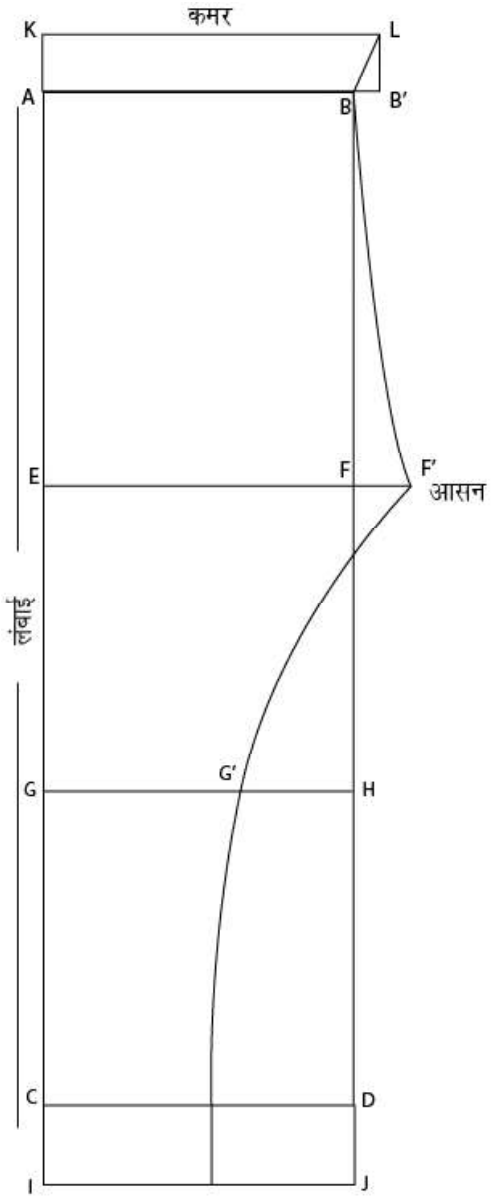

चित्र 5.2: चूड़ीदार पाजामी की ड्राफ्टिंग

xii. रेखा AB को 2.5 से.मी. B' तक आगे बढ़ाएं।

xiii. बिंदु A और B' को 5 से.मी. ऊपर उठाएं व इन्हें क्रमशः K और L नाम दें। बिंदु K और L को सीधी रेखा से जोड़ें (नेफे के लिए)।

नोट : इस विधि व फार्मूला (सूत्र) का प्रयोग करते हुए आप किसी भी नाप की चूड़ीदार पाजामी बना सकते हैं।

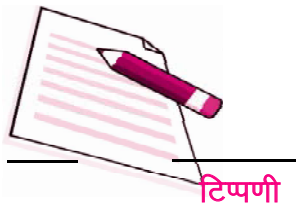

I. पेपर पैटर्न बनाना

सीम अलाउन्स (सीवन के अंदर कपड़ा दबाना)

साइड सीम – 1 से.मी.

मोहरी – 2 से.मी.

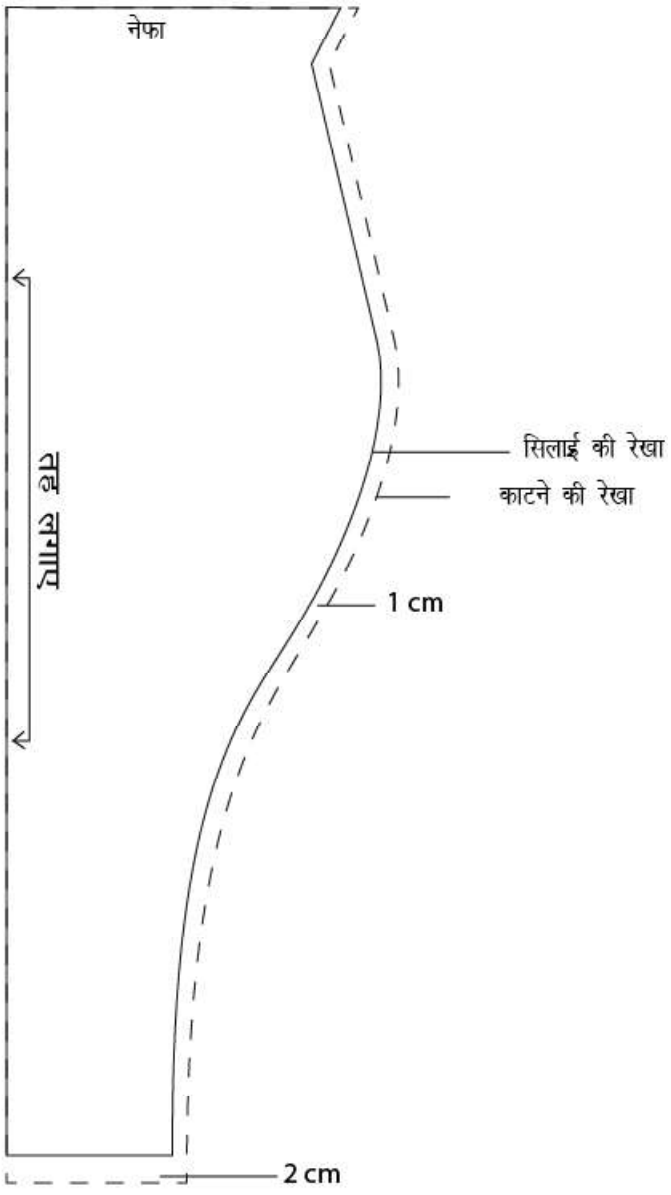

चित्र 5.3: पेपर पैटर्न

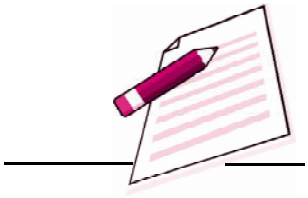

टिप्पणी

5.3 कपड़े का अनुमान

चूड़ीदार पाजामी के लिए आवश्यक कपड़ा पाजामी की लम्बाई पर निर्भर होता है। यदि पाजामी में चुन्नटें ज़्यादा पसन्द हों तो कपड़ा थोड़ा ज़्यादा लगता है। आमतौर पर कपड़े का अनुमान निम्न प्रकार लगाया जाता है :

लम्बाई = 2 × लम्बाई + सीम अलाउन्स + चुन्नटें

= 90 से.मी. × 2 + 2 से.मी. + 7 से.मी.

= 189 से.मी.

चौड़ाई = 120 से.मी.

5.4 ले–आउट

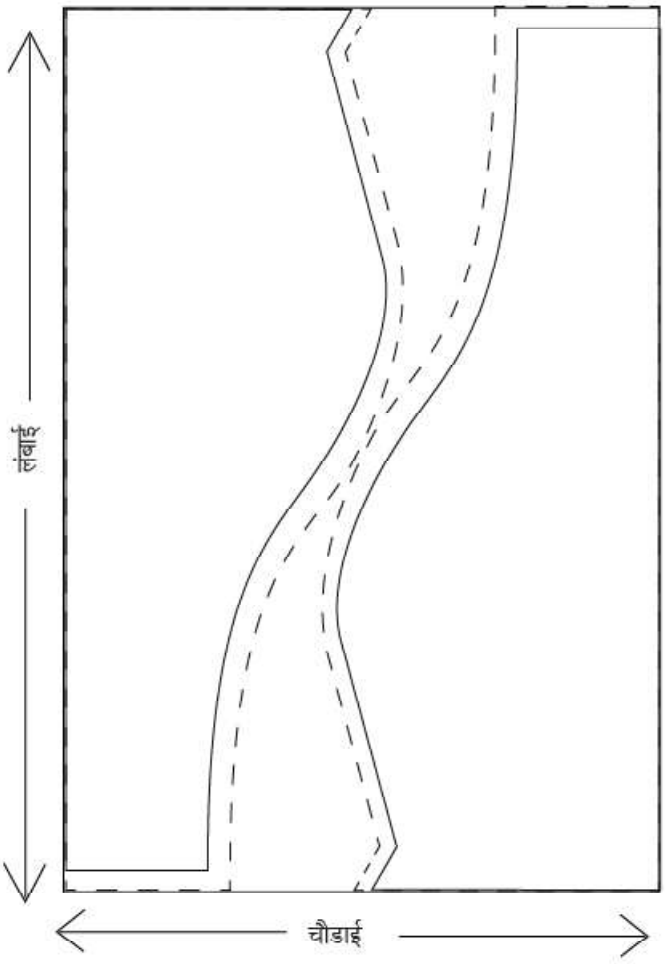

चित्र 5.4: ले–आउट

टिप्पणी

नोट : चूड़ीदार पाजामी में ले–आउट थैला बना कर किया जाता है। थैला बनाने की विधि आगे बताई जा रही है।

5.5 थैला बनाने की विधि

यह थैला सीट (आसन) के नाप के लगभग दो तिहाई चौड़ाई का बनाया जाता है।

i. बिंदु 1–2–3–4 कपड़ा थैले के लिए लिया गया कपड़ा है। बिंदु 1–3 या 2–4 सीधी ग्रेनलाइन पर है। बिंदु 1–2 या 2–4 आड़ी ग्रेनलाइन पर है।

ii. कपड़े को 5–6 पर मोड़ते हुए हमें 2–3–6–5 का आकार प्राप्त होगा। बिंदु 2–5 तथा 3–6 को 1 से.मी. का सीम अलाउन्स देते हुए सिल लें। बिंदु 7 से बिंदु 5 (सीधी रेखाएँ) हिप के नाप का दो तिहाई लें जो बैग के नाप के बराबर है।

iii. कपड़े को खोलें व बिंदु 7–10–9 को बिंदु 7–8–9 से मिलाएं। इससे एक बैग बनता है जो चारों तरफ से बंद होता है। रेखा 5–7 तथा 9–6 पर काटने पर हम बैग को आसानी से मेज़ पर बिछा सकेंगे।

iv. 1–2 तथा 3–4 को इस प्रकार मोड़ें कि सभी सिलाई घुटनों से नीचे आये तथा सिलते समय मोहरी के पास ज़रा सी सिलाई नज़र आये।

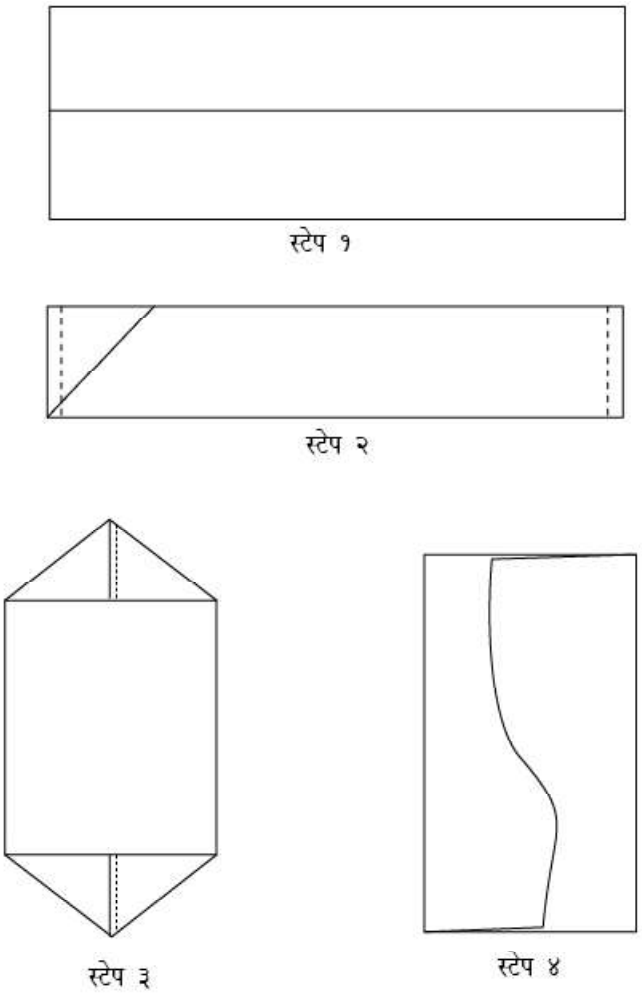

चित्र 5.5: थैला बनाने की विधि

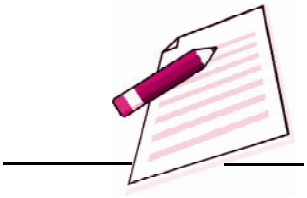

टिप्पणी

v. चूड़ीदार पाजामी औरेब पर काटी जाती है जिससे इसके खिंचने की क्षमता अधिक हो जाती है।

5.6 काटना व सिलना

पैटर्न के भाग – दो भाग (पाजामी के)

काटना – कटिंग लाइन के साथ–साथ काटें।

सिलना

i. दोनों पैरों को सीधी तरफ से एक साथ रखें व टखने से सीट की गहराई तक 1 से.मी के सीम अलाउन्स पर सिलें। मज़बूती के लिए इसके बाहर की ओर एक सिलाई और दें। दूसरे पैर को भी इसी प्रकार सिल लें, सिलाई को खोलकर प्रेस करें।

ii. एक पैर को पलट कर सीधा करें तथा दूसरे पैर के अंदर डालें और दोनों पैरों को सीट की गहराई से कमर तक सिलें। मज़बूती के लिए इसके पास एक और सिलाई लगाएं।

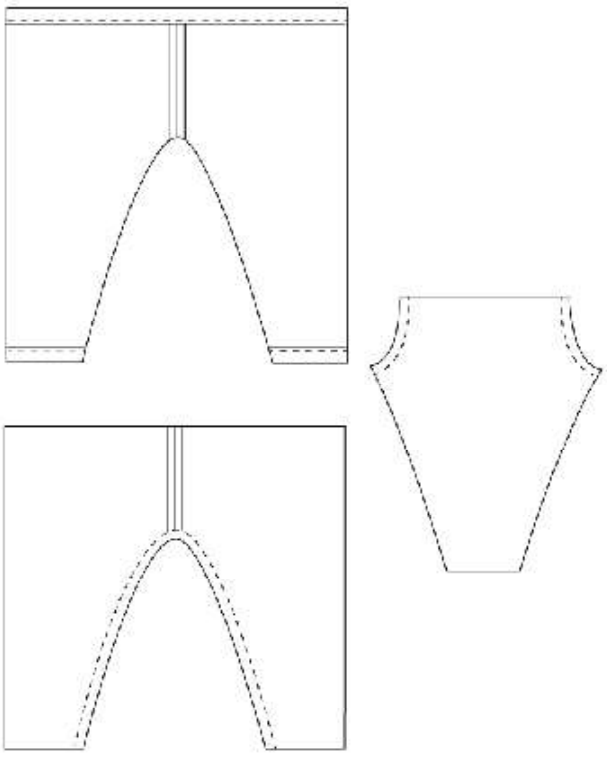

चित्र 5.6: सिलाई करना

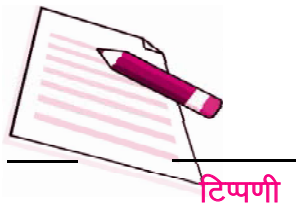

iii. **नेफा बनाने की विधि**

कपड़े के ऊपरी भाग को ½ से.मी मोड़ें व प्रेस करें। अब इसे दोबारा 2 से. मी. मोड़ें व प्रेस करें इससे किनारे अंदर की ओर चलें जाएंगे और आपको नेफे की आकृति प्राप्त होगी। इसमें सामने की ओर लगभग 5 से.मी. खुला रखें ताकि इसमें नाड़ा डाला जा सके।

iv. पाजामी की मोहरी के सिरे को भी नेफे की तरह मोड़ कर सिलाई करें।

पाठगत प्रश्न 5.1

नीचे दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुन कर रिक्त स्थान भरिए–

1. पाजामी बनाने के लिए आवश्यक नाप है लम्बाई, ..., राउण्ड लेग और मोहरी। (राउण्ड हिप, राउण्ड चेस्ट)

2. चूड़ीदार पाजामी में ..... से नीचे चूड़ियाँ दी जाती है

(पिण्डली, कमर)

3. चूड़ीदार पाजामी सामान्यतः ..... थैला तैयार कर के बनाई जाती है। (आड़ा, औरेब)

4. ब्लॉक की चौड़ाई के लिए आप लेंगे ..... राउण्ड हिप + ... से.मी. ढील।

(10 से.मी., 2 से.मी.; 27.5 से.मी., 5 से.मी.)

5. पाजामी की मोहरी के सिरे को भी ..... की तरह मोड़ कर सिलाई करें। (नेफे, कमर)

क्रियाकलाप 5.1

अपना नाप लेकर चूड़ीदार पाजामी का ब्लॉक बनाएँ।

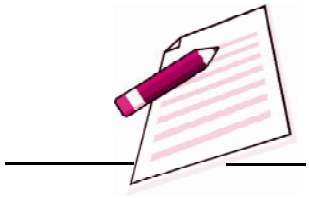

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

चूड़ीदार पाजामी बनाने हेतु :

- औज़ार व सामग्री
- ड्राफ्ट ब्लॉक और पेपर पैर्टन बनाना
- कपड़े का अनुमान लगाना
- ले–आउट बनाना
- थैला बना कर पाजामी काटना व सिलना
- नेफा बनाना

पाठान्त प्रश्न

1. चूड़ीदार पाजामी बनाने के लिए कौन–कौन से नाप की आवश्यकता होती है?
2. चूड़ीदार पाजामी बनाने के लिए औजार व सामग्री की सूची बनाएं।
3. चूड़ीदार पाजामी हमेशा औरेब पर क्यों बनाई जाती है?
5. पाजामी सिलने की विधि को क्रम में लिखें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1

1. राउण्ड हिप
2. पिण्डली
3. औरेब
4. 27.5 से.मी., 5 से.मी.
5. नेफे

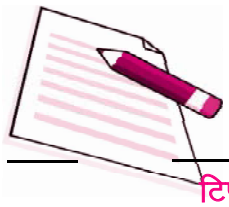

मूल्यांकन पत्र–1 (पाठ 1 से 5)

1. रिक्त स्थान भरिए–

   i. रंग हमारा ..... बदल सकते हैं।

   ii. बने बनाए वस्त्र ..... नाप पर आधारित होते हैं।

   iii. चूड़ीदार सामान्यत : ..... थैली तैयार कर बनाई जाती है।

   iv. ..... को प्लेसूट भी कहा जाता है।

   v. फ्रॉक को रुचिकर बनाने के लिए इसमें विभिन्न प्रकार के ..... तथा बाजुओं का भी प्रयोग किया जाता है।

2. निम्नलिखित कथनों पर सही या गलत का चिन्ह लगाएं–

   i. कमर से ऊपर का भाग स्कर्ट कहलाता है।

   ii. चूड़ीदार पाजामी महिलाओं व पुरुषों दोनों के द्वारा पहने जाने वाला परिधान है।

   iii. रॉम्पर के बॉडीज वाले भाग को इच्छानुसार छोटा व लम्बा रखा जा सकता है।

   iv. विभक्त रंग योजना दो रंगों वाली योजना है।

   v. सेब जैसी शारीरिक आकृति वाले व्यक्ति के शरीर का पीछे का हिस्सा हिप व जांघों के स्थान पर अधिक चर्बी होती है।

3. सही मिलान कीजिए–

i.	झुके हुए कंधो का दोष	1.	रन एण्ड फैल सीम द्वारा
ii.	नीले रंग के टिन्ट्स व शेड	2.	नीचे का भाग अधिक लम्बा
iii.	जांघिया की साइड सीम व फ्रॉक	3.	मोनोक्रोमेटिक रंग योजना
iv.	कमर से ऊपर का भाग	4.	मुड़्ढ़ा

6

वस्त्र निर्माण – नेहरू कुर्ता

नेहरू कुर्ता एक पारंपरिक कुर्ता है। इसमें बांहें कलाई पर सीधी आती है। यह कहीं भी सकरी नहीं होती है। इसमें सामने की ओर बटन लगे होते हैं। कभी–कभी इसमें मैण्डरिन/स्टैण्डआप कॉलर/नेहरू कॉलर भी लगा होता है। इसमें बॉडीज की बांयी ओर एक जेब भी लगी होती है। दिलचस्प बात यह है कि यह कुर्ता स्त्री और पुरुष दोनों के द्वारा पहना जाता है। नेहरू कुर्ता चूड़ीदार पाजामी, पाजामा तथा सलवार के साथ पहना जाता है। आजकल की युवा पीढ़ी इसे जीन्स के साथ भी पहनती है।

चित्र 6.1: नेहरू कुर्ता

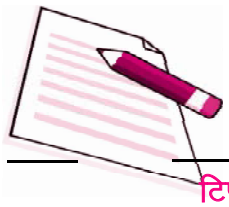

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप :

- नेहरू कुर्ता तैयार करने में प्रयोग होने वाले औज़ारों व सामग्री की पहचान करके सूचीबद्ध कर सकेंगे;
- बेसिक ड्राफ्ट ब्लॉक तथा पेपर पैटर्न बना सकेंगे;
- कपड़े का अनुमान लगा तथा ले–आउट बना सकेंगे; और
- कुर्ता सिलने के लिए आवश्यक कौशल जैसे जेब लगाना, बटन पट्टी बनाना तथा कॉलर लगाना आदि में निपुण हो सकेंगे।

6.1 औज़ार व सामग्री

नेहरू कुर्ता बनाने के लिए आपको निम्न औज़ार व सामग्री की आवश्यकता हागी :

i. स्केल, रबर, पैन्सिल, कागज़
ii. इंचीटेप
iii. ट्रेसिंग व्हील
iv. कैंची
v. टेलर्स चॉक
vi. कार्बन पेपर
vii. सुई
viii. रिप्पर
ix. धागा
x. कपड़ा

टिप्पणी

6.2 ड्राफ्ट ब्लॉक और पेपर पैटर्न बनाना

I. ड्राफ्ट ब्लॉक

A. आवश्यक नाप

लम्बाई	– 85 से.मी.
राउण्ड नेक	– 37 से.मी.,
राउण्ड चेस्ट	– 89 से.मी.
अक्रॉस बैक	– 19 से.मी. (पीछे का कंधा)
कमर तक लम्बाई	– 41 से.मी.

B. ड्राफ्टिंग (सामने का ब्लॉक)

i. एक आयात ABCD बनाएं जिसमें AC = BD = लम्बाई = 87.5 से.मी. (पूरी लम्बाई + 2.5 से.मी.) रखें।

AB = CD = चौड़ाई = 26.25 से.मी. (¼ राउण्ड चेस्ट + 4 से.मी.) रखें।

ii. रेखा AC पर बिंदु E तथा रेखा BD पर बिंदु F = 22.25 से.मी. (¼ राउण्ड चेस्ट) बिंदु A व B से डालें। EF को मिलाएं।

iii. रेखा EC से बिंदु G तथा रेखा FD से बिंदु H = 41 से.मी. (कमर तक लम्बाई) बिंदु A व B से डालें। GH को सीधी रेखा से जोड़ें।

iv. रेखा AB पर बिंदु A' = 7.16 से.मी. (1/6 राउण्ड नेक + 1 से.मी. ढील) बिंदु A से बनाएं।

v. रेखा AC पर बिंदु I = 7.16 सेमी. (1/6 राउण्ड नेक + 1 से.मी. ढील) बिंदु A से डालें। (A' व I को गले की गोलाई देते हुए जोड़ें)

vi. रेखा AB पर बिंदु J = 20 से.मी. (अक्रॉस बैक + 1 से.मी. ढील) बिंदु A से बनाएं। इसी प्रकार 20 से.मी. रेखा EF पर नापें व इसे बिंदु E' का नाम दें।

vii. JE' को सीधी रेखा से जोड़ें। बिंदु J से नीचे की ओर 3 से.मी. नापें व बिंदु J' अंकित करें। AJ' को तिरछी रेखा से जोड़ें।

viii. रेखा J'E' पर बिंदु E' से ऊपर की ओर 2.5 से.मी. लें व इसे बिंदु K का नाम दें।

ix. रेखा GH पर बिंदु H से 1.5 से.मी. दूरी पर बिंदु H' अंकित करें।

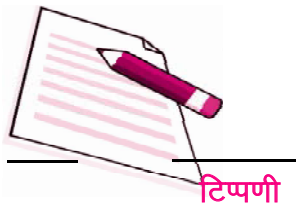

x. रेखा HD पर D से 2 से.मी. दूरी पर बिंदु D' अंकित करें। FH'D' को साइड सीम के लिए जोड़ें। CD' को गोलाई देते हुए जोड़ें।

xi. बिंदु I को I' तक = 0.75 से.मी. बिंदु A की ओर अंकित करें। बिंदु I' से 24.75 से.मी. (¼ राउण्ड चेस्ट + 2.5 से.मी. ढील) नीचे बिंदु G की ओर बिंदु L अंकित करें। I' L को सीधी रेखा से जोड़ें।

नोट : रेखा I' L बटन पट्टी की रेखा है। रेखा I' L को ऊपरी तह पर काटें।

xii. बिंदु D' से 11 से.मी. H की ओर अंकित करें।

xiii. बिंदु D' से 11 से.मी. बिंदु H की ओर बिंदु O अंकित करें। यह कुर्ते की साइड चाक का भाग है।

ए

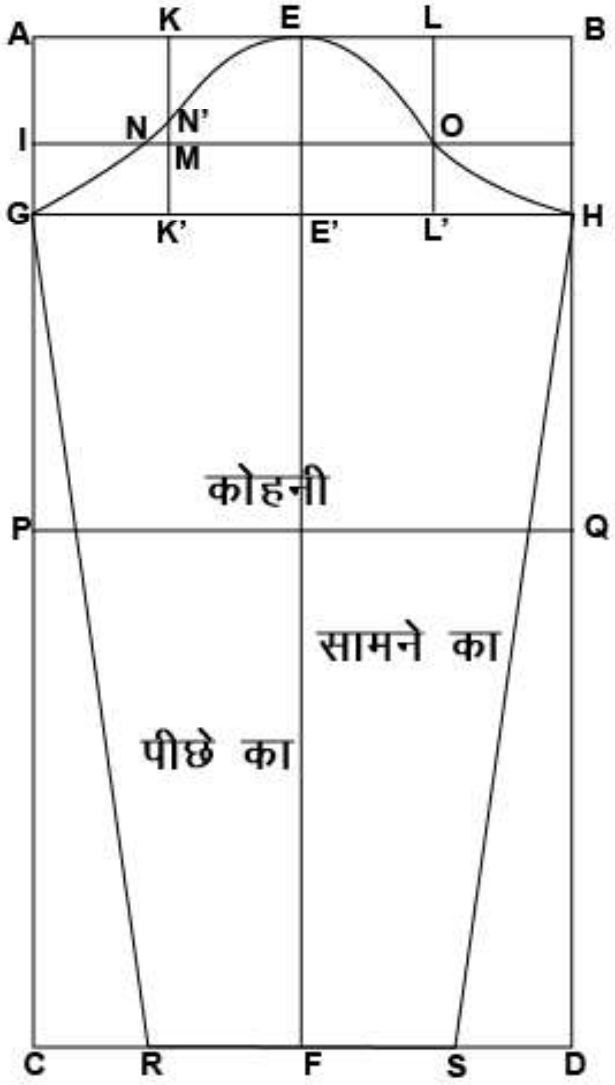

चित्र 6.2: ड्राफ्टिंग ब्लॉक

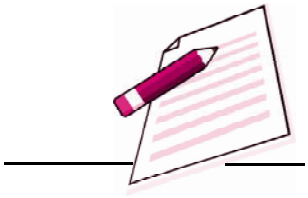

टिप्पणी

C. ड्राफ्टिंग (पीछे का ब्लॉक)

i. एक आयात ABCD बनाएं जिसमें AC = BD = लम्बाई = 87.5 से.मी. (पूरी लम्बाई + 2.5 से.मी.) रखें।

AB = CD = चौड़ाई = 26.25 से.मी. (¼ राउण्ड चेस्ट + 4 से.मी.) रखें।

ii. रेखा AC पर बिंदु E तथा रेखा BD पर बिंदु F = 22.25 से.मी. (¼ राउण्ड चेस्ट) बिंदु A व B से डालें। EF को मिलाएं।

iii. रेखा EC पर बिंदु G तथा रेखा FD पर बिंदु H = 41 से.मी. (कमर तक लम्बाई) बिंदु A व B से डालें। GH को सीधी रेखा से जोड़ें।

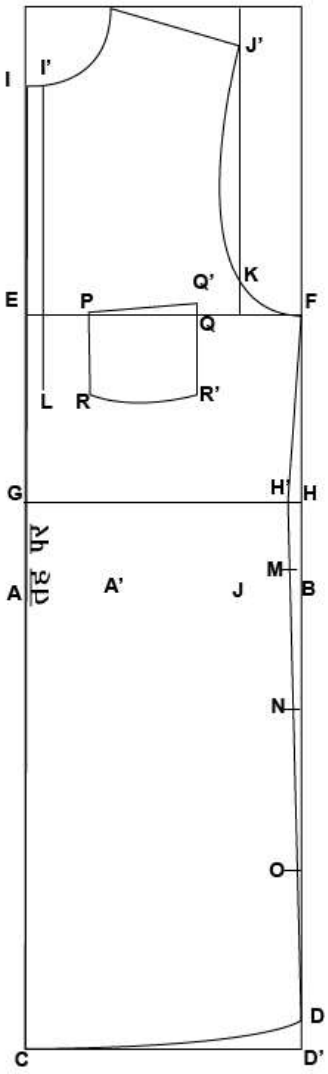

चित्र 6.3: पीछे की ड्राफ्टिंग

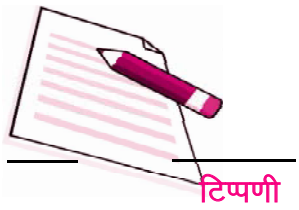

iv. रेखा AB पर बिंदु A' = 7.16 से.मी. (1/6 राउण्ड नेक + 1 से.मी.) बिंदु A से बनाएं।

v. A' को 1.25 से.मी. ऊपर उठाएं व बिंदु I का नाम दें। रेखा AB पर बिंदु J = 20 से.मी. (अक्रॉस बैक + 1 से.मी. ढील) बिंदु A से अंकित करें। IA को पीछे के गले के लिए गोलाई देते हुए जोड़ें।

vi. रेखा EF पर बिंदु E से 20 से.मी. नापें व इसे E' का नाम दें। JE' को सीधी रेखा से जोड़ें।

vii. बिंदु J से बिंदु E' की ओर 1.75 से.मी. नापें व इसे J' का नाम दें। IJ' को तिरछी रेखा से जोड़ें।

viii. J'F को मुड्ढे के लिए गोलाई देते हुए जोड़ें। रेखा GH पर 1.5 से.मी. बिंदु H से दूरी पर बिंदु H' अंकित करें।

ix. रेखा HD पर बिंदु D से 2 से.मी. की दूरी पर बिंदु D' अंकित करें।

x. CD' को गोलाई देते हुए जोड़ें। FH'D' को साइड सीम के लिए जोड़ें।

xi. बिंदु D' से 11 से.मी. बिंदु H की ओर बिंदु M अंकित करें। यह कुर्ते की साइड चॉक का भाग है।

D. पैच पॉकेट की ड्राफ्टिंग

नोट : पैच पॉकेट की ड्राफ्टिंग कुर्ते के सामने के ब्लॉक पर की जाती है।

i. सामने के ब्लॉक पर बिंदु P को रेखा EF पर बिंदु E से 5 से.मी. की दूरी पर अंकित करें।

ii. बिंदु P से बिंदु F की ओर 11 से.मी. (इच्छानुसार बढ़ाया या घटाया जा सकता है) की दूरी पर बिंदु Q अंकित करें।

iii. बिंदु P से 13 से.मी. (इच्छानुसार बढ़ाया या घटाया जा सकता है) रेखा GH की ओर लम्बाई में रेखा खींचे तथा बिंदु R का नाम दें।

iv. बिंदु Q को 2 से.मी. ऊपर की ओर उठायें व इसे बिंदु Q' का नाम दें। PQ' को तिरछी रेखा से जोड़ें।

v. बिंदु Q' से 13 से.मी. GH रेखा की ओर रेखा खींचे तथा बिंदु R' का नाम दें। RR' को गोलाई देते हुए जोड़ें।

टिप्पणी

E. बाजू की ड्राफ्टिंग

आवश्यक नाप

बाजू की लम्बाई – 61 से.मी.

चौड़ाई (बाजू का सबसे मोटा भाग + 5 से.मी.) = 28+5 = 33 से.मी.

कोहनी से लम्बाई (कलाई से कोहनी) = 32 से.मी.

कलाई (कलाई की गोलाई) = 19 से.मी.

i. एक आयत ABCD बनाएं जिसमें AC = BD = बाजू की लम्बाई।

AB = CD = चौड़ाई

ii. रेखा AB पर बिंदु E = ½ चौड़ाई अंकित करें।

iii. रेखा CD पर बिंदु F = ½ चौड़ाई अंकित करें।

iv. EF को सीधी रेखा से मिलाएं। यह ब्लॉक को दो भागों में बॉटता है।

v. रेखा AC पर बिंदु G = 1/3 चौड़ाई बिंदु A से C की ओर अंकित करें।

vi. रेखा BD पर बिंदु H = 1/3 चौड़ाई बिंदु B से D की ओर अंकित करें। GH को सीधी रेखा से मिलाएं।

vii. रेखा AG पर बिंदु I तथा BH रेखा पर बिंदु J = ½ AG + 1 से.मी., ½ BH + 1 से.मी. अंकित करें। IJ को सीधी रेखा से जोड़ें। यह ऊपर वाले भाग की अपेक्षाकृत गहरा बनता है।

viii. ब्लॉक AGHB को चार बराबर भागों में (लम्बवत) बाँटे तथा बिंदु K और K', E और E' और L और L' अंकित करें। इससे आपको आठ भाग मिलेंगे।

ix. रेखा KK' से बिंदु K से एक ब्लॉक नीचे बिंदु M अंकित करें।

x. बिंदु M से बिंदु I की ओर 1.5 से.मी. दूरी पर बिंदु N अंकित करें।

xi. बिंदु M से बिंदु K की ओर 1.5 से.मी. दूरी पर बिंदु N' अंकित करें।

xii. रेखा LL' पर बिंदु O अंकित करें (बिंदु L से एक ब्लॉक नीचे की ओर)

xiii. GNN'E OH को बाजू के ऊपरी भाग के लिए पर्वत की चोटी जैसा आकार दे कर बनाएं।

xiv. AC पर बिंदु P = 31 से.मी. C से बिंदु A की ओर अंकित करें।

टिप्पणी

xv. BD पर बिंदु Q = 31 से.मी. D से बिंदु B की ओर अंकित करें। PQ को सीधी रेखा से जोड़ें (कोहनी के लिए)

xvi. बिंदु F से बिंदु C को ओर बिंदु R = ½ कलाई + 1.5 से.मी. ढील अंकित करें।

xvi. बिंदु F से D की ओर बिंदु S = ½ कलाई + 1.5 से.मी. ढील अंकित करें।

xviii. बिंदु GR तथा HS को साइड सीम के लिए सीधी तिरछी रेखा से जोड़ें।

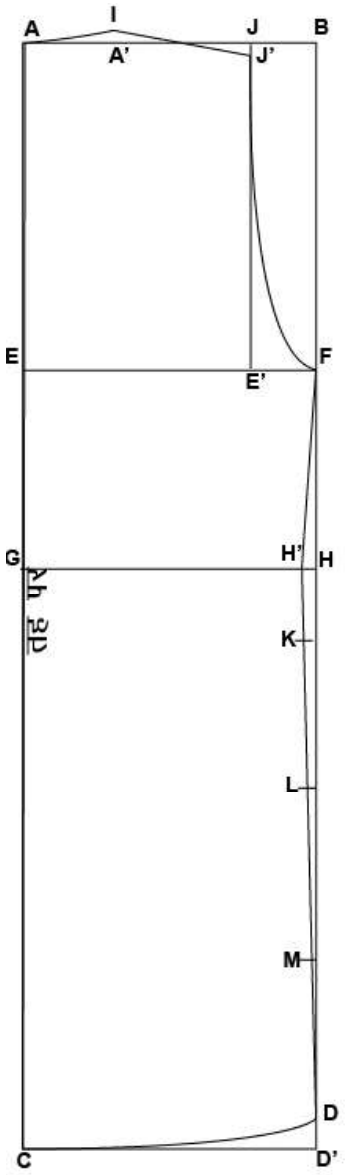

चित्र 6.4: बाजू की ड्राफ्टिंग

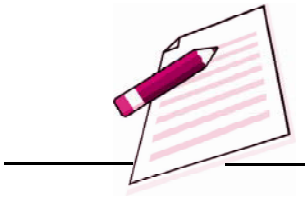

टिप्पणी

F. नेहरू कॉलर की ड्राफ्टिंग

i. एक आयत ABCD बनाएं, जिसमें AC= BD = लम्बाई ½ राउण्ड नेक + 1 से.मी. ढील हो।

AB = CD = चौड़ाई = 5 से.मी. (इच्छानुसार घटाया या बढ़ाया जा सकता है)

ii. रेखा AB पर बिंदु E तथा CD पर बिंदु F = 1.5 से.मी. बिंदु A तथा C से अंकित करें। EF को सीधी रेखा से जोड़ें।

iii. रेखा AC पर बिंदु G = 1.5 से.मी. बिंदु C से A की ओर अंकित करें।

iv. रेखा CD पर बिंदु H = 2 से.मी. बिंदु D से F की ओर अंकित करें। G तथा H को तिरछी रेखा से जोड़ें।

v. EG तथा BH को हल्की गोलाई देते हुए मिलाएं।

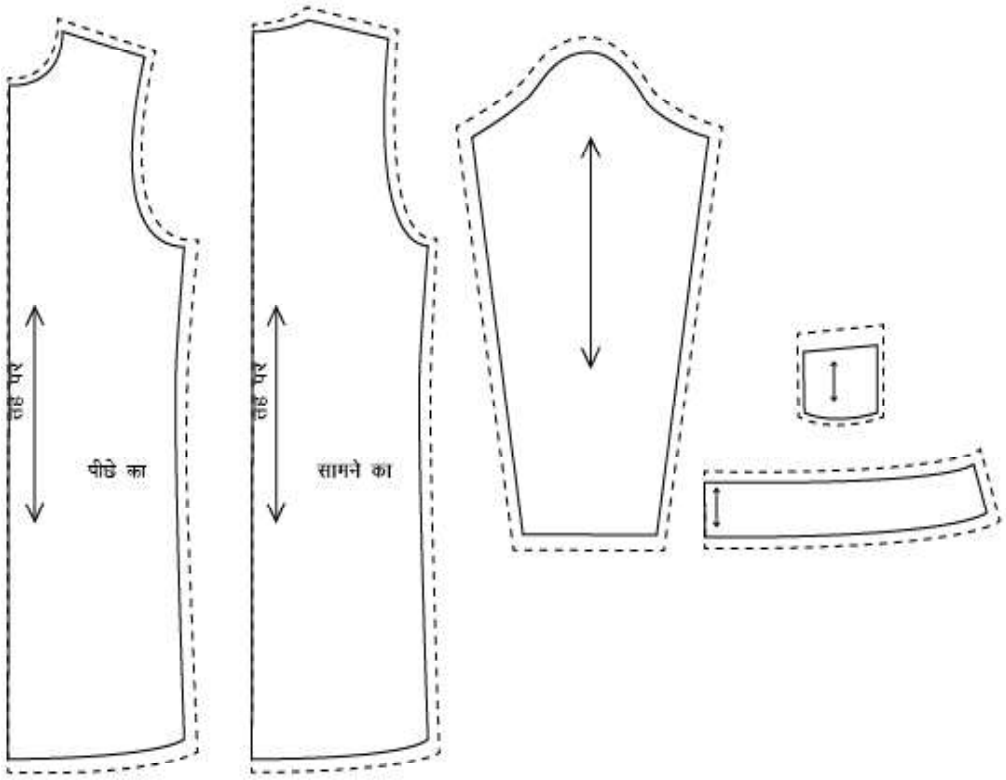

चित्र 6.5: नेहरू कॉलर की ड्राफ्टिंग

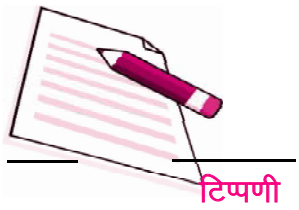

II. पेपर पैटर्न बनाना

सीम अलाउन्स–

सामने व पीछे के ब्लॉक के लिए

गला/नेक	–	0.5 से.मी.
शोल्डर लाइन (कंधा)	–	1 से.मी.
मुड्ढा	–	1 से.मी.
साइड सीम	–	2 से.मी.
घेरा	–	2 से.मी.

जेब/पॉकेट के लिए

सभी ओर 1 से.मी.

बाजू के लिए

1 से.मी. तीन ओर से

2 से.मी. कलाई पर

नेहरू कॉलर के लिए

तीन ओर से 1 से.मी.

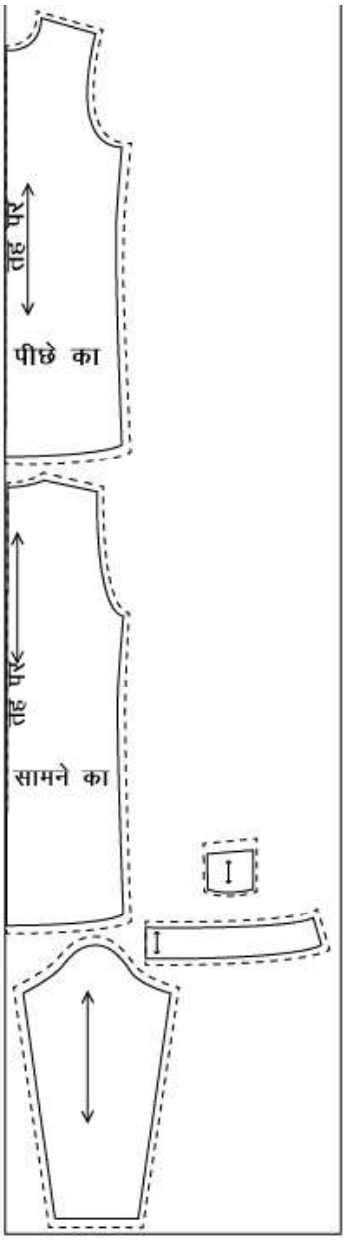

चित्र 6.6: पेपर पैटर्न

6.3 कपड़े का अनुमान

कपड़े का अनुमान लगाने के लिए कुर्ते की लम्बाई और एक बाजू की लम्बाई का नाप आवश्यक है। नीचे दिए गए फार्मूला से आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है।

लम्बाई = 2 × लम्बाई + 1 बाजू की लम्बाई + सीम अलाउन्स

= 2 × 85 से.मी. + 61 से.मी. + 10 से.मी.

= 241 से.मी.

चौड़ाई = 90 से.मी.

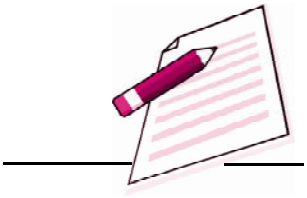

टिप्पणी

6.4 ले–आउट

i. कपड़े को चौड़ाई में मोड़ें।

ii. कपड़े की तह पर पेपर पैटर्न को इस तरह से रखें कि पैटर्न का किनारा बिल्कुल कपड़े की तह पर आये।

iii. सबसे पहले सामने का ब्लॉक रखें। उसके नीचे पीछे का ब्लॉक रखें।

iv. पीछे के ब्लॉक के ठीक नीचे बाजू का ब्लॉक रखें।

v. सारे पैटर्न को कार्बन पेपर की मदद से ट्रेसिंग व्हील के द्वारा कपड़े पर ट्रेस कर लें।

vi. बाकी बचे हुए कपड़े से बटन पट्टी, कॉलर, पॉकेट का ब्लॉक रख कर ट्रेस कर लें।

पाठगत प्रश्न 6.1

कॉलम 'क' का मिलान कॉलम 'ख' से करें।

	क	ख	
1.	गला / नेक	i)	1 से.मी.
2.	शोल्डर लाइन	ii)	2 से.मी.
3.	मुड्ढा	iii)	0.5 से.मी.
4.	साइड सीम	iv)	1 से.मी.
5.	कलाई	v)	2 से.मी.

6.5 काटना तथा सिलना

पैटर्न के भाग

सामने का ब्लॉक	–	1 पीस
पीछे का ब्लॉक	–	1 पीस
बाजू	–	2 पीस

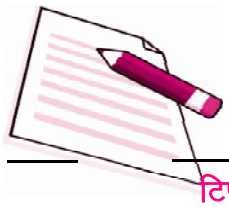
टिप्पणी

पॉकेट	–	1 पीस
नेहरू कॉलर	–	1 पीस

काटना – कटिंग रेखा के साथ–साथ काटें।

सिलाई

नेहरू कुर्ता सिलने का क्रम

i. बटन पट्टी बनाएं।

ii. सामने वाले हिस्से पर पॉकेट लगाएं।

iii. दोनों आगे व पीछे के हिस्सों को कंधों पर सीधी सिलाई करते हुए जोड़ें।

iv. बाजू की लम्बाई को सिले तथा किनारी को मोड़ कर फिनिश करें।

v. कुर्ते के दोनों भागों के सिरे व चाक को मोड़ कर फिनिश करें।

vi. अब आगे और पीछे के भाग को साइड सिलाई करके जोड़ें।

vii. गले पर कॉलर लगाएं तथा बाजू को कुर्ते के मुड्ढे से जोड़ें।

viii. बटन पट्टी पर काज बनाकर बटन टॉकें।

पाठगत प्रश्न 6.2

नीचे दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुन कर रिक्त स्थान भरिए–

1. कुर्ते की बाँहें/बाजू कहीं भी ..... नहीं होती हैं। (संकरी, सीधी)

2. पैच पॉकेट की ड्राफ्टिंग कुर्ते के ..... के ब्लॉक पर की जाती है। (सामने, पीछे)

3. कुर्ते को सिलने के लिए ..... + 1 बाजू की लम्बाई + सीम अलाउन्स कपड़े की आवश्यकता होती है। (एक लम्बाई, दो लम्बाई)

4. ले–आउट में ..... के ब्लॉक के ठीक ..... बाजू का ब्लॉक रखा जाता है। (पीछे, नीचे, आगे, समाने)

5. बाजू को मुड्ढे से जोड़ने से ..... कंधा व साइड सिलाई कर लें। (बाद, पहले)

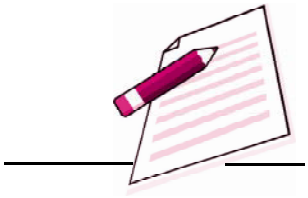

टिप्पणी

क्रियाकलाप 6.1

अपना नाप लेकर नेहरू कुर्ते का ड्राफ्ट बनाएं।

आपने क्या सीखा

नेहरू कुर्ता बनाने हेतु

- औज़ार व सामग्री
- ड्राफ्ट ब्लॉक बनाना
- पेपर पैटर्न बनाना
- कपड़े का अनुमान लगाना
- ले–आउट बनाना
- काटना तथा सिलाई

पाठान्त प्रश्न

1. नेहरू कुर्ते पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।
2. बाजू का ड्राफ्ट बनाने के लिए आवश्यक नाप की सूची बनाइए।
3. अनुमान लगाकर बताएं कि 100 से.मी. लम्बा नेहरू कुर्ता बनाने के लिए आपको कितने कपड़े की आवश्यकता होगी।
4. नेहरू कुर्ता सिलने का सही क्रम लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1

1 (iii)

2 (i)

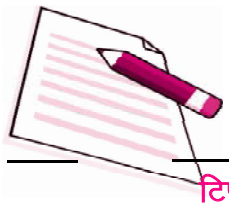

3. (iv)
4. (ii)
5. (v)

6.2

1. संकरी
2. सामने
3. दो लम्बाई
4. पीछे, नीचे
5. पहले

7

वस्त्र निर्माण – ब्लाउज

ब्लाउज साड़ी के साथ पहने जाने वाला परिधान है। यह शरीर के मध्य भाग तक होता है। ब्लाउज़ शरीर के ऊपरी भाग के आकार के अनुरूप बनाया जाता है। इसके आकार व फिटिंग को सुनिश्चित करने के लिए डार्ट्स का प्रयोग किया जाता है। यह आगे व पीछे इच्छानुसार खुला रखा जाता है। ब्लाउज़ बिना बाजू या भिन्न–भिन्न बाजू की लम्बाई लेकर बनाया जाता है। इसके गले भी अलग–अलग प्रकार के होते हैं जैसे कि गोल, चौकोर, V-आकार, U-आकार, गिलास आदि। आइए इस पाठ में ब्लाउज़ के निर्माण हेतु आवश्यक औज़ार, सामग्री के बारे में जानें।

चित्र 7.1 ब्लाउज़

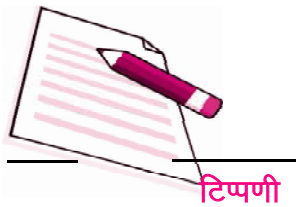

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप :

- ब्लाउज में प्रयोग होने वाले औज़ारों व सामग्री की पहचान कर सूचीबद्ध कर सकेंगे;
- बेसिक बॉडीज़ ब्लॉक तथा कागज़ का प्रतिरूप बना सकेंगे;
- कपड़े का अनुमान लगाकर लेआउट बना सकेंगे; और
- ब्लाउज सिलने के लिए सिलाई कौशल जैसे डार्ट्स, बटन पट्टी, सीम्स आदि में निपुण हो सकेंगे।

7.1 औज़ार व सामग्री

ब्लाउज बनाने के लिए निम्न औज़ार व सामग्री का प्रयोग किया जाता है–

i. स्केल, रबर, पैन्सिल, कागज़
ii. इंचटेप
iii. कैंची
iv. टेलर्स चॉक
v. कार्बन पेपर
vi. ट्रेसिंग व्हील
vii. सुई
viii. रिप्पर व क्लीपर
ix. धागा
x. कपड़ा

7.2 बेसिक ब्लॉक और कागज़ का प्रतिरूप (पेपर पैटर्न) बनाना

I. बेसिक बॉडीज ब्लॉक

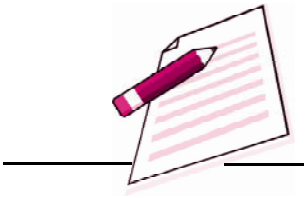

टिप्पणी

बेसिक ब्लॉक बनाने के लिए आवश्यक नाप इस प्रकार से लीजिए–

लम्बाई	–	35 से.मी.
राउण्ड चेस्ट	–	80 से.मी.
राउण्ड वेस्ट	–	66 से.मी.
कंधा	–	17 से.मी.

बेसिक ब्लॉक की ड्राफ्टिंग

सामने का ब्लॉक

i. एक आयत ABCD बनायें AC = BD = लम्बाई = 35 से.मी.

AB = CD = चौड़ाई = 24 से.मी. (¼ राउण्ड चेसट + 4 से.मी. ढील)

ii. बिन्दु A और B से रेखा AC तथा BD पर 16.5 से.मी. (1/8 राउण्ड चेस्ट. 6.5 से.मी.) बिन्दु E और F अंकित करें। बिन्दु EF को सीधी रेखा से जोड़ें।

iii. बिन्दु A से रेखा AE पर 10 से.मी. (1/8 राउण्ड चेस्ट) बिन्दु G अंकित करें।

iv. बिन्दु A से रेखा AB पर 6.6 से.मी. (1/12 राउण्ड चेस्ट) बिन्दु H अंकित करें। बिन्दु G और H को हल्की गोलाई देते हुए जोड़ें (गले के लिए)

v. बिन्दु A से रेखा AB पर 18 से.मी. (कंधा + 1 से.मी.) बिन्दु I अंकित करें।

vi. बिन्दु E से रेखा EF पर 18 से.मी. (कंधा + 1 से.मी.) बिन्दु I' अंकित करें। बिन्दु I और I' को सीधी रेखा से जोड़ें।

vii. बिन्दु I से रेखा II' पर 2 से.मी. बिन्दु J अंकित करें। बिन्दु H तथा J को तिरछी रेखा से जोड़ें (कंधे की रेखा)।

viii. बिन्दु I' से ऊपर की ओर 2.5 से.मी. जाकर बिन्दु K अंकित करें।

ix. बिन्दु J,K, F को गोलाई देते हुए जोड़ें (मुड्ढे के लिए)

x. बिन्दु D से 2 से.मी. अंदर आते हुए बिन्दु L अंकित करें। बिन्दु F और L को तिरछी रेखा से जोड़ें।

xi. बिन्दु C को C' तक 2 से.मी. बढ़ायें। बिन्दु L को L' तक 1.5 से.मी. बढ़ायें।

xii. बिन्दु C' तथा L' को तिरछी रेखा से जोड़ें। बिन्दु H से 23 से.मी. नीचे की ओर आकर बिन्दु M अंकित करें।

टिप्पणी

डाट्र्स के लिए

i. बिन्दु C' से 7.6 से.मी. (1/12 राउण्ड चेस्ट + 1 से.मी.) अंदर की ओर बिन्दु a अंकित करें। बिन्दु a के दोनों तरफ 1.5 से.मी. बिन्दु a_1 तथा a_2 अंकित करें। बिन्दु a से बिन्दु M की ओर ऊपर 10 से.मी. पर बिन्दु a_3 अंकित करें। बिन्दु a_3 को बिन्दु a_1 और a_2 से तिरछी रेखा से जोड़ें (वेस्ट डार्ट)

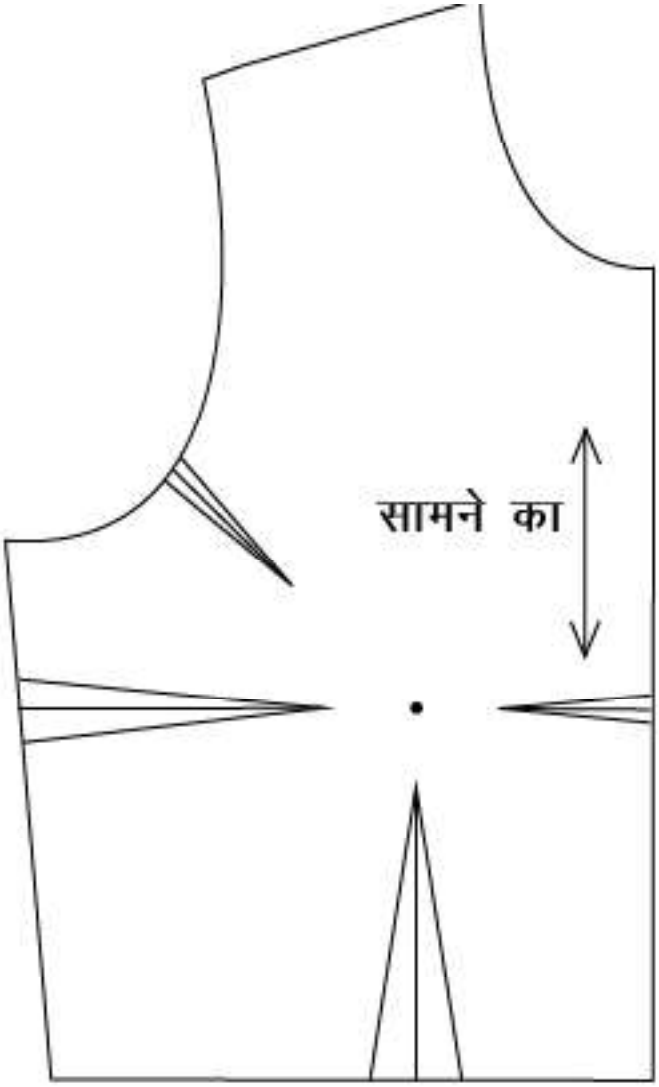

चित्र 7.2: सामने के ब्लॉक की ड्राफ्टिंग

टिप्पणी

ii. बिन्दु F से 5 से.मी. नीचे की ओर बिन्दु b अंकित करें। बिन्दु b के दोनों तरफ 1 से.मी. बिन्दु b_1 तथा b_2 अंकित करें। बिन्दु b से 12 से.मी. रेखा EC की ओर बिन्दु b_3 अंकित करें। बिन्दु b_3 को बिन्दु b_1 और b_2 तिरछी रेखा से जोड़ें (साइड डार्ट)।

iii. बिन्दु E से 5 से.मी. नीचे की ओर बिन्दु C अंकित करें। बिन्दु C के दोनों तरफ 0.5 से.मी. बिन्दु C_1 और बिन्दु C_2 अंकित करें। बिन्दु C से 5 से.मी. रेखा FL की ओर बिन्दु C_3 अंकित करें। बिन्दु C_3 को बिन्दु C_1 और C_2 से तिरछी रेखा से जोड़ें (सेन्टर फ्रन्ट डार्ट)।

iv. बिन्दु K से 2 से.मी. मुड्ढे पर नीचे बिन्दु F की ओर जाते हुए बिन्दु D अंकित करें। बिन्दु d के दोनों तरफ 0.5 से.मी. बिन्दु d_1 और बिन्दु d_2 अंकित करें। बिन्दु d से 5.5 से.मी. बिन्दु M की ओर बिन्दु d_3 अंकित करें। बिन्दु d_3 को बिन्दु d_1 और d_2 तिरछी रेखा से जोड़ें (आर्म डार्ट)।

पीछे का ब्लॉक

i. एक आयत ABCD बनायें AC = BD = लम्बाई = 35 से.मी.

AB = CD = चौड़ाई = 24 से.मी. (¼ राउण्ड चेस्ट + 4 से.मी. ढील)

ii. बिन्दु A और B से रेखा AC तथा BD = 16.5 से.मी. (1/8 राउण्ड चेस्ट + 6.5 से.मी.) बिन्दु E और अंकित करें। बिन्दु EF को सीधी रेखा से जोड़ें।

iii. बिन्दु A से रेखा AE पर 6.5 से.मी. बिन्दु अंकित करें।

iv. बिन्दु A से रेखा AB पर 6.6 से.मी. (½ राउण्ड चेस्ट) बिन्दु H अंकित करें। बिन्दु G और H को हल्की गोलाई देते हुए जोड़ें।

(पीछे के गले के लिए)

v. बिन्दु A से रेखा AB पर 18 से.मी. (कंधा +1 से.मी.) बिन्दु I अंकित करें।

vi. बिन्दु E से रेखा EF पर 18 से.मी. (कंधा + 1 से.मी.) बिन्दु I' अंकित करें। बिन्दु I और I' को सीधी रेखा से जोड़ें।

vii. बिन्दु I से रेखा II' पर 2 से.मी. बिन्दु J अंकित करें। बिन्दु H तथा J को तिरछी रेखा से जोड़ें (कंधे की रेखा)।

viii. बिन्दु J से रेखा JI' के मध्य भाग पर बिन्दु K अंकित करें। बिन्दु K को गोलाई देते हुए बिन्दु F से जोड़ें। JKF आपका पीछे का मुड्ढा है।

टिप्पणी

डार्ट के लिए

i) बिन्दु C से 7.6 से.मी. (½ राउण्ड चेस्ट +1 से.मी.) अंदर की ओर बिन्दु a अंकित करें। बिन्दु a के दोनों तरफ 1 से.मी. बिन्दु a_1 तथा a_2 अंकित करें। बिन्दु a से ऊपर रेखा EF की ओर 8 से.मी. पर बिन्दु a_3 अंकित करें। बिन्दु a_3 को बिन्दु a_1 और a_2 तिरछी रेखा से जोड़ें।

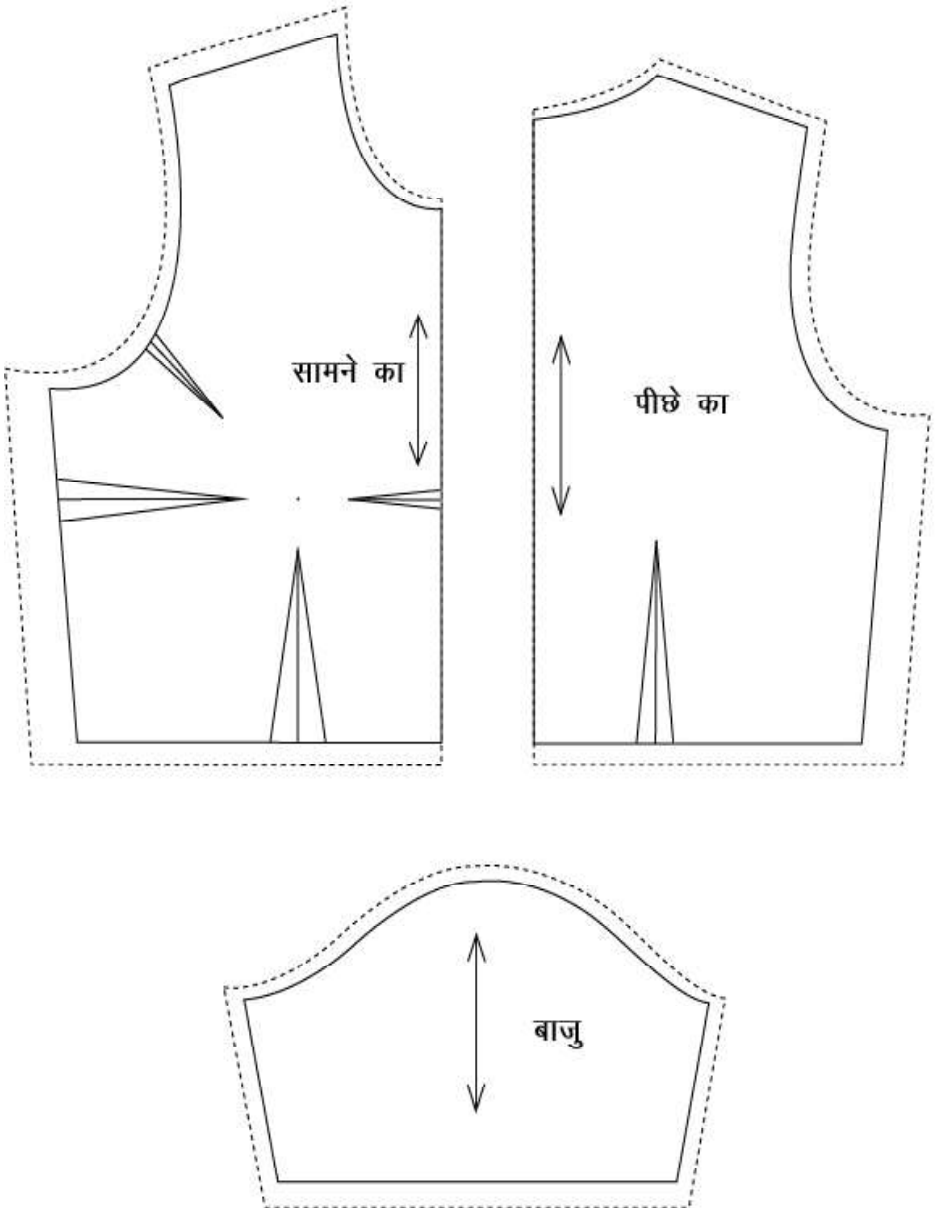

चित्र 7.3: पीछे के ब्लॉक की ड्राफ्टिंग

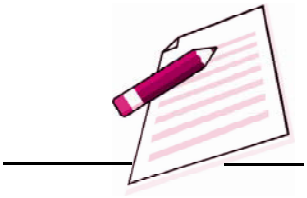

टिप्पणी

बाजू का ब्लॉक

आवश्यक नाप

बाजू की लम्बाई	–	25 से.मी.
बाजू की गोलाई (ऊपरी हिस्सा)	–	35 से.मी.
बाजू की गोलाई (नीचे का हिस्सा)	–	25 से.मी.

बाजू ब्लॉक की ड्राफ्टिंग

i. कागज़ का एक आयात लें।

लम्बाई – 25 से.मी.

चौड़ाई – 35 से.मी.

ii. चौड़ाई को बीच से मोड़ें तथा चारो कोनों को नाम दें।

AB = CD = चौड़ाई (17.5 से.मी.)

AC = BD = लम्बाई (25 से.मी.)

iii. बिन्दु B से रेखा BD पर 21.5 से.मी. (¼ राउण्ड चेस्ट + 1.5 से.मी.) बिन्दु E अंकित करें। AE को तिरछी रेखा से जोड़ें।

iv. रेखा AE को चार बराबर भाग में बांटे तथा 1,2,3 अंकित करें।

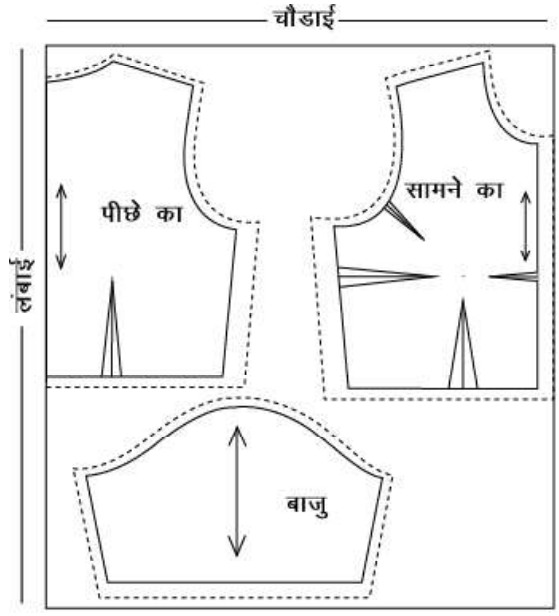

चित्र 7.4: बाजू की ड्राफ्टिंग

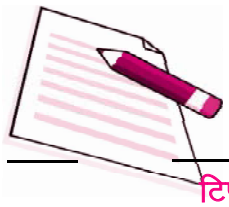
टिप्पणी

v. बिन्दु 1 पर 1 से.मी. ऊपर रेखा AB की ओर, बिन्दु a अंकित करें।

vi. बिन्दु 2 पर 1.5 से.मी. ऊपर रेखा AB की ओर, बिन्दु b अंकित करें।

vii. बिन्दु 3 पर 1 से.मी. नीचे रेखा CD की ओर, बिन्दु c अंकित करें।

viii. बिन्दु AabE को गोलाई दे कर जोड़ें (पीछे का मुड्ढा)।

ix) बिन्दु Aa2CE को गोलाई दे कर जोड़ें (आगे का मुड्ढा)।

x) बिन्दु C से रेखा CD पर 12.5 से.मी. (½ नीचे बाजू की गोलाई) बिन्दु F अंकित करें। बिन्दु E को F से तिरछी रेखा से जोड़ें।

I. कागज़ का प्रतिरूप (पेपर पैर्टन)

कागज़ का प्रतिरूप बनाने के लिए निम्न अनुसार सीम अलाउन्स लीजिए–

गला	–	1 से.मी.
कंधा	–	1 से.मी.
बाजू का कैप भाग	–	1 से.मी.
साइड सीम (ब्लाउज)	–	2.5 से.मी.
साइड सीम (बाजू)	–	2.5 से.मी.
कमर (वेस्ट) लाइन	–	2.5 से.मी.
बाजू मोहरी	–	2 से.मी.

7.3 कपड़े का अनुमान

अन्य किसी वस्त्र के निर्माण के समान ही ब्लाउज़ बनाते समय भी कपड़े की मात्रा का अनुमान लगाना आवश्यक है। आइए इसका एक अनुभान देखें–

लम्बाई – 2 × ब्लाउज़ लम्बाई + बाजू की लम्बाई + सीम अलाउन्स।

– 35 से.मी. × 2 = 70 से.मी. + 20 से.मी. + 10 से.मी.

= 70 + 20 + 10 = 100 से.मी.

चौड़ाई – 90 से.मी.

टिप्पणी

7.4 ले–आउट

i. कपड़े को चौड़ाई में मोड लें।

ii. सबसे पहले ब्लाउज के भाग को कपड़े के मोड़ से सटा कर रखें।

iii. इसके नीचे ब्लाउज़ के पीछे के भाग को रखें।

iv. इसके नीचे बाजू का पैटर्न रखें। ध्यान दे की बाजू का पैटर्न के मोड वाला हिस्सा कपड़े के मोड पर आए।

v. कार्बन पेपर पैटर्न के नीचे रख कर ट्रेस कर लें।

vi. बाकी बचे कपड़े से गले के लिए औरेब पट्टी काट लें।

7.6 कटाई, सिलाई व फिनिशिंग

कपड़े के भाग

- पीछे का एक हिस्सा
- सामने के 2 भाग
- बाजू के 2 भाग
- गले के लिए रेव की पट्टी

कटाई

i. कटाई लाइन के साथ–साथ तेज़ धार वाली कैंची से सभी भाग काटें।

सिलाई व फिनीशिंग

ii. अंकित सभी डाट्र्स की सिलाई करें।

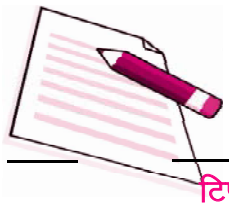

टिप्पणी

iii. सामने के भाग की बटन पट्टी फिनिशिंग करें।

iv. आगे व पीछे के भाग को कंधे की सिलाई से जोड़ें।

v. गले को रेव की पट्टी से फिनिश करें।

vi. आगे व पीछे के भाग को साइड सिलाई द्वारा जोड़ें।

vii. दोनों बाजुओं की साइड सिलाई करें।

viii. दोनों बाजुओं को मुड़्ढे पर जोड़ें।

ix. बाजू के सिरे को मोड़ कर तुरपाई करें।

x. नीचे के सिरे को मोड़ कर तुरपन करें।

xi. गले पर लगी रेव पट्टी को मोड़ कर तुरपन करें।

xii. बटन पट्टी में हुक टाँकें व आई बनाएं।

7.7 सावधानियाँ

i. सभी डाट्र्स की लम्बाई, चौड़ाई व स्थान एकदम सही होना चाहिए। इसमें ज़रा सी भी चूक होने पर ब्लाउज की फिटिंग खराब हो सकती है।

ii. गले की पट्टी को सफाई से मोड़ कर एक समान चौड़ाई रखते हुए तुरपन करें।

iii. पैटर्न को कपड़े पर ग्रेनलाइन से मैच करते हुए रखें।

iv. कपड़े को सफाई से काटें, विशेषतौर पर गोलाई वाले भाग जैसे गला, बाजू का कैप आदि।

v. बटन पट्टी के हुक सफाई व मज़बूती से इस तरह टॉकें कि सिलाई सामने की ओर न दिखाई दे।

vi. आई, हुक के आकार व स्थान से मिलान करते हए बनाएं।

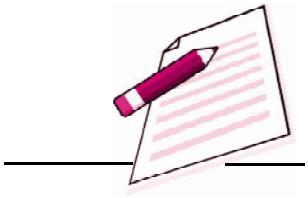

टिप्पणी

vii. ब्लाउज़ के नीचे के भाग को सही मोड़कर एक समान चौड़ाई रखते हुए तुरपन करें।

पाठगत प्रश्न 7.1

नीचे दिए कथनों के सामने सही (✓)या गलत (×) चिन्ह लगाएं–

1. ब्लाउज शरीर के निचले भाग में पहने जाने वाला परिधान है।
2. ब्लाउज को सही शारीरिक आकार देने के लिए डाट्र्स का प्रयोग किया जाता है।
3. ब्लाउज का राउण्ड चेस्ट व राउण्ड वेस्ट एक समान होता है।
4. डाट्र्स की लम्बाई, चौड़ाई व स्थान एकदम सही होना चाहिए।
5. गले को फिनिश करने के लिए आड़े कपड़े को पट्टी का प्रयोग करें।

क्रियाकलाप 7.1

अपने शरीर या परिवार के किसी सदस्य का आवश्यक नाप लेकर ब्लाउज का ड्राफ्ट बनाएं।

आपने क्या सीखा

ब्लाउज बनाने हेतु :

- औज़ार व सामग्री
- ड्राफ्ट ब्लॉक बनाना
- कागज़ का प्रतिरूप (पेपर पैटर्न) बनाना
- कपड़े का अनुमान लगाना
- ले आउट बनाना
- काटना व सिलना

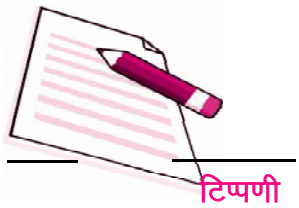

पाठान्त प्रश्न

1. ब्लाउज़ की तीन विशेषताएं लिखिए।
2. ब्लाउज़ बनाने के लिए कौन–कौन से नाप लेने आवश्यक होते हैं? सूची बनाइए।
3. निम्न स्थानों के लिए उचित सीम अलाउन्स बताएं–
   i. कंधा
   ii. साइड सीम
   iii. बाजू की मोहरी पर
   iv. गले पर
   v. बाजू की साइड सीम
4. ब्लाउज बनाते समय ली जाने वाली चार सावधानियां लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1

i. गलत

ii. सही

iii. गलत

iv. सही

v. गलत

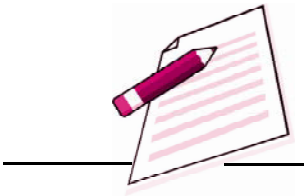

टिप्पणी

8

फिटिंग के दोषों का निवारण

अच्छी फिटिंग वाले वस्त्र सभी को सुंदर व आकर्षक बनाते हैं। उचित फिटिंग के वस्त्र हमारे शारीरिक आकार के विशिष्ट बिन्दुओं को उभारने के साथ ही हमारे व्यक्तित्व के विकास में भी सहायक हैं। अतः वस्त्रों के निर्माण में फिटिंग के दोषों की जानकारी व उनके निवारण संबंधी विधियों का ज्ञान होना अति आवश्यक है। जिससे छोटे–छोटे दोषों का निवारण हम स्वयं ही कर लें तथा वस्त्रों को आकर्षक बना सकें। प्रस्तुत पाठ में आप सिले वस्त्रों में होने वाले आम दोषों तथा उनके निवारण की सही विधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को बढ़ने के पश्चात् आप –

- वस्त्र की फिटिंग की जांच कर सकेंगे;
- फिटिंग के दोष जान सकेंगे;
- सिले वस्त्रों में होने वाले दोषों की पहचान कर सकेंगे;
- दोषों के कारणों की सूची बना सकेंगे; और
- इन त्रुटियों का उचित विधि द्वारा निवारण कर सकेंगे।

8.1 फिटिंग – शरीर के आकार के अनुरूप बना सही वस्त्र

शरीर के आकार के अनुरूप और शरीर पर आकर्षक लगने वाले किसी भी वस्त्र को अच्छी 'फिटिंग' वाला वस्त्र कहा जाता है। अच्छी फिटिंग के लिए आवश्यक है कि वस्त्र की अंतिम फिनीशिंग (परिसज्जा) से पहले फिटिंग के दोषों को पहचान कर उनका सही विधि द्वारा निवारण किया जाए। एक खराब फिटिंग वाला वस्त्र पहनने पर भद्दा लगता है तथा आत्मविश्वास को कम करता है। फिटिंग में दोषों के कई कारण हो सकते हैं।

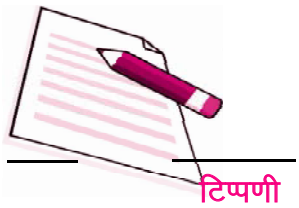

इसी कारण से अंतिम सिलाई से पूर्व वस्त्र को जाँच लेना चाहिए। जाँच के दौरान फिटिंग के दोष पहचान कर नोट किये जाते हैं। अंतिम सिलाई से पूर्व इन सभी दोषों का उचित विधि द्वारा निवारण किया जाए। क्योंकि बार–बार सिलाई उधेड कर दोषों को ठीक करने से वस्त्र खराब हो जाता है तथा धन व समय की भी हानि होती है।

फिटिंग देना

जैसाकि ऊपर बताया गया है कि कपड़े को पहनकर (ट्रायल) जांचते समय फिटिंग में कोई भी दोष हो तो उसे अंकित कर लेना चाहिए। बाद में इन दोषों का सही विधि द्वारा निवारण करना चाहिए किन्तु इन दोषों के कारणों को समझना अति आवश्यक है जिससे भविष्य में इनसे बचा जा सके। वस्त्र निर्माण करने वाला व्यक्ति सही फिटिंग देना अपने अनुभवों से सीखता है। अतः कहा भी गया है कि एक दर्जी जितना अनुभवी होगा, फिटिंग के दोष उतने ही कम होंगे।

8.2 फिटिंग में आने वाले दोष

फिटिंग का कपड़ा पहनकर स्वयं भी अनुकूल लगता है और व्यक्तित्व भी प्रभावशाली बन जाता है। जब फिटिंग ढीली, कसी या झोलदार हो तो बड़ा अटपटा सा लगता है। कई बार फिटिंग अच्छी होती है मगर सीधा खड़े रह कर अगर चलते, बैठते, हाथ ऊपर उठाते या कार्यकलाप करते हुए फिटिंग कसी लगती है तो कार्य में व्यवधान आता है।

चलिये देखते हैं कि फिटिंग के दोष क्या–क्या हो सकते हैं–

i. आगे या पीछे लटकते कंधे

ii. बड़ा, ढीला या घुटी सी गले की काट

iii. ढीली या कसी हुई बाँह, बगल या मुड्ढा

iv. सीने पर कुर्ते या ब्लाउज़ में झोल या चुन्नटें

v. बगल या कमर या पेट से कसा हुआ जिससे बटन बंद नहीं होते

vi. कफ, पॉयचा (मोहरी) अधिक कसा या ढीला

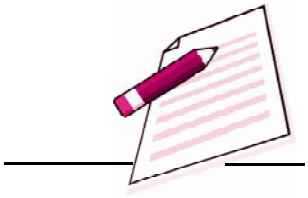

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 8.1

रिक्त स्थान भरिए–

1) अंतिम सिलाई से पूर्व वस्त्र को ..... किया जाता है।

2) गोलाइयों की ..... कटिंग के कारण फिटिंग दोष हो सकता है।

3) ..... निशान के कारण भी वस्त्र में फिटिंग दोष उत्पन्न हो सकता है।

4) ..... सिकोड़े हुए वस्त्रों में फिटिंग दोष आ जाता है।

5) ..... ग्रेन लाइन पर कपड़ा काटने से वस्त्र की फिटिंग खराब हो जाती है।

6) फिटिंग अनुकूल हो तो व्यक्तित्व ..... लगता है।

7) .... गले की काट।

8) यदि कुर्ता बगल से ..... हो तो ..... नहीं होते।

8.3 फिटिंग में दोष आने के कारण

फिटिंग संबंधी दोष सामान्यतः निम्नलिखित कारणों से होते हैं–

i. **खराब कटिंग** – यदि कपड़ा काटते समय समुचित ध्यान न दिया जाए तो वस्त्र में फिटिंग संबंधी दोष आ सकते हैं। यदि लेआउट को ध्यान से न देखा जाए या गोलाइयों को ठीक से न काटा जाए तो फिटिंग खराब हो सकती है। अनुभव द्वारा सही कटिंग में मदद मिलती है। हमें काटने से पूर्व कपड़े को ध्यानपूर्वक देखना चाहिए जिससे काफी दोषों से बचाव करना संभव है।

ii. **खराब सिलाई** – यदि कोई वस्त्र अच्छी तरह से काटा गया है किन्तु उसकी सिलाई ठीक प्रकार से नहीं की गई है तो भी उसकी फिटिंग खराब आयेगी। अतः वस्त्र में इन दोषों से बचने के लिए सिलते समय सावधान रहने की ज़रूरत है।

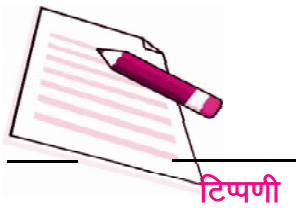

iii. **गलत निशान लगाना** – कई बार ऐसा होता है कि कपड़े के किसी एक दोष को दूर करने के लिए हम उस पर गलत ढंग से निशान लगा देते हैं। इस प्रयास से कोई दूसरा दोष उत्पन्न हो जाता है। अतः निशान लगाते समय सावधानी रखना आवश्यक है।

iv. **गलत ले आउट काटना** – यदि कपड़े का लेआउट सही नहीं है या कपड़े को बिना सीम अलाउन्स, मोड़ या गलत ग्रेन पर कट लगा कर काटा जाता है तो वस्त्र का दोषपूर्ण होना निश्चित है।

v. **पहनने वाले की प्राथमिकता** – कभी–कभी वस्त्र को अच्छे से तैयार करने के बावजूद पहनने वाले को उसकी फिटिंग पसंद नहीं आती है। हर व्यक्ति की पसंद अलग होती है और यह सिलने से पहले ही स्पष्ट कर दी जानी चाहिए जिससे तैयार वस्त्र व्यक्ति के अनुरूप बन सके।

vi. **कपड़ा का प्रकार**– कुछ कपड़े शरीर के आकार में आसानी से ढल जाते हैं और कुछ फूल जाते हैं जैसे साटिन शरीर से चिपका सा लगता है और आरगन्डी फूली लगती है। आवश्यकता अनुसार कपड़े का चुनाव करें। यदि दो फ्राकों में से एक सूती कपड़े द्वारा बनायी जाए व दूसरी फ्राक साटिन के द्वारा। एक ही नाप के होने के बावजूद सूती फ्रॉक की फिटिंग सही आयेगी जबकि साटिन की फ्राक लम्बी हो जायेगी। साटिन के कपड़े के भारी होने के कारण वह लटक जाता है और लम्बा लगता है। इसलिए वस्त्र सिलते समय कपड़ों के विशिष्ट गुणों की जानकारी होना आवश्यक है। जानकारी होने पर वस्त्र की लम्बाई नाप से थोड़ी कम रखी जा सकती है जिससे बनने के बाद वस्त्र सही फिटिंग का लगे।

vii. **कम गुणवत्ता वाली सजावटी सामग्री**– वस्त्र सिलते समय हमें हमेशा अच्छी गुणवत्ता वाली सजावटी सामग्री का ही प्रयोग करना चाहिए। खराब गुणवत्ता वाली सजावटी सामग्री के प्रयोग से वस्त्र की फिटिंग दोषपूर्ण हो जाती है। जैसे – बटन, हुक, इलास्टिक आदि सामग्री।

viii. **एक ही कपड़े में बार–बार दोष निवारण करना** – कुछ व्यक्ति अपने कपड़ों की फिटिंग को ले कर कुछ ज़्यादा ही मीनमेख निकालते हैं। सही फिटिंग वाले वस्त्र में भी वो कोई ना कोई दोष निकाल ही देते हैं। उस दोष का निवारण करने में ये भी हो सकता है कि वस्त्र में कोई अन्य दोष आ जाए।

ix. **खराब कारीगरी** – खराब सिलाई या कार्य करने से एक अच्छे डिजाइन का वस्त्र भी दोषपूर्ण हो सकता है। जैसे टेढ़ी मेढ़ी सिलाई वस्त्र निर्माण करने

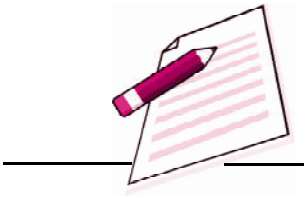

टिप्पणी

वाले व्यक्ति का प्रशिक्षित होना आवश्यक है तभी वही सही फिटिंग वाला वस्त्र बनाने में सक्षम होगा।

x. **पहले से न संकोड़ा (Shinkage) हुआ वस्त्र** – यदि कपड़े को काटने से पहले भिगोया या सिकोड़ा न गया हो तो वस्त्र तैयार होने के बाद धोने से यह सिकुड़ जाता है। सिकुड़ने से वस्त्र की फिटिंग भी दोषपूर्ण हो जाती है। सूती वस्त्रों को काटने से पहले सिकोड़ना अति आवश्यक है।

xi. **शारीरिक वृद्धि के लिए गुंजाइश न छोड़ना** – बढ़ने वाले बच्चों के वस्त्र बनाते समय वस्त्र के अंदर पर्याप्त गुंजाइश (अलाउन्स) छोड़नी आवश्यक होती है, ताकि आवश्यकता पड़ने पर वस्त्र के आकार को बढ़ाया जा सके अन्यथा वस्त्र छोटे हो सकते हैं। मोटा हो जाने पर भी वस्त्र छोटे हो जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 8.2

1) निम्नलिखित कथनों के सामने सही (✓) या गलत (×) लिखिए–

   i. कम गुणवत्ता वाले इसलास्टिक के प्रयोग से वस्त्र में फिटिंग संबंधी दोष आ सकता है।

   ii. वयस्कों के वस्त्रों में वृद्धि के लिए गुंजाइश छोड़ना अनिवार्य है।

   iii. खराब कारीगरी के कारण भी वस्त्र की फिटिंग दोषपूर्ण हो सकती है।

   iv. वस्त्र सिलते समय कपड़े के विशिष्ट गुणों की जानकारी आवश्यक नहीं है।

8.4 फिटिंग संबंधी समस्याओं का समाधान

प्रत्येक सिले हुए वस्त्र को गुंजाइश (अलाउन्स), आराम, आड़ा–सीधा, सेट तथा संतुलन की दृष्टि से जांचा जाना चाहिए–

- यदि वस्त्र में चुन्नटें या तिरछे मोड़ आ रहे हों तो शरीर के भारी हिस्सों पर सिलाई थोड़ी ढ़ीली और दोहरी करें।
- साइड सीम के अलाउन्स का प्रयोग करके छाती को भरा हुआ या दुबला दर्शाया जा सकता है।

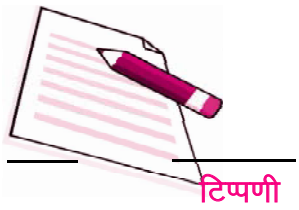

- वस्त्र की अच्छी फिटिंग के लिए पीछे, कंधे की सिलाई व मुड्ढों पर प्रस्तावित सीम अलाउन्स 2.0 से.मी. से 2.5 से.मी. अवश्य रखें।
- अच्छी फिटिंग के लिए मुड़ढे को सिलते समय सही ढंग से पिन लगाएं, निशान लगाएं व ठीक से सिलाई करें।
- कपड़े के भराव को समान रूप से वस्त्र में बिना किसी चुन्नट, प्लीट या असमान्यता के फैलाना चाहिए। फेसिंग व घेरे को एक सार फिनिशिंग देनी चाहिए।
- सिलाई में सफाई के लिए हर क्रम में इस्त्री (प्रैस) अवश्य करें।
- कपड़ों को अधिक कसा हुआ न बनाएं अन्यथा शरीर की कमियां और अधिक उभर कर सामने आयेंगी।

8.5 घर में किए जाने वाले कुछ सामान्य दोष निवारण

- सलवार, पाजामी, ब्लाउज, कुर्त्ते व नाइटी की कमर को फिटिंग के अनुरूप दोबारा फिट करना।
- सलवार व पाजामी की मोहरी को सीधा/कम/ज़्यादा करना।
- घेरे को यथावत रखते हुए फ्राक, कुर्ते, नाइटी को छोटा करना।
- घेरे व बाजू को छोटा या बड़ा करना।
- घेरे, सिलाई तथा वस्त्र के फटे हुए भाग को सुधारना/पुनः ठीक करना।
- बटन, हुक, आई, स्नैप्स या इलास्टिक – बदलना या दुबारा लगाना।
- काज़ – बनाना या ठीक करना।

पाठगत प्रश्न 8.3

सही मिलान कीजिए।

1) **स्तम्भ 'क'**

i. प्रस्तावित सीम अलाउन्स 2.0 से.मी. से 2.5 से.मी.

ii. सिलाई में सफाई

स्तम्भ 'ख'

1. वस्त्र निर्माण के हर क्रम में इस्त्री
2. शरीर के भारी हिस्सों पर दोहरी ढीली सिलाई

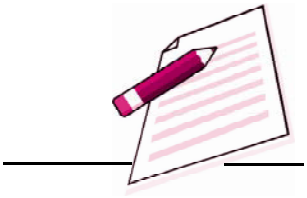

टिप्पणी

iii. वस्त्र में चुन्नटें या तिरछे मोड़

3. साइड सीम के अलाउन्स का प्रयोग

iv. छाती को भरा/दुबला दर्शाना

4. कंधे की सिलाई मुड्ढों पर

क्रियाकलाप 8.1

घर के सदस्यों के किन्हीं दो वस्त्रों की फिटिंग की जांच करिए तथा फिटिंग संबंधी दोषों की पहचान करिए। इन दोषों के कारणों की सूची बनाइए व समाधान की सही विधि पुस्तिका में लिखिए।

आपने क्या सीखा

- वस्त्र की फिटिंग की जांच
- फिटिंग देना
- फिटिंग में आने वाले दोष
- फिटिंग में दोष आने के कारण
  - खराब कटिंग
  - खराब सिलाई
  - गलत निशान लगाना
  - गलत लेआउट काटना
  - पहनने वाले की प्राथमिकता
  - कपड़ा
  - कम गुणवत्ता वाली सजावटी सामग्री
  - तुनक मिजाज़ पहनने वाला
  - पहले से न सिकोड़ा हुआ वस्त्र
  - वृद्धि के लिए गुंजाइश न छोड़ना
- फिटिंग संबंधी समस्याओं का समाधान
- घर में किए जाने वाले कुछ सामान्य दोष निवारण

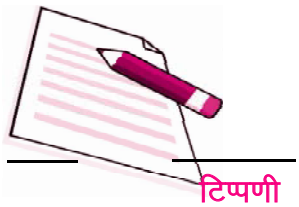

पाठान्त प्रश्न

1. फिटिंग की जांच करना क्यों आवश्यक है?
2. फिटिंग में दोष के कारणों का वर्णन कीजिए।
3. फिटिंग संबंधी समस्याओं के समाधान के बारे में लिखिए।
4. घर में किए जाने वाले कुछ सामान्य दोष निवारणों की सूची तैयार कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1

i. ट्राई
ii. खराब
iii. गलत
iv. पहले से न
v. गलत
vi. प्रभाव शाली
vii. ढीली या घुटी सी
viii. कसा, बटन बंद

8.2

i. सही
ii. सही
iii. सही
iv. गलत

8.3

i. 4)
ii. 1)
iii. 2)
iv. 3)

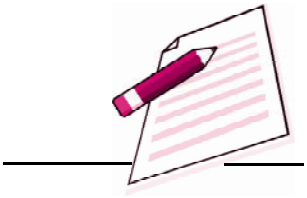

टिप्पणी

9

रखरखाव व परिसज्जा

पिछले पाठों में हमने वस्त्र निर्माण के बारे में बहुत जानकारी प्राप्त की। अब हमें तैयार वस्त्रों का निरीक्षण कर उन्हें गुणवत्ता प्रदान करनी है। इसे प्रस्तुत करने योग्य बनाने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है। कपड़े की सिलाई के समय उस पर विभिन्न प्रकार के दाग–धब्बे लग सकते हैं। जैसे कि मशीन के तेल का दाग, धूल–मिट्टी का निशान आदि। इन धब्बों को निकालने के लिए विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जा सकता है। इसके साथ ही तैयार वस्त्रों की इस्त्री व तह लगाने का सही तरीका भी जानना महत्वपूर्ण है। साथ ही तह किए गए वस्त्रों के भंडारण के लिए उचित रख–रखाव की विधि जानना भी बहुत जरूरी है। प्रस्तुत पाठ में हम निर्मित वस्त्रों के रख–रखाव व परिसज्जा के बारे में चर्चा करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप :

- निर्मित वस्त्रों का निरीक्षण कर आवश्यक बिंदुओं की जाँच कर पाएंगे;
- वस्त्रों पर लगे दाग–धब्बों को पहचान कर विधिपूर्वक हटा सकेंगे;
- तैयार वस्त्रों को सही विधि द्वारा धो कर सुखा सकेंगे;
- तैयार वस्त्रों की उचित तापमान पर इस्त्री कर सकेंगे;
- निर्मित वस्त्रों को सही विधि द्वारा तह कर पैक कर सकेंगे; और
- तैयार वस्त्रों का सही रख–रखाव कर उचित भंडारण कर सकेंगे।

9.1 निर्मित वस्त्रों का निरीक्षण

निर्मित वस्त्रों का निरीक्षण एक आवश्यक प्रक्रिया है।

निरीक्षण के निम्न प्रमुख बिन्दु हैं–

- सिलाई के अनावश्यक धागे
- दाग–धब्बे

टिप्पणी

- सिलवटें

I. सिलाई के अनावश्यक धागे

सिलाई के शुरू व अंत में आमतौर पर लंबे धागे छोड़े जाते हैं जोकि अनावश्यक होते हैं। सिलाई के अनावश्यक धागों को एक छोटी तेज धार वाली नुकीली कैंची से काटिए।

II. दाग–धब्बे

गंदगी के अतिरिक्त कपड़े पर कोई भी निशान दाग या धब्बा हो सकता है उदाहरण के लिए मशीन के तेल का निशान या काम करते हुए चाय/काफी या सब्जी के दाग। यदि इनको कपड़े पर लंबे समय तक लगा रहने देंगे तो ये वस्त्रों को भद्दा बना देते हैं।

क. **दाग पहचानना :** दाग–धब्बों को रंग, गंध व स्पर्श के आधार पर पहचान कर उन्हें उचित विधि द्वारा हटाया जाता है।

ख. दाग हटाने के तरीके :

i. ताज़े दाग जल्दी हट जाते हैं अतः दाग तुरन्त हटाएं।

ii. धब्बे के ऊपर गीला कपड़ा रगड़ कर भी दाग हटा सकते हैं। इसे स्पांजिंग कहते हैं।

iii. कई बार कपड़े को भिगो कर भी दाग हटाया जाता है। यह विधि भिगोना कहलाती है।

iv. दाग के अनुसार सही रासायनिक पदार्थ का प्रयोग करके दाग हटाएं।

चित्र 9.1: दाग धब्बे हटाना

चित्र 9.2: भिगोना

चित्र 9.3: स्पांजिंग

ग. **दाग छुड़ाते समय सावधानियां**

i. जहाँ तक संभव हो दाग को पहचान कर तुरंत छुड़ाएं।

ii. अज्ञात धब्बों को पहले दाग छुड़ाने की सरलतम विधियों से प्रारम्भ करें और उसके पश्चात् ही जटिल विधि को अपनाएं क्योंकि खून और अंडे के धब्बे को गर्म पानी पक्का बना देता है और फिर उन्हें छुड़ाने में कठिनाई होती है।

iii. धब्बे छुड़ाने के लिए प्रयुक्त रसायन को पहले कपड़े के छोटे से हिस्से पर लगा कर परीक्षण कर लें। इसलिए हमेशा मृदु रसायनों के प्रयोग की सलाह दी जाती है।

iv. धब्बे छुड़ाने के बाद सभी प्रकार के वस्त्रों को साबुन व पानी से अवश्य खंगालें ताकि रसायनों के अंश वस्त्रों से पूरी तरह निकल जाएं।

v. कपड़ों को धूप में सुखाएं, क्योंकि सूर्य का प्रकाश प्राकृतिक विरजंक का कार्य करता है।

पाठगत प्रश्न 9.1

निम्नलिखित कथनों के सामने सही (✓) या गलत (×)लिखिए–

1. दाग–धब्बों को रंग, गंध व स्पर्श के आधार पर पहचाना जाता है।
2. धब्बों को हमेशा पहले गरम पानी से धोइए।

टिप्पणी

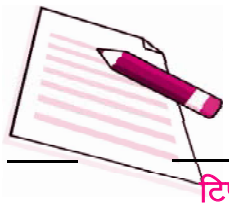

3. सूर्य का प्रकाश प्राकृतिक विरंजक का कार्य करता है।
4. धब्बे के ऊपर गीला कपड़ा रगड़ कर दाग छुड़ाने को भिगोना कहते हैं।
5. सिलाई के शुरू व अंत में आमतौर पर लंबे धागे छोड़े जाते हैं जोकि आवश्यक होते हैं।

9.2 कपड़ों की धुलाई

अतिरिक्त धागों की कटाई व दाग–धब्बों को छुड़ाने के बाद सिले वस्त्रों की धुलाई एक महत्वपूर्ण क्रिया है। कपड़ों की धुलाई के समय कुछ महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है–

- सौम्य डिटर्जेंट का प्रयोग करिए।
- कपड़ों को ठंडे पानी से धोइए।
- वस्त्रों को बहुत ज़्यादा न तो रगड़ें और न ही निचोड़ें।
- वस्त्रों को अच्छी तरह से खंगालिए और सुनिश्चित करिए कि साबुन का कोई अंश तो शेष नहीं है।
- शनील, सिल्क आदि संवेदनशील कपड़ों से बने वस्त्रों को ड्राइक्लीन करवाएं। इनको लंबे समय तक गीला न रखें।
- अगर धागे या कपड़े का रंग निकलता हो तो उसे तब तक खंगालिए जब तक पानी में रंग दिखाई दे।
- कलफ को कपड़े के अनुरूप लगाएं।

9.3 कपड़ों को सुखाना

कपड़ों को अच्छे से धोने के बाद उन्हें सुखाया जाता है। हम सुखाने को एक सामान्य प्रक्रिया मान लेते हैं। परन्तु इस दौरान भी कुछ महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है–

- हमेशा वस्त्र को फैला कर सुखाएं।
- वस्त्र को हमेशा छाया में उल्टा कर के सुखाएं।
- अगर किसी हिस्से में सिकुड़न दिखे तो उसे खींच कर सुखाएं। आवश्यक हो तो आकार को स्थिर रखने के लिए पिन का उपयोग करें।

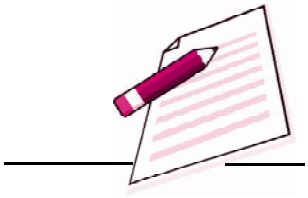

टिप्पणी

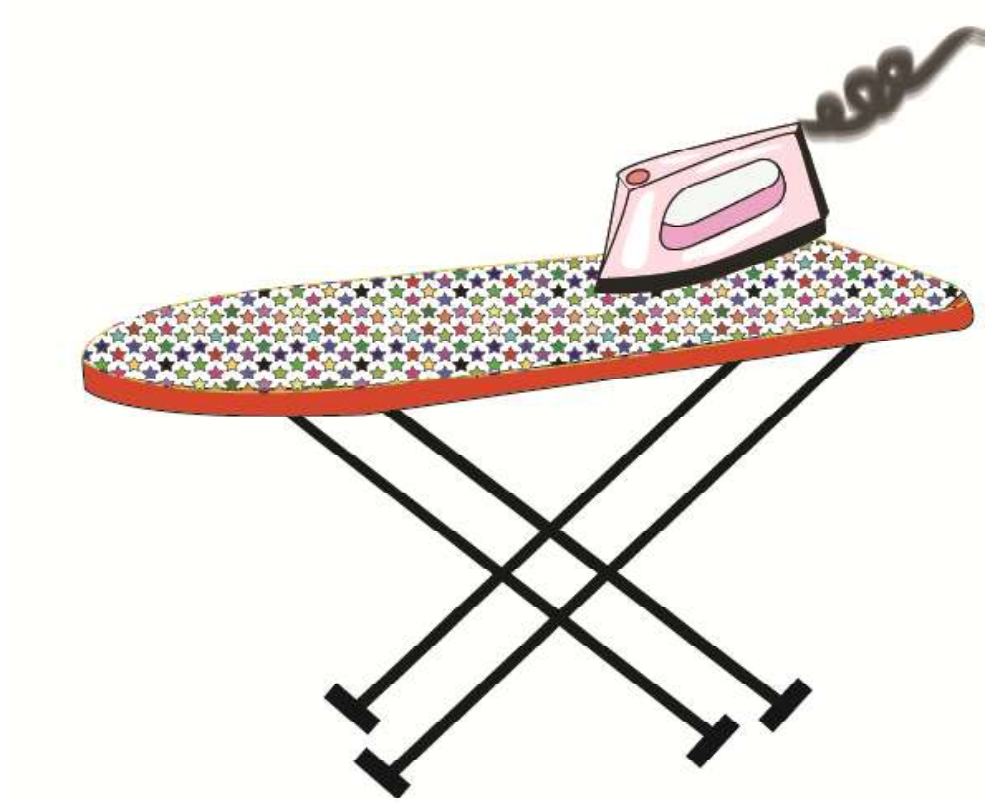

चित्र 9.4: इस्त्री करना

9.4 इस्त्री (प्रेस) करना

इस्त्री करने पर किसी कपड़े की सुन्दरता और बढ़ जाती है। इससे कपड़े ज़्यादा व्यवस्थित और सलीके में दिखते हैं। तैयार वस्त्रों की इस्त्री करते समय निम्न बातों का ध्यान रखें–

- कुछ कपड़ों को सिलाई से पूर्व प्रत्येक टुकड़े को अलग–अलग प्रेस करना चाहिए जिससे तैयार वस्त्र की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके।
- बहुत गरम इस्त्री का प्रयोग न करें। इस्त्री का तापमान कपड़े के अनुरूप रखें।
- इस्त्री वस्त्र के पूरी तरह से सूखने से पूर्व करनी चाहिए।
- अधिक परिसज्जित वस्त्रों को हमेशा उल्टी तरफ से ही इस्त्री करें।
- इस्त्री करने से सिलाई बैठ जाती है तथा वस्त्र भी सुंदर दिखता है।

टिप्पणी

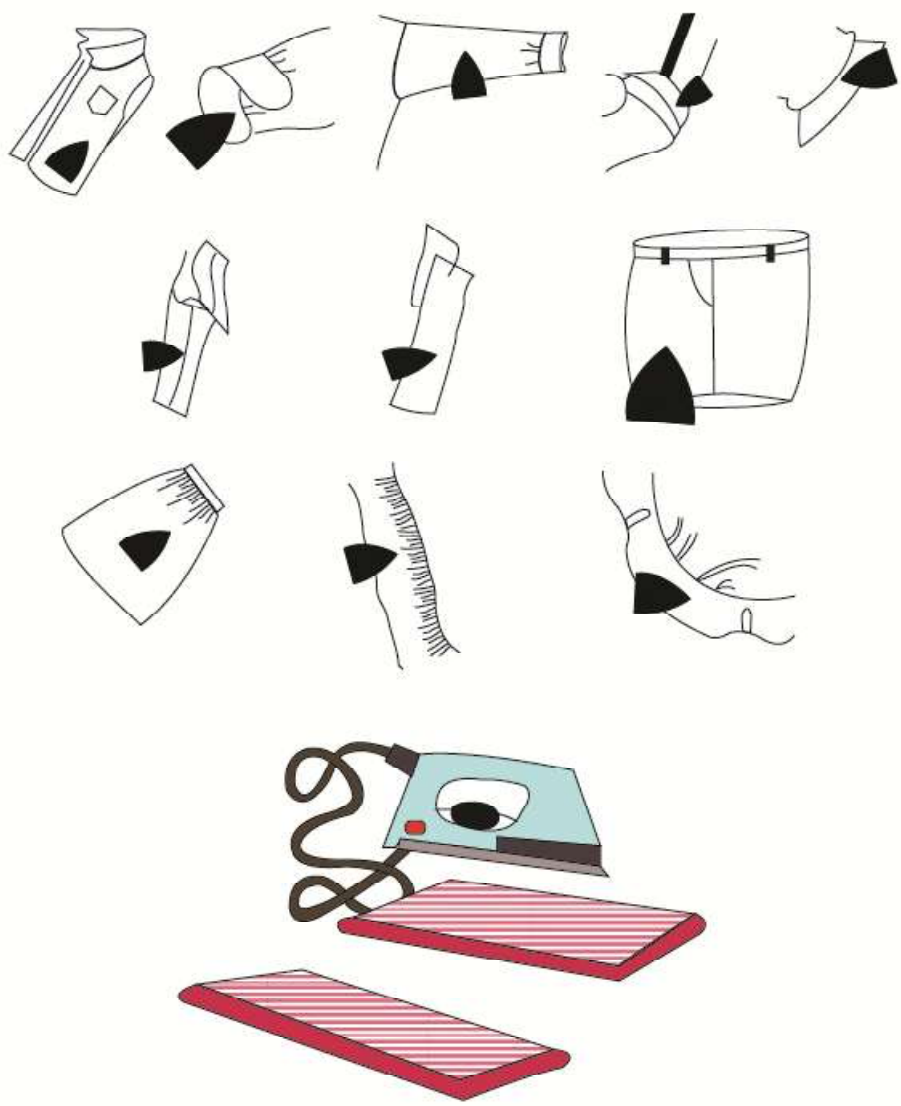

चित्र 9.5: इस्त्री करने की विधि

इस्त्री (प्रेस) करते समय सावधानियाँ

इस्त्री करते समय निम्न बातों का अवश्य ध्यान रखें–

- प्रेस करने से पूर्व निरीक्षण करें कि तले पर कोई धूल, मिट्टी तथा जंग ना लगा हो।
- तार व प्लग पोइंट आदि हमेशा चेक कीजिए कि कोई टूट–फूट न हो।
- प्लग लगाते समय स्विच बंद कर दीजिए।

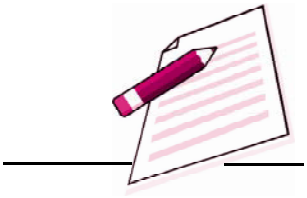

टिप्पणी

- तापमान इस्त्री किए जाने वाले कपड़े के अनुसार व्यवस्थित कीजिए।
- गीला करने के लिए पानी का बर्तन दाईं तरफ या ऐसे स्थान पर रखना चाहिए जहाँ पानी न गिरे।
- इस्त्री को लोहे के स्टैण्ड पर रखें।
- कपड़े को नमी देने के लिए पानी छिड़कें या गीले स्पांज का प्रयोग करें।
- ऊनी वस्त्रों पर गीला कपड़ा रख कर इस्त्री करना चाहिए।
- हो सके तो इस्त्री करने के दौरान रबड़ की चप्पल पहनें या लकड़ी के पट्टे पर खड़े होकर इस्त्री करें।

पाठगत प्रश्न 9.2

दिए गए विकल्पों में से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. शनील, सिल्क व संवेदनशील कपड़ों से बने वस्त्रों को ..... करवाना चाहिए। (पानी से धुलाइ, ड्राईक्लीन)
2. अधिक परिसज्जित वस्त्रों को हमेशा ..... तरफ से इस्त्री करनी चाहिए। (उल्टी, सीधी)
3. इस्त्री का तापमान ..... के अनुरूप रखें। (इस्त्री, कपड़े)
4. धुलाई करते समय ..... डिटर्जेंट का प्रयोग करें। (कठोर, सौम्य)
5. वस्त्र को हमेशा ..... में उल्टा कर के सुखाएं। (धूप, छाया)

9.5 कपड़े को तह करना व पैक करना

वस्त्र निर्माण प्रक्रिया में सबसे अंत में आता है कपड़े को तह और पैक करना। वस्त्र को अच्छे से तह करके व पैक करके उसके प्रस्तुतीकरण को ज़्यादा अच्छा बनाया जा सकता है।

टिप्पणी

तह करने के लाभ

- इस्त्री करने के बाद तह करने पर वस्त्र में सिलवटें नहीं पड़ती।
- वस्त्र देखने में सुंदर व आकर्षक लगता है।
- तह किए हुए वस्त्रों को ले जाना व रखना सुविधाजनक होता है।
- तह किए वस्त्र अधिक समय तक रखे जा सकते हैं।

तह करते समय सावधानियाँ

- तह करते समय क्रीज खराब नहीं होनी चाहिए।
- कपड़े की तह एक समान होनी चाहिए।
- वस्त्र के हर भाग को अच्छी प्रकार इस्त्री करने के बाद तह करना चाहिए।
- वस्त्र को पहले चौड़ाई में फिर लंबाई में आवश्यकतानुसार दो या तीन तह करने चाहिए।

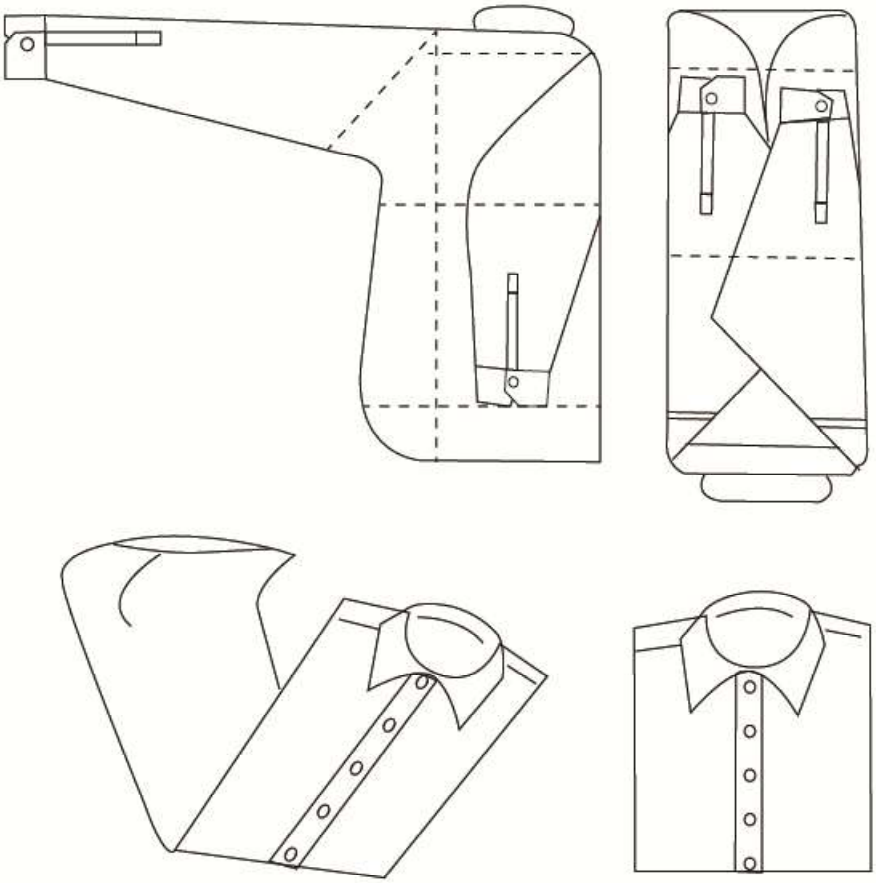

चित्र 9.6: शर्ट को तह करना

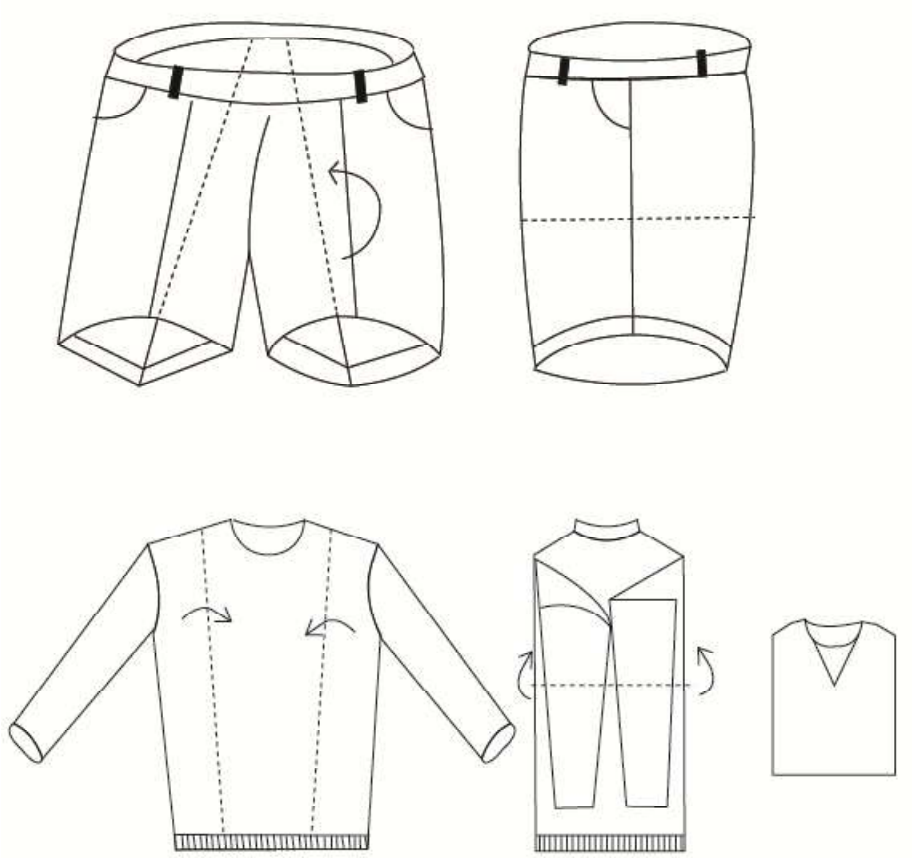

चित्र 9.7: तह करने की अन्य विधियाँ

- वस्त्र के गले का भाग ऊपर की ओर होना चाहिए।
- तह करते समय वस्त्र कहीं से मुड़ा हुआ नहीं होना चाहिए।
- वस्त्र को तह करने के बाद उसे ठीक ढंग से पैक करना चाहिए।

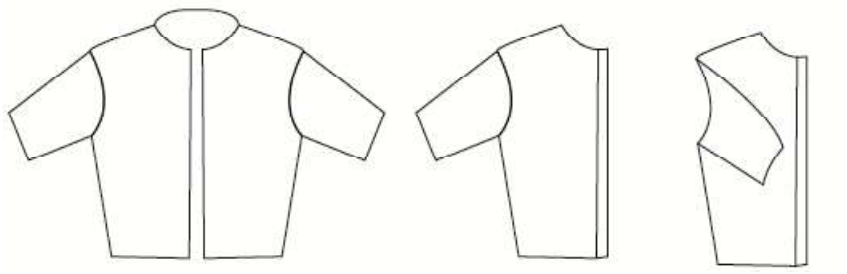

चित्र 9.8: तह करने की अन्य विधियाँ

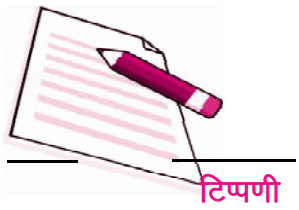

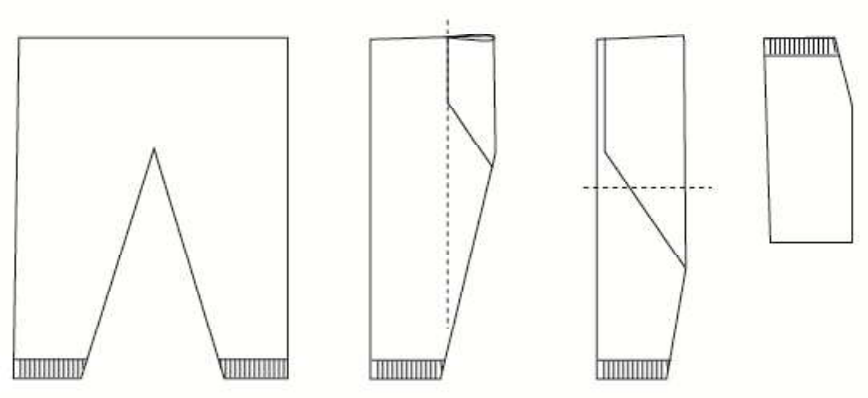

चित्र 9.9: पाजामा तह करना

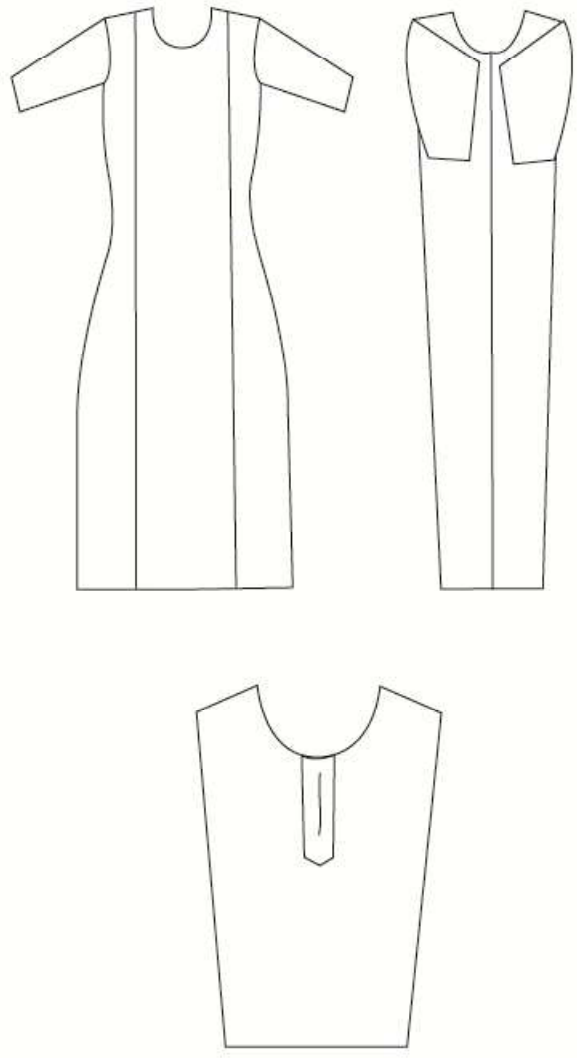

चित्र 9.10: कुर्ता तह करना

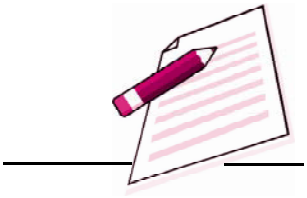

टिप्पणी

- भंडारण के स्थान पर हवा का प्रवाह अच्छा होना चाहिए।
- भंडारण के स्थल पर सूरज की रोशनी तेज नहीं होनी चाहिए, इससे रंग हल्के पड़ सकते हैं।
- अधिक परिसज्जित वस्त्रों को कपड़े या कागज में लपेट कर रखें, जिससे उसको अम्ल के प्रभाव से बचाया जा सके।

पाठगत प्रश्न 9.3

स्तम्भ 'क' और स्तम्भ 'ख' को मिलाइए–

	क		ख
1.	तह किए वस्त्र में	i.	ऊपर की ओर रखिए
2.	तह किए वस्त्र के गले का भाग	ii.	कागज़ या कपड़े में लपेट कर करते हैं।
3.	भंडारण का स्थान	iii.	सिलवटें नहीं पड़ती
4.	अधिक परिसज्जित वस्त्रों का भंडारण	iv.	नमी रहित होना चाहिए।

क्रियाकलाप 9.1

अपने आस–पास के सिलाई केन्द्र में जाकर इस्त्री (प्रेस) व भंडारण की विधि को देखिए और उस पर 150 शब्दों की रिपोर्ट तैयार कीजिए।

आपने क्या सीखा

- निर्मित वस्त्रों का निरीक्षण करते हुए सिलाई के अनावश्यक धागे दाग–धब्बे और सिलवटें हटाने विधियां जानी।
- दाग–धब्बे को पहचान कर उसे हटाने के उपयुक्त तरीकों तथा उस दौरान बरती जाने वाली सावधानियों की जानकारी प्राप्त की।
- कपड़ों की धुलाई तथा सूखने की प्रक्रिया तथा बरती जाने वाली सावधानियों को जाना।

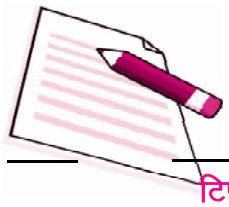
टिप्पणी

- इस्त्री (प्रैस) करने का सही तरीका तथा प्रैस करते समय सावधानियां बरतने की जानकारी प्राप्त की।
- कपड़े को सही क्रम से तह करना व पैक करना सीखा।
- तह करते समय आवश्यक सावधानियां भी जानी।
- भंडारण की सहज प्रक्रिया के बारे में जाकारी प्राप्त की।

पाठांत प्रश्न

1. निर्मित वस्त्रों का निरीक्षण किन–किन बिंदुओं पर किया जाता है? संक्षेप में समझाइए।
2. दाग–धब्बे से क्या तात्पर्य है? उन्हें हटाने की कोई 2 उपयुक्त विधियां समझाइए।
3. निर्मित वस्त्रों की धुलाई व सुखाने में बरती जाने वाली सावधानियों को स्पष्ट कीजिए।
4. इस्त्री करते समय कौन सी सावधानियां बरतनी चाहिए? सूची तैयार कीजिए।

उत्तर माला

9.1

1. सही 2. गलत 3. सही
4. गलत 5. गलत

9.2

1. ड्राईक्लीन 2. उल्टी 3. कपड़े
4. सौम्य 5. छाया

9.3

1. (iii) 2. (i) 3. (iv)
4. (ii)

टिप्पणी

10

उन्नति के अवसर

नगमा को कटाई व सिलाई विषय में बहुत रुचि है। वो इस विषय के कला–कौशलों को सीख कर इसी क्षेत्र में नौकरी करना चाहती है। इस संदर्भ में उसने अपनी सहेली रीता से चर्चा की। रीता ने उसे संचार कौशलों व व्यक्तित्व विकास के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया तथा उसका बायोडेटा भी बनवाया।

रीता ने नगमा को भविष्य में अपना सिलाई केंद्र स्थापित करने का भी सुझाव दिया। इस संदर्भ में उसने विभिन्न सरकारी व गैर–सरकारी संस्थानों द्वारा दी जा रही वित्तीय सहायता के बारे में भी जानकारी दी। आइए प्रस्तुत पाठ में हम इन सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा करें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप :

- व्यक्तित्व विकास के मूल्यों की सूची बना सकेंगे;
- उचित संचार कौशलों का प्रयोग कर सकेंगे;
- रोज़गार के अवसरों की पहचान कर सकेंगे;
- रोज़गार के लिए आवश्यक तैयारी जैसे बायोडाटा बनाना आदि कर सकेंगे; और
- स्वरोज़गार के लिए विभिन्न सरकारी व गैर–सरकारी संस्थाओं से सहयोग लेकर वित्त प्रबंधन के तरीके जान सकेंगे।

10.1 व्यक्तित्व का विकास

व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास के लिए मनुष्य में नीतियों व मूल्यों का होना आवश्यक है। ये हमारे घर व कार्यक्षेत्र के व्यवहार में विश्वसनीयता व न्यायप्रियता लाते हैं। नीतियां नियम व मानकों का वो समूह है जिनसे व्यक्ति संतोषजनक

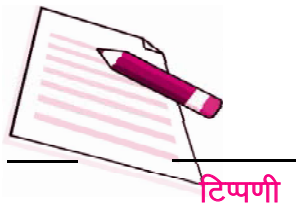

जीवन निभाने में सफल होता है। निम्नलिखित नीतियां व मूल्य आपको जीवन में सफल बना सकते हैं–

- वफादारी व ईमानदारी,
- सत्यवादिता,
- आत्मसम्मान व अन्य लोगों का सम्मान करने का भाव,
- समय का आदर व पाबंदी,
- विश्वासपात्रता व गोपनीयता,
- मित्रतापूर्ण संबंध रखना,
- अपनी जिम्मेदारियों को पहचानना व निभाना,
- सभी प्रकार के कार्यों व व्यक्तियों के प्रति आदर भाव रखना,
- स्वयं के प्रति निर्दिष्ट कार्य के लिए आवश्यक ज्ञान व कौशल प्राप्त करना,
- अपने पर्यावरण का सम्मान व रक्षा करना।

10.2 संचार व उसके प्रकार

संचार के माध्यम से हम एक दूसरे के साथ अपने विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। संचार में लिखित व मौखिक शब्दों के अलावा, शारीरिक हाव–भाव और भाव–भंगिमाओं द्वारा उनकी अभिव्यक्ति भी अत्यंत महत्वपूर्ण है जैसे– सिर हिलाना, भौवें उठाना, कंधे उचकाना, आंखों में चमक आना तथा स्वर परिवर्तन आदि।

संचार किसी भी कार्यक्षेत्र में काम करने वाले लोगों के बीच सद्भावना व सौहार्द्रपूर्ण वातावरण को बनाने में सहायक है। कर्मचारियों में आपसी समझ व सहयोग के लिए निरंतर जानकारी, सूचनाओं व विचारों का आदान–प्रदान जरूरी है। संचार द्वारा ही एक संगठन के विभिन्न विभागों में आपसी ताल–मेल संभव है।

संचार द्वारा प्राप्त सूचनाओं के आधार पर सही निर्णय लेना आसान हो जाता है।

I. संचार के प्रकार

संचार दो प्रकार से किया जाता है–

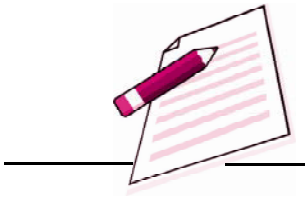

टिप्पणी

क) **आंतरिक संचार** – जब संचार एक ही संस्था के कर्मचारियों के बीच होता है तो उसे आंतरिक संचार कहते हैं।

ख) **बाह्य संचार** – इस प्रकार के संचार में संस्था बाहर के लोगों के साथ विचारों का आदान–प्रदान करती है।

II. संचार की विधियाँ

समय के साथ संचार की विधियों में परिवर्तन आया। नए तकनीकी विकास के साथ–साथ नए उपकरणों व तकनीकों का प्रभावी संचार के लिए प्रयोग किया जाने लगा। आंतरिक व बाह्य संचार के अंतर्गत ही प्रभावी संचार के लिए निम्न विधियों का प्रयोग किया जाता है–

1. मौखिक संचार
2. लिखित संचार

1) **मौखिक संचार** – मौखिक संचार बोले हुए शब्द द्वारा होता है। ये तुरंत विचारों का आदान–प्रदान करने में सहायक है। इस माध्यम से विश्वसनीय तथ्यों को अभिव्यक्त करना सही माना जाता है। मौखिक संचार तुरंत निर्णय लेने में मदद करता है।

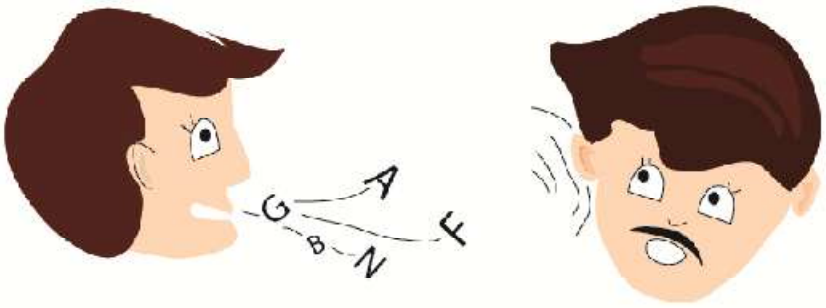

चित्र 10.1: मौखिक संचार

2. **लिखित संचार** – लिखित संचार में सूचना व विचार लिख कर जैसे – पत्र, रिपोर्ट, ज्ञापन आदि फैक्स, डाक, ई–मेल, एस.एम.एस., कोरियर व आंतरिक डाक पद्धति द्वारा भेजा या दिया जाता है। संचार हेतु उपयुक्त साधनों का चुनाव करते समय कई बातों का ध्यान रखा जाता है।

- गति
- उपयोगिता

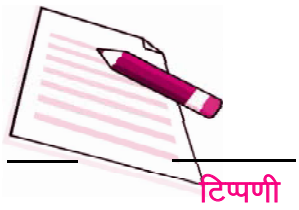

- गोपनीयता
- रिकार्ड
- मूल्य
- दूरी
- विषय वस्तु
- विशेष स्थिति

पाठगत प्रश्न 10.1

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान भरिए–

1. नीतियाँ ..... व ..... का वो समूह है जिनसे व्यक्ति संतोषजनक जीवन निभाने में सफल होता है। (समय, नियम, मानक)
2. संचार के माध्यम से हम एक दूसरे के साथ अपने ..... का आदान प्रदान करते हैं। (विचारों, समाचारों)
3. जब संचार एक ही संस्था के कर्मचारियों के बीच होता है तो उसे ..... संचार कहते हैं। (बाह्य, आंतरिक)
4. ..... संचार बोले हुए शब्दों द्वारा होता है। (लिखित, मौखिक)
5. पत्र, रिपोर्ट, ज्ञापन, ईमेल आदि ..... संचार की विधि हैं। (लिखित, मौखिक)

10.3 रोज़गार के अवसरों की पहचान करना

कटाई–सिलाई में निपुणता हासिल करके आप निम्न क्षेत्रों में रोज़गार व स्वरोज़गार प्राप्त कर सकते हैं–

रोज़गार	स्वरोज़गार
• दर्जी की दुकान में सहायक	• अपनी इकाई स्थापित करना
• सिलाई केंद्र में शिक्षक	• निर्यात केंद्र/बुटीक का कार्य
• फैशन हाउस में सहायक	• हॉबी क्लास चलाना
• वस्त्रों की दुकान में सहायक	• आदेश पर वस्त्र निर्माण का काम करना

टिप्पणी

10.4 रोज़गार के लिए आवश्यक तैयारी

कटाई व सिलाई के कला–कौशलों में निपुणता हासिल करने के बाद आप नौकरी कर सकते हैं नौकरी के लिए आप को कुछ तैयारियां करनी जरूरी होती हैं जैसे कि–

i. बायोडाटा लिखना

ii. साक्षात्कार की तैयारी

I. बायोडाटा का प्रारूप

शैक्षिक अभिलेख एवं कार्यानुभव

नाम –

लिंग –

जन्म तिथि –

पिता/माता/पति का नाम –

स्थायी पता –

शैक्षिक योग्यता

क्रं.सं.	कक्षा	वर्ष	विषय	बोर्ड/वि.वि.	प्राप्त अंक	श्रेणी
1.						
2.						
3.						

कार्य अनुभव –

1.

2.

विशेष योग्यता –

सम्पर्क पता व फोन नम्बर –

तिथि

हस्ताक्षर

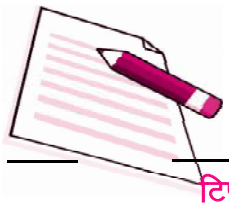

II. साक्षात्कार के लिए आवश्यक तैयारी

i. कटाई–सिलाई विषय की अच्छी तैयारी व जानकारी होनी चाहिए।

ii. अपने कागजात व फाइल पूरी तरह से तैयार होने चाहिए जैसे कि–

- प्रमाणपत्र व अंकतालिका तथा उनकी प्रतिलिपिया
- पासपोर्ट साइज – फोटो – 3 प्रति (या मांगी गई संख्या में)
- साक्षात्कार में सम्मिलित होने के लिए जारी पत्र (काल लेटर)
- कलम
- कार्यानुभव के प्रमाणपत्र
- विशेष योग्यता व उपलब्धि के प्रमाणपत्र

iii. साक्षात्कार स्थान का पूरा पता होना चाहिए।

निम्न बातों पर विशेष ध्यान दें :

i. साक्षात्कार के स्थान का एक दिन पहले निरीक्षण कर लेना चाहिए व पहुँचने के लिए साधन व समय का आंकलन कर लेना चाहिए।

ii. साफ–सुथरे व सौम्य वस्त्र व सादा बाल बनाने चाहिए।

iii. साक्षात्कार के समय से 15 मिनट पहले पहुँचना चाहिए जिससे आप सहज महसूस कर सकें।

iv. साक्षात्कार कक्ष में घुसते ही सबका विनम्र अभिवादन करना चाहिए।

v. कुर्सी पर बैठते समय उचित मुद्रा अपनाएं व सजग रहें।

vi. पूछे गए प्रश्न का संक्षिप्त व समुचित उत्तर दें।

vii. अगर किसी प्रश्न का उत्तर नहीं आता है तो बेझिझक ईमानदारी से स्वीकार कर लें।

vii. साक्षात्कार के उपरांत सभी को धन्यवाद अवश्य दें।

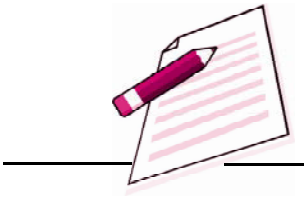

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 10.2

निम्नलिखित कथनों के सामने सही (✓)या गलत (×) लिखिए–

1. वस्त्रों की दुकान में सहायक का कार्य स्वरोज़गार कहलाता है।
2. सिलाई केंद्र में शिक्षक रोज़गार कहलाता है।
3. साक्षात्कार के समय से 15 मिनट पहले पहुँचना चाहिए।
4. साक्षात्कार के लिए फैशन के अनुरूप चुस्त वस्त्र पहनने चाहिए।
5. साक्षात्कार के स्थान का एक दिन पहले निरीक्षण अवश्य कर लेना चाहिए।

10.5 व्यावसायिक उद्यमिता

किसी भी व्यवसाय को सफलतापूर्वक चलाने के लिए व्यवसाय प्रबंधन की कुछ आधारभूत बातों की जानकारी आवश्यक है। किसी व्यवसाय की तकनीकी बारीकी के साथ उसके साथ लोगों के जुड़ाव कच्चेमाल की व्यवस्था और उसके विपणन की व्यवस्था आवश्यक है।

कटाई–सिलाई का उद्यम स्थापित करने व सफलतापूर्वक चलाने के लिए निम्न तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए–

I. **विश्लेषण** आप एक विशेष उद्यम क्यों प्रारम्भ करना चाहते हैं या आपने स्वरोज़गार का निर्णय क्यों लिया? यह प्रश्न बहुत आवश्यक है। इसके लिए व्यक्ति को अपनी क्षमता को जानना चाहिए। अतः अंतिम निर्णय लेने के लिए आपको चाहिए–

   - विशेष व्यवसाय की ओर अभिरुचि/रुझान
   - शैक्षिक/तकनीकी योग्यता और प्रशिक्षण
   - संसाधनों को प्राप्त करने की योग्यता (मानव और कच्चा माल आदि)

II. **योजना पूर्व अवलोकन**

   - आप क्या उत्पाद बनाना चाहते हैं?
   - बाज़ार में उपलब्ध उस जैसे अन्य उत्पादों का सर्वेक्षण कीजिए।

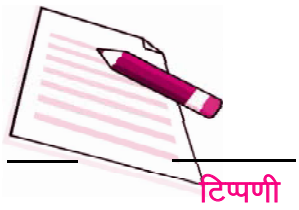

- यदि संभव हो तो वैसे ही संस्थान में जायें और उनकी कार्यप्रणाली देखें।
- लाभ–हानि का अवलोकन करने के लिए संभव हो तो परस्पर बातचीत करें।
- अगला कदम आपको मार्केट का सर्वेक्षण करके क्षेत्र तय करना है। संस्थान स्थापित करने से पूर्व एक उद्यमी के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वह अपने लिए मार्केट का सर्वेक्षण बहुत अच्छी तरह कर ले।

10.6 वित्तीय प्रबन्धन

किसी भी व्यवसाय को शुरू करने के लिए पैसों की बहुत आवश्यकता होती है। व्यवसाय में लगने वाली मशीनरी, कच्चा माल, मानव श्रम इन सबकी पूर्ति पैसों से ही संभव है। साथ ही कोई व्यवस्था तुरंत ही लाभ नहीं देने लगती वरन उसको स्थापित होने में थोड़ा समय लगता है। अतः पैसों की समय पर, उपयुक्त व लगातार उपलब्धता आवश्यक है। प्रभावी वित्त प्रबंधन के लिए निम्न बातों का ध्यान रखें।

- प्रत्येक मद के लिए आवश्यक और उपलब्ध धन की गणना कीजिए।
- अगर कहीं बाहर से धन का प्रबंध होता है तो–
  - i. उन संस्थाओं की सूची बनाएं जहाँ से वित्तीय सहायता मिल सकती है।
  - ii. उन बैंकों की सूची बनाएं जहाँ से वित्तीय सहायता मिल सकती है।
  - iii. वित्तीय सहायता की अवधि को निर्धारित करिए, कि क्या आपको लम्बी अवधि या लघु अवधि के लिए पैसों की आवश्यकता है।

बैंक व्यावसायिक उद्यमियों के लिए कई योजनाएं निकालते रहते हैं। इन योजनाओं के अलग–अलग नाम हो सकते हैं। बैंक उन लोगों को निश्चित राशि उधार देता है जो तकनीकी रूप से कुशल और अनुभवी होते हैं और अपनी इकाई लगाना चाहते हैं। इस प्रकार के कर्ज पर ब्याज दर भी काफी कम होती है। हमेशा सरकारी अभिकरण/एजेंसी से ही कर्ज को प्राथमिकता दें। किसी भी व्यक्तिगत वित्त अभिकरण से उधार न लें। सरकार ने इस प्रकार के लोन की

टिप्पणी

बहुत योजनाएं और लाभ घोषित किए हुए हैं। ब्याज दरें भी कम रखी गई हैं। जबकि निजी कर्ज प्रदाता से प्रायः लाभ कम मिलते हैं, धोखा खाने के अधिक आसार होते हैं अतः सावधानी रखें।

आप अपने संस्थान के आकार के अनुसार वित्त सहायता के लिए इनमें से किसी में भी आवेदन कर सकते हैं–

- एस.आई.डी.बी.आई (SIDBI)
- नेशनल बैंक
- कैपिटल कंपनी
- निजी व्यावसायिक बैंक
- स्टेट कैपिटल कार्पोरेशन
- लघु उद्योग विकास निगम
- लीजिंग कम्पनी
- कॉऑपरेटिव बैंक
- ग्रामीण बैंक आदि

पाठगत प्रश्न 10.3

स्तम्भ 'क' का स्तम्भ 'ख' से मिलान कीजिए–

'क'		'ख'
1. योजना पूर्व अवलोकन	i)	लाभ–हानि का अवलोकन
2. परस्पर बातचीत	ii)	उपलब्ध धन की गणना
3. प्रत्येक मद	iii)	कौन सा उत्पाद बनाना
4. निजी वित्त प्रदाता	iv)	लम्बी/लघु
5. वित्तीय सहायता अवधि	v)	धोखे के आसार

क्रियाकलाप

आप अपना एक सिलाई केंद्र स्थापित करना चाहते हैं। उसके लिए एक पूर्ण योजना प्रारूप तैयार कीजिए।

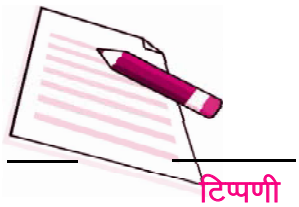

आपने क्या सीखा

- व्यक्तित्व का विकास
  - नीतियां व मूल्य
- संचार व उसके प्रकार
  - आंतरिक
  - बाह्य
- संचार की विधि
  - मौखिक
  - लिखित
- संचार साधन के चुनाव को प्रभावित करने वाले कारक
- रोज़गार के अवसरों की पहचान करना
  - रोज़गार
  - स्वरोज़गार
- रोज़गार के लिए आवश्यक तैयारी
- बायोडेटा का प्रारूप
- साक्षात्कार की आवश्यक तैयारी
- व्यावसायिक उद्यमिता
  - विश्लेषण
  - योजना पूर्व अवलोकन
- वित्त प्रबंधन

पाठांत प्रश्न

1. जीवन को सफल बनाने वाले कुछ मूल्यों व नीतियों की सूची बनाइए।

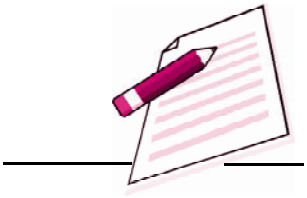

टिप्पणी

2. संचार के प्रकार व विधियों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
3. रोज़गार व स्वरोज़गार के क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों की व्याख्या करिए।
4. व्यावसायिक इकाई स्थापित करने के लिए ध्यान रखने योग्य तथ्यों को स्पष्ट कीजिए।
5. सफल वित्तीय प्रबंधन हेतु ध्यान रखे जाने वाले चार तथ्यों को सूचीबद्ध कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

10.1

1. नियम व मानक
2. विचारों
3. आंतरिक
4. मौखिक
5. लिखित

10.2

1. गलत
2. सही
3. सही
4. गलत
5. सही

10.3

1. (iii)
2. (i)
3. (ii)
4. (v)
5. (iv)

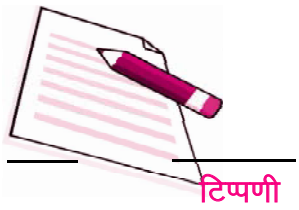

प्रश्न पत्र प्रारूप

विषय : कटाई, सिलाई एवं वस्त्र निर्माण **कक्षा :** स्तर ग

कुल अंक : 100 **समय :** 3 घंटा

1. उद्देश्यानुसार अंक विभाजन

उद्देश्य	अंक	दिए गए अंकों का प्रतिशत
ज्ञान	20	20%
समझ	50	50%
अनुप्रयोग / कौशल	20	30%
कुल	**100**	**100%**

2. प्रश्नों के प्रकारानुसार अंक विभाजन

प्रश्न के प्रकार	अंक	प्रश्नों की संख्या	कुल अंक
दीर्घउत्तरीय	6	4	24
लघुउत्तरीय-I	4	8	32
लघुउत्तरीय-II	2	12	24
अति लघुउत्तरीय	बहुविकल्पीय प्रश्न 1 रिक्त स्थान भरिए 1 एक वाक्य में उत्तर 1	1(5 उपप्रश्न) 1(10 उपप्रश्न) 1(5 उपप्रश्न)	1× 5 = 5 1× =10 1× 5 = 5
कुल		**27**	**100**

3. विषयवस्तु अनुसार अंक विभाजन

पाठ	अंक
वस्त्र निर्माण में रंग योजनाओं की भूमिका	8
विभिन्न शारीरिक आकार व फिटिंग	8
वस्त्र निर्माण – रोम्पर	12
वस्त्र निर्माण – चुन्नट वाला फ्राक	13
वस्त्र निर्माण – चूडीदार पाजामी	13
वस्त्र निर्माण – नेहरू कुर्त्ता	13
वस्त्र निर्माण – ब्लाउज	13
फिटिंग के दोषों का निवारण	6
रखरखाव व परिसज्जा	6
उन्नति के अवसर	8
कुल	**100**

4. प्रश्न पत्र का कठिनाई स्तर

स्तर	अंक	दिए गए अंकों का प्रतिशत
कठिन	25	25
औसत	50	50
सरल	25	25
कुल	**100**	**100**

टिप्पणी

नमूना प्रश्न पत्र

कटाई, सिलाई एवं पोशाक निर्माण

अधिकतम अंक : 100 **समय :** 3 घंटे

निर्देश–

- इस प्रश्न पत्र में कुल 27 प्रश्न हैं।
- प्रश्न संख्या–1 में (i) से (x) तक रिक्त स्थान भरो प्रश्न हैं, जिसमें प्रत्येक के लिये 1 अंक निर्धारित है।
- प्रश्न संख्या–2 में (i) से (v) तक बहुविकल्पीय प्रश्न हैं, जिसमें प्रत्येक के लिये 1 अंक निर्धारित है। उत्तर के रूप में क, ख, ग तथा घ चार विकल्प दिये गये हैं, जिसमें से कोई एक सही है। आपको सही विकल्प चुनना है तथा अपनी उत्तर पुस्तिका में क, ख, ग तथा घ में से जो सही है, उसे उत्तर के रूप में लिखना है।
- प्रश्न संख्या–3 में (i) से (v) तक अति लघुउत्तरीय प्रश्न हैं। जिसमें प्रत्येक के लिये 1 अंक निर्धारित है। इनका उत्तर एक वाक्य में लिखना है।
- प्रश्न संख्या–4 से संख्या–15 तक लघुउत्तरीय (II) प्रश्न हैं। प्रत्येक के लिये 2 अंक निर्धारित है।
- प्रश्न संख्या–16 से संख्या–23 तक लघुउत्तरीय (I) प्रश्न हैं। प्रत्येक के लिये 4 अंक निर्धारित है।
- प्रश्न संख्या–24 से संख्या–27 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक के लिये 6 अंक निर्धारित है।

1. रिक्त स्थान भरिए– 1×10=10

i. फ्रॉक में कमर के ऊपर वाला भाग ..... कहलाता है।

ii. चूड़ीदार पाजामी सामान्यतः ..... थैली पर तैयार की जाती है।

iii. कुर्ते में बॉडिस के ..... के ओर एक जेब लगी होती है।

iv. चूड़ीदार पाजामी में ..... के नीचे का भाग कसा हुआ होता है।

v. ब्लाउज को शरीर के आकार के अनुसार बनाने के लिये ..... का प्रयोग किया जाता है।

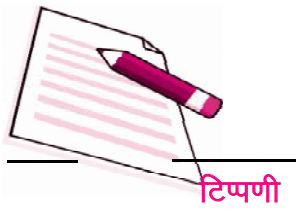

vi. नेहरु कॉलर को ..... कॉलर भी कहते हैं।

vii. पाजामी के ऊपर के भाग पर ..... बनाया जाता है।

viii. ..... कटिंग फिटिंग संबंधी दोष का एक कारण है।

ix. कुछ कपड़ों को ..... से पहले भी प्रेस कर लेना चाहिए।

x. जब संचार एक ही संस्था के कार्यकर्ताओं के बीच होता है तो उसे ..... संचार कहते हैं।

2. नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए– (1× 5 = 5)

i) चूड़ीदार पाजामी में चूड़िया निम्न स्थान पर दी जाती हैं–

क) पिण्डलियों के नीचे

ख) पिण्डलियों के ऊपर

ग) घुटने के ऊपर

घ) घुटने के नीचे

ii) संचार में सम्मिलित हैं–

क) बोलना, सहायता करना तथा लिखना

ख) लिखना, सुनना व सहायता देना

ग) सुनना, लिखना व बोलना

घ) बोलना, सहायता करना तथा सुनना

iii) नेहरु कुर्ते में निम्न बाजू बनाई जाती है–

क) संकरी बाजू

ख) सीधी बाजू

ग) चुन्नट वाली बाजू

घ) प्लीट्स वाली बाजू

iv) वस्त्रों में चुन्नटें व तिरछे मोड़ हटाने के लिए–

क) शरीर के भारी हिस्सों पर अधिक ढीला रखना

ख) शरीर के भारी हिस्सों को कसा रखना

टिप्पणी

ग) मुढ्ढे पर अधिक सीम अलाउन्स रखना

घ) मुढ्ढे पर चुन्नट डालना

v. प्रेस का तापमान निम्न के अनुरूप होना चाहिए–

क) डिजाइन के अनुरूप

ख) रंग के अनुरूप

ग) मौसम के अनुरूप

घ) कपड़े के अनुरूप

3. दिए गए शब्दों को एक ही वाक्य में समझाइए– $1 \times 5 = 5$

i. ढील

ii. चुन्नट वाली फ्रॉक

iii. चूड़ीदार पाजामी

iv. ट्रायल

v. फिटिंग

4. रंग चक्र एवं रंग योजना को परिभाषित कीजिए। 2

5. रोम्पर की दो विशेषताएँ लिखिए। 2

6. फ्रॉक के बेसिक बॉडिस ब्लॉक बनाने के लिये चार आवश्यक नापों को सूचीबद्ध कीजिए। 2

7. चूड़ीदार पाजामी अन्य पाजामों से किस तरह भिन्न होती है? 2

8. नेहरु कुर्ते के दो विशिष्ट गुण लिखिए। 2

9. नेहरु कुर्ते की बाजू ब्लॉक बनाने के लिये चार आवश्यक नाम लिखिए। 2

10. नेहरु कुर्ते के लिए निम्न स्थानों पर कितनी सीम अलाउन्स आवश्यक है? 2

i. गला/नैक

ii. शोल्डर लाइन (कंधा)

iii. मुड्ढा

iv. साइड सीम

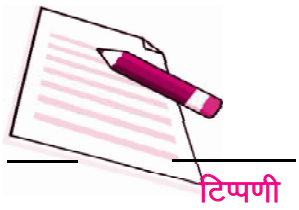

टिप्पणी

11. फिटिंग संबंधी किन्हीं चार दोषों को सूचीबद्ध कीजिए। 2

12. जीवन में सफल होने के लिए आप कौन सी चार नीतियां अपनाएंगे? 2

13. ब्लाउज को सही आकार देने के लिए कौन–कौन से डार्ट्स का प्रयोग किया जाता है? 2

14. ब्लाउज़ में निम्न स्थान पर कितनी सीम अलाउन्स दी जाती है? 2

    i) गला

    ii) कंधा

    iii) बाजू का कैप भाग

    iv) साइड सीम बॉडिस

15. ब्लाउज की ले–आउट की क्रिया समझाइए। 2

16. किन्हीं चार शारीरिक आकारों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। 4

17. शारीरिक आकार से संबंधित फिटिंग दोष तथा उनके निवारण की विधि लिखिए। 4

18. रॉम्पर की सिलाई व फिटिंग में अपनायी जाने वाली कोई आठ सावधानियाँ लिखिए। 4

19. चुन्नट वाले फ्रॉक के स्कर्ट ब्लॉक की ड्राफ्टिंग की विधि चित्रों के सहयोग से लिखिए। 4

20. फ्रॉक की स्कर्ट में चुन्नट बनाने की विधि लिखिए। 4

21. नेहरु कुर्ता सिलने का क्रम बताइए।

22. कपड़ों पर दाग–धब्बे छुड़ाने में अपनायी जाने वाली कोई चार सावधानियाँ बताइए। 4

23. साक्षात्कार में सफलतापूर्ण सम्मिलित होने के लिए आपको कौन–कौन सी आठ बातों पर विशेष ध्यान देना होगा? 4

24. समान व वैषम्य रंग योजनाओं को उदाहरण सहित समझाइए। 6

25. चित्रों के सहयोग से रॉम्पर का जांघिया ब्लॉक बनाने की विधि तथा उस में किये जाने वाली आवश्यक फेर बदल समझाइए। 6

26. चूड़ीदार पायजामी के लिए थैला बनाने की विधि चित्र बनाकर समझाइए। 6

27. ब्लाउज की सिलाई का क्रम लिखिए। 6